

पल्लवी प्रकाशन

हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि

Thoughtful passages from the literary corpora of Shri. Jagdish Prasad Mandal

Compilation by

डॉ. उमेश मण्डल

परिचय : उमेश मण्डल

जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल, सन्तान: पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.–'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ।

प्रकाशित कृति : (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या

सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प, (21) अभ्यन्तर आ (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमश: 2021-2022 इस्वी), (23) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)।

संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी।

सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास- हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, सम्प्रति: तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452

हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

HANDBOOK SAN FACEBOOK DHARI

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri. Jagdish Prasad Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

दाम : 200/- (भा.रू.)

दोसर संस्करण : 2022 (**पहिल संस्करण :** 2021)

ISBN : 978-81-951070-9-4

पोथीक मादे किछु अप्पन बात

'पोथीक मादे किछु अप्पन बात'क जगह जँ 'पोथीक बहन्ने किछु अपनो बात' रहैत तँ आरो नीक होइत, मुदा अधला ईहो नहियेँ अछि। ओ ऐ दुआरे जे काजेक हिसाबे काज करैत चलब नीक होइत अछि किने। जीवन तँ काजेसँ भरल अछि। केतबो करब तैयो बहुत काज कएल नहि हएत बल्कि बहुत काज बाँकीए रहि जाएत। मुदा सभकेँ अपन सक्य भरिक जिम्मो अछिए। कोनो नव काज जखन सोझामे अबैए तँ पहिने ओकर रूप-स्वरूप (जीवन) मूल रहैए, नहि कि ओकर नामकरण। तँए जे नाओं सोझमे पड़ि जाए, ओकरा बेजा नहि कहि काजकेँ आगू बढ़ेबाक चाही..। प्रस्तुत पोथीक नामकरणक परिपेक्ष्यमे सेहो हमर यएह धारणा बनल आ राखि देलौं 'हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि', नीक बेजापर विचार शिरोधार्य रहत। ओना, 'धनपति' एक गरीबोक नाओं होइते छइ। खाएर जे होइ छै ओ अपन -अपन सेहो होइते छइ। ऐठाम हमरा अप्पन बात कहबाक अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनासँ हमर सम्बन्ध ओहेन रहल अछि जेहेन कोनो रचनाक सम्बन्ध ओकर पहिल पाठकसँ होइ छइ। ई हमर सौभाग्य अछि जे मण्डलजीक आइ धरिक सभ रचनाक पहिल पाठक हेबाक अवसरि हमरा भेटैत रहल अछि। तेतबे नहि, हुनक कोरा-काँख तर खेलबाक-बढ़बाक अवसरि सेहो हमर सौभाग्ये अछि। वएह हमरा आँगुर पकैड़ 'अ-आ'क बोधसँ बोधित कए; पुचकारिकऽ कान्हपर चढ़ा गामक स्कूलमे लऽ जा कऽ नाओं लिखौलैन। तेतबे नहि , हुनका संगे रहब, संगे-संग खेतमे काज करब, एक थारीमे खाएब आ एकहि लोटा-गिलासमे पानि पीबैसँ लऽ कऽ प्रत्येक काजमे संग रहैत हुनकहि छत्र-छायामे उठिकऽ ठाढ़ हेबाक संयोग सेहो हमरा प्राप्त भेल अछि। ओना, 2004 इस्वीसँ हम बेरमा

(मधुबनी) सँ निर्मली (सुपौल) आबि, रहि रहल छी।

बेरमा-निर्मलीक बीच बहुत दूरी तँ नहि मुदा 35-40 किलोमीटर अछि। 2005 इस्वीमे श्री मण्डलजीक लिखल, पाण्डुलिपिमे 'भैयारी' कथा पढ़लौं। कुसुमलाल ओ दीनानाथक भैयारी , हृदयकेँ झकझोरि देलक। जीवन आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल। ओही दिनसँ साहित्य पढ़ए लगलौं।

हमर एक संगी, संगे-संग एक मकानमे रहैबला संगी, अशोकजी (श्री अशोक कुमार मण्डल) सेहो ओइ कथाकेँ पढ़ि उत्साहित भेला। ओ हृदय खोलि कहए लगला जे एतेक सुन्दर (यथार्थ) विषय-वस्तु, एहेन जीवन्त शब्दावलीक माध्यमसँ एहेन उद्देश्यपूर्ण पवित्र कथा हम बहुत कम पढ़ने छी। नव चीज अछि। हिनक रचना सभ प्रकाशित हुअए ऐ लेल प्रयत्न करू...।

तैबीच पत्नी (श्रीमती पुनम मण्डल) सेहो मण्डलजीक लिखल- 'बोनिहारिन मरनी', 'चुनवाली', 'अनेरुआ बेटा', 'घरदेखिया', 'बाबी' आ 'कामनी' कथाकेँ पढ़ि चुकल छेली। ओहो बेस प्रभावित छेली। अपने सेहो उद्वेलित रहबे करी। 'भैयारी' कथाक स्थिति आँखिक सोझमे रहबे करए। किछु दिनक पछाइत—तैबीच निर्मलीमे सेहो यारी-भाय कहियौ कि भैयारी, बहुतोक संग बनियेँ गेल छल—कम्प्युटर लेलौं आ ओइ पाछू लागि गेलौं। माने मनोयोगसँ रचनाक टंकण कार्यमे लागि गेलौं। संगहि, मैथिली साहित्यमे बहड़ाइत, ओइ समयमे जे कोनो पत्रिका छल, ताकि-ताकि कऽ लेबए लगलौं आ पढ़ए लगलौं। किछुए दिनक पछाइत अनेकहु सम्पादक महोदयक संग साहित्यकार विद्वानजन सभसँ सेहो गप-सप्पक सौभाग्य प्राप्त भेल। किछु गोटासँ घर/डेरापर जा कऽ भेँट सेहो कएल, जेना- डॉ. तारानंद 'वियोगी', डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, श्री रघुवीर मोची, श्री गजेन्द्र ठाकुर, मन्त्रेश्वर झा आदि...। आ निर्मलीमे तँ रहिते छेलौं आ छिहो। अहूठामक विद्वान-मनीषी-रचनाकारक संग साहित्य प्रेमीकेँ जनलयैन कि जनै छिऐन, हुनका सबहक संग जुड़लौं आ आगूओ अनेकसँ जुड़िये रहल छी।

2008 इस्वीमे 8 नवम्बरक शनि दिन मिथिलाक प्रसिद्ध 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक

गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल, जइमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक संग हमहूँ पहिल कथा-साहित्य गोष्ठीमे भाग लेने रही। 'भैंटक लावा' कथाक पाठ ओ केलैन आ 'दोस्ती' बीहैन कथाक पाठ अपने केने रही। डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास' ओ डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जीक अध्यक्षतामे ओ गोष्ठी ओयोजित छल, उद्घाटन केने रहैथ स्व. उग्रनारायण मिश्र 'कनक', बहुत पैघ-पैघ विद्वतजन, रचनाकार सभकेँ ओइठाम एकसंग देखने रहिऐन। रहुआमे हमरो पाग-दोपटाक संग परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाँइक एकगोट दिव्य मूर्ति प्राप्त भेल छल।

मिथिलांचलमे आ मिथिलांचलसँ बाहर सेहो मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि हेतु अनेकहु मञ्च अछि। व्यवहारिक तौरपर सभ मञ्चक अपन-अपन उद्देश्य छै, मुदा वैचारिक तौरपर सभक एक्के उद्देश्य अछि, मैथिलीक विकास। जहिना सभ मञ्चक अपन-अपन व्यवहार अछि तहिना सभक अपन-अपन पहिचान सेहो अछिए।

'सगर राति दीप जरय'केँ मैथिली साहित्यक पहिल ‘सर्वहारा साहित्यिक मञ्च' मानल जाइत अछि। ऐ मञ्चपर मैथिली साहित्यक तमाम साहित्यकार अबैत-जाइत रहला अछि। सभक पोथीक लोकार्पण सेहो होइत रहलैन अछि।

'सगर राति दीप जरय'क सभसँ पैघ मजगूत पक्ष ई अछि जे ऐ मञ्चपर कोनो (कियो) रचनाकार, समीक्षक भाग लऽ सकै छैथ। किनकहुँ लेल हकारक अनिवार्यता नहि अछि। बिल्कुल खुला मञ्च अछि। सभ वर्गक कथाकार, समीक्षक ओ साहित्य प्रेमी ऐ मञ्चपर उपस्थित होइ छैथ। साँझ छह बजेसँ भिनसर छह बजे धरि संगोष्ठीक समय अछि। दीप प्रज्ज्वलित कए कथा सत्रक आरम्भ होइत अछि। जइमे कथाकार ओ आलोचक आमने-सामने होइ छैथ। एक पालीमे प्राय: चारि गोट कथाकार अपन-अपन नूतन कथाक पाठ करै छैथ। प्रत्येक पालीमे पठित कथापर समीक्षक लोकैन समीक्षात्मक टिप्पणी प्रस्तुत करै छैथ। पोथी-लोकार्पणक सेहो एकटा सत्र होइत अछि जे शुरूहेमे सम्पन्न भऽ जाइए। बीचमे अर्थात् अधरतियामे गोटेक घन्टाक शून्यकाल सेहो होइ छै, आ पुन: भिनसर छह बजे धरिक लेल

कथा पाठ आ समीक्षाक लेल गोष्ठी प्रारम्भ भऽ जाइत अछि।

रहुआ संग्रामक गोष्ठीक पछाइत श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक दू गोट कथा 'घर-बाहर' पत्रिका पटनासँ आ एकटा 'मिथिला दर्शन' कोलकातासँ प्रकाशित भेलैन। जेकर किछु दिनक पछाइत गजेन्द्र सर, (श्री गजेन्द्र ठाकुर, विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिकाक सम्पादक) सँ गप-सप्प भेल, सम्बन्ध बनल। पत्रिकामे सहायक कार्य लेल अवसरि देलैन आ श्री नागेन्द्र कुमार झा (श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीक संस्थापक)सँ सेहो गप करौलैन। दुनू गोटा कहलैन जे “अहाँ जतबा जे रचना, हेराएल वा ओहन रचनाकारक रचना, जनिक पोथी प्रकाशित नहि भऽ रहलैन हैं, नहि भेल छैन, टंकित कए देब, ओकर पुस्तकाकार प्रकाशनक जिम्मा हमरसभक। सभ पोथीकेँ प्रकाशित कराओल जाएत।”

वस्तुत: अहिना भेबो कएल। पोथी छपबाक समस्याक अन्त भेल। पाण्डुलिपिक टंकण कार्य आरो तीव्र भेल। ताकि-ताकि कऽ रचनाकार सभसँ सम्पर्क करए लगलौं। जइमे श्री राजदेव मण्डल , श्री राम विलास साहु, श्री नन्द विलास राय, श्री उमेश पासवान, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’, श्री बेचन ठाकुर, श्री शिव कुमार झा 'टिल्लू', श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत तथा श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पोथी छपलैन। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक तँ 27 गोट पोथी छपलैन। माने 'श्रुति प्रकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ प्रकाशित भेलैन। अपन 'निश्तुकी' पद्य संग्रह सेहो छपल। आ तैसंग अनेको ओहनो-ओहन रचनाकार लोकनिक रचना छपल जे खुदरा लिखलैन। विविध-विधाक सङ्कलन 'विदेह-सदेह' नाओंसँ प्रकाशित भेल अछि। हमर जिम्मा रचनाकारक रचनाकेँ टंकण कए पहुँचाएब छल। अनेको रचनाकार पाठकक सोझमे एला। ई क्रम, माने श्रुति प्रकाशनसँ पोथी प्रकाशनक क्रम, 2008 सँ 2012-13 इस्वी धरि चलल।

'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठीसँ लगातार जुड़ल छी। वर्त्तमानमे 106म आयोजन हटनी (नौआबाखर)मे श्री लालदेव कामतजीक

संयोजकत्वमे 25 सितम्बर-के हएब निश्चित अछि। उक्त कथा-साहित्य गोष्ठीक तीन खेप, क्रमश: 80म, 87म ओ 100म आयोजन निर्मलीमे कराएल। जइमे निर्मलीक समाजक भरपूर योगदान रहल अछि।

2014 इस्वीमे 'पल्लवी प्रकाशन'क पंजीयन कराएल तथा पोथी प्रकाशनक क्रम जारी राखल। पल्लवी प्रकाशन द्वारा विविध-विधाक करीब 300 साए पोथी प्रकाशित कए चुकलौं अछि।

2009-2010 इस्वीक बीच फेसबुकपर आबि चुकल रही, जइमे श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुरजीक सहयोगकेँ केना बिसैर सकबैन, अपने किछु बुझितो ने रही, हुनकेसँ बुझैत-सीखैत किछु-किछु काजक आरम्भ कएल।

फेसबुकपर अनेको विद्वानक रचनाकेँ साझा करए लगलौं। पछाइत , पूज्यवर श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विविध-विधाक रचना-अंशकेँ फेसबुकपर साझा करए लगलौं। ऐ कार्यकेँ करबाक मूल उद्देश्य मैथिलीक पाठक समुदायकेँ बढ़ेबाक छल। बेस पाठक बढ़ल। बहुतो विद्वतजन, पाठकवृन्द हमरा उत्साहितो केलैन। उत्साहित भऽ हम पाम्फलेट-कलेक्शन सेहो फेसबुकपर साझा करए लगलौं। धीरे -धीरे ई कार्य आगू बढ़ैत गेल। 'देवाश्रम' नाओंसँ अनेको सङ्कलन सेहो बहराएल। अही क्रममे मण्डलजीक बीछल कथाक एक साए सङ्कलन- 'पंचदेव' नाओंसँ प्रकाशित कए लोकार्पण कराएल। संगहि एक गोट 'दुध-पानि फराक फराक' नामक पाण्डुलिपि-छाया पोथी केर लोकार्पण सेहो 'सगर राति दीप जरय'क शतांक आयोजनमे कराएल। ऐ कार्यक लेल बहुतो आदरणीय हमरा उत्साहित करैत कहबो केलैन जे ई “मैथिली साहित्यमे ई नव डेग थिक।”

'नव डेग' सुनि अर्थात् उत्साहसँ उत्साहित भऽ विचारोत्तेजक गद्यांशक सङ्कलित पोथी प्रकाशित करी, ईहो मनमे आबए लगल। आइ लगातार सात वर्षसँ, माने 2014 इस्वीसँ ऐ कार्यमे लागल छी। जेकर फलाफल सद्य: प्रकाशित सङ्कलन- 'हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि' अपने सबहक सोझमे अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना कौशलक सन्दर्भमे केतेको

विद्वतजन लिखलैन अछि- “मण्डलजी फुसियाँहीक रचनाकार नहि छैथ, हिनक एक-एक वाक्य महत्वपूर्ण होइत छैन। एहि तरहक रचना कौशल कोनहुँ रचनाकारमे तखनहि आबि सकैछ जखन मंसा-वाचा ओ कर्मणाक सतह एक हो... ।”

पूर्वमे अपन दू गोट मौलिक कृति क्रमश: 'निश्तुकी' काव्य संग्रह- 2009 इस्वीमे तथा 'टुटैत मनक जुड़ाव' कथा संग्रह- 2018 इस्वीमे प्रकाशित कराएल। ऐ दुनू पोथीक लोकार्पण सेहो क्रमश: 80म तथा 97म 'सगर राति दीप जरय'क कथागोष्ठीमे भेल अछि।

प्रस्तुत पोथी 'हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि'क सम्बन्धमे सेहो अपना विश्वास अछि जे सुधि पाठक लोकैनकेँ नवताक भान हेतैन। ऐ पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गद्य रचनाक विचारोत्तेजक अंशकेँ हू-ब-हू राखलौं अछि। आरम्भ 'पंगु' उपन्याससँ कएल अछि। उक्त उपन्यासक आरम्भ सीतापुर गामक वर्णनसँ भेल अछि। सीतापुर मिथिलाक गाम थिक। अत: आरम्भ मिथिलाक वर्णनसँ भेल अछि आ अन्त भेल अछि 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनियाक संघर्ष' शीर्षक आलेखक अंशसँ... ।

साम्रगीकेँ दू तरहक फोन्ट -साइजमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। जइमे विचारोत्तेजक वा भावोत्तेजक तथ्यक फोन्ट-साइज किछु नम्हर अछि। कोन तथ्य केतएसँ अर्थात् कोन पोथीसँ वा रचनासँ आनल, तेकर विवरण सेहो सन्दर्भ-साभारमे अङ्कित करबाक कोशिश कएल अछि। धन्यवाद.! प्रणाम.!!

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य!!

–**उमेश मण्डल**

निर्मली

23 सितम्बर 2021

गुलामो देश भौगोलिक दृष्टिमे एक्के रंग नइ होइए, ओइ बीच नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो माटि-पानिक गुण रहिते अछि, जइसँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो उर्वर शक्ति रहने नीक-अधला दुनूक पैदाइस होइते अछि।

सीतापुर गाम ने राजस्थान सन अछि जैठाम झाड़ीनुमा गाछ-बिरीछ छोड़ि खाली छीपगरे-सरगर गाछ बिरीछ हएत आ ने साइबेरिया सन ठण्ढ मुल्क जकाँ अछि जैठाम काई-लिचेन सदृश बौना गाछ-बिरीछ छोड़ि दोसर कोनो छीपगर-सरगर गाछे नइ हएत।

सीतापुर ओहन मुल्क अछि जैठाम छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघो गाछ-बिरीछ सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। ऐठामक माटि-पानि मीठ-सँ-मीठगर फलो पैदा करैए आ सुकाठ-सँ-सुकाठ लकड़ियो दइते अछि। जे कि घरक साज-सज्जासँ लऽ कऽ गामक शोभा सेहो बढ़ौने अछि। तहिना भूमि सेहो ने दू रंगक होइए। एकटा भेल सुभूमि आ दोसर भेल कुभूमि। सुभूमिक माने भेल जीवित भूमि आ कुभूमिक माने भेल मरुभूमि। जेकरा रेगिस्तान सेहो कहै छिऐ। दुनूक अपन -अपन गुण-धर्म सेहो अछिए। ओना, गुणो आ धर्मो अविभक्त वस्तु छी मुदा ओहो जगह पेब अपन रूप बदैलते अछि।

❑ साभार : पंगु, उपन्यास- 2018, पृष्ठ संख्या- 07

जहिना मिथिलाक उत्तरवरिया सीमा पर्वत शृंखलासँ भरल अछि जैबीच हिमालय पर्वत सन पर्वतो अछि आ कैलाश सन भूमि सेहो अछिए, तैबीच मानसरोवर सन सरोवरो नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना दच्छिनी सीमाक नदीक समूहक बीच गंगा सन पवित्र नदी सेहो अछि। जैबीच सुलतानगंज, सिमरिया घाट सन अनेको पवित्र घाट- सेहो अछिए।

सीतापुर गामक सिमान सेहो मिथिलेक सीमाक बीच ने अपन सिमान निर्धारित केने अछि। जहिना गामक नाओं 'सीतापुर' अछि तहिना गामक भौगोलिक बुनाबट सेहो अछिए। जइमे सैंकड़ो रंगक फूल-फलसँ लऽ कऽ सैंकड़ो किस्मक अन्नो-अन्नक आ तरकारियोक उपजा-बारी होइते अछि।

ओना, मिथिलांचलमे अनेको धार सेहो बहिते अछि जेकर पानि पवित्र-सँ-पवित्र आ अपवित्र-सँ-अपवित्र सेहो अछिए। ओना, दुनूक पहुँच गंगामे होइते अछि, जइसँ दुनू एकबट्ट होइत पवित्र बनि संगे -संग बहैत गंगासागरमे पहुँच समुद्रमे विलीन भइये जाइए।

हजार बीघा जमीनक आँट-पेटबला गाम सीतापुरमे जहिना सभ रंगक भूमि अछि–ऊँचगर-सँ-निचगर धरि, तहिना ओइ भूमिक उपज सेहो सभ रंगक अछिए। ओना, सालो भरि बहैबला धार, जेकरा चलन्त धार कहै छिऐ ओ सीतापुरमे एकोटा नहि अछि। तँए कि सीतापुर धार रहित गाम अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सीतापुरमे दूटा धार अछिए। जइमे उत्थर रहने एकटा धार मात्र बरसाते भरि बहैए, जेकरा चौमसिया धार गौंआसँ लऽ कऽ अनगौं आँ तक कहै छैथ। गौंआँ ऐ दुआरे

कहै छथिन जे गाममे रहने अपना-अपना आँखिये देखबो करै छैथ आ ओइसँ जे हानि-लाभ अछि सेहो भोगिते आबि रहल छैथ। आ अनगौंआँ ऐ दुआरे कहै छथिन जे आनो-आनो गाम देने होइत ओ धार बनलो अछिए आ बहितो अछिए। मुदा दोसर जे धार अछि ओ बरहमसिया चलन्त धार तँ नहि छी, मुदा गहींरगर रहने अखाढ़-सँ-अगहन तक बहैत अछि। तँए ओकरा छह-मसुआ धार सभ कहै छैथ। जहिना खेत-पथार अखाढ़मे अन्नसँ आच्छादित होइए आ अगहनमे उसरन भऽ जाइए तहिना ओ धार पहाड़ी पानिसँ लऽ कऽ धरतीक पानिक बीच अपन धार बना बहिते अछि। वर्फसँ बनल पानि जहिना पवित्र होइए, माने ओइमे सुन्नरताक चमक रहै छै, तेकर विपरीत बर्खाक पानिक बहाब होइए, जे मेघसँ बरिस पाथरक स्थानसँ लऽ कऽ माटिक स्थानकेँ धोइ-पखारि बहैए, जइसँ ओकर रंग मटमैल रहैत अछि। मटमैल एक रूप भेल आ गन्दगीसँ भरल गन्दपन दोसर रूप भेल। मटमैल रहनौं बिना गंदपन रहने गन्दा दोसर रूप भेल। खाएर जे भेल जेतए भेल से भेल तेतए भेल। मुदा सीतापुरक बीच जे धार अछि ओ माटि-पाथरक धोन पानिक अछि, तँए ओकरा गन्दा नहियेँ कहल जा सकैए। गेन्दा फूल जकाँ ओकरो आँखिमे चमक छइहे। जइमे बहाउ धारक अतिरिक्त अनेको रंगक जलस्रोत सेहो अछिए।

मिथिलांचलक बीचक गाम ने सीतापुर छी तँए गामक अनेको विशेषता अखनो सीतापुरमे चलिए रहल अछि। गामो तँ गाम होइते अछि। मुदा ओहूमे ने नकोर, सकोर आ कुकोरक गुण सेहो होइए। ओना, तीनू गुणसँ सम्पन्न गाम सभ सेहो अछि आ फुट-फुट गुणबला गाम सेहो अछिए। तइमे आन-आनसँ भिन्न सीतापुर गाम अछि। जहिना हजार बीघा रकवाबला जमीन छै तहिना अठारह गण्डा पोखैर सेहो छै तहूमे जाइठबला। जहिना अठारह गण्डा जाठिबला पोखैर सीतापुरमे अछि, तहिना दूटा नमहर पनिझाउबला आ दर्जनो छोट-छोट पनिझाउबला पोखैर सेहो अछिए, मुदा ओ सभ जाइठ रहित अछि।

ओना तहूमे दुनू नमहरका जे अछि ओकरा लोक दैंतक खुनल पोखैर कहैए आ बाँकी छोट-छोट जे रंग-रंगक अछि तेकरा सभकेँ चभच्चा, कोचाढ़िसँ लऽ कऽ डोह-डाबर कहैए। भाय! भूमि तँ भूमि छी किने, तहूमे सीतापुर गामक, जे कि मिथिलाक मध्य बसल गाम अछि। ऐठामक भूमिक तँ ई गुण ऐछे जे कुइयाँ-इनारक रूपमे जहिना पतालसँ पानि अनैए तहिना खेत-पथारसँ लऽ कऽ अकास धरिक पानिकेँ सेहो संचित करिते अछि। साए-साए बीघाक दूटा चौरी सेहो अछि। जइमे छह -सात मास तक पानिक जमाव रहैए। जइसँ अन्न, फूल, फल उपैजतो अछि आ ओकर रक्षा सेहो होइत अछि। अन्न-फूल आ फल तँ धरतीक ऊपर होइए। ओहन धरतीपर, जइमे पानि आबि किछु दिन पहुनाइ करैत या तँ अकासमे उड़ि कऽ चलि जाइए वा रसे-रसे पताल दिस सटैक कऽ चलि जाइए वा ऊपरसँ टघैर-टघैर ओही नीचला खेतमे- माने चौरीमे चलि जाइए। ओना, अकाससँ धरतीपर उतैर वएह पानि उड़ि-उड़ि अकासो दिस बढ़ैए आ पतालो दिस ससरैत समुद्रसँ सेहो गड़ाजोड़ी करिते अछि। खाएर जे अपना मन फुरै छै से अपन करैए, अनेरे सीतापुरबलाकेँ एतेक हिसाब लइक कोन काज अछि। हमरा सभकेँ ओतबे से ने मतलब अछि जे नीक-नीक माछ उपजए, नीक-नीक सौरखी, करहर आ बर्री उपजए, तैसंग गाए-महींसकेँ नहाइ-पीबैले आ खेत पटबैले पानि भेटए। बस भऽ गेल जरूरतक पुरती..! लोककेँ अनेरे कोन खगता छै जे धरतीए जकाँ पानियोँक ऊपरमे ओछाइन ओछा कऽ सुतबो करत आ बैस-बैस कऽ ताशो भाँजत। कोन खगता छै जे पचीसीक घर बना पचीसियो खेलत आकि कोजगरा-दिवालीक उत्सवे मनौत। तइले तँ धरती अछिए।

❑ **साभार : पंगु, उपन्यास- 2018, पृष्ठ संख्या- 08-10**

सभ किछु रहितो सीतापुर गामकेँ दुश्मनक

डर नइ होइ छै, सेहो बात नहियेँ अछि। कोसी-
कमलाक बीचबला गामकेँ तँ एते डर छइहे किने
जे जँ कहीं कूदि-फानि कऽ कोसीए आकि कमले
चलि औत आ गामक माटिकेँ काटि अपन
घर बना गामक बासकेँ उपटा देत,
ई डर तँ बनले अछि।

तहिना मौसमोक डर तँ बनले अछि किने जे उग्र रूप छोड़ि ओहन मरियले रूप बना लिअए जइसँ अकाले पड़ि जाए, जँ से भेल तखन तँ गाछ-बिरीछक संग माछो-कौछ आ गाइयो-महींस ने पियासे परान तियागए लगत। मुदा तैयो हमरा सभकेँ एतेक आत्मबल तँ अछिए जे ज्ञानबलक संग कर्मबलसँ सेहो हम सभ अपन-अपन आत्मबलक रक्षा करिते छी। तँए, आन-आन गामक अपेक्षा हम सभ अपनाकेँ सबल बुझि निर्भय छीहे। निर्भीक बनि अपन गामक रूप-रंगकेँ सजौनहि छी। सजेनौं किए ने रहब? जइ पानिक गति सभदिना अछि ओ जँ खिसिया कऽ रूसबो करत तँ एक साल रूसत, चाहे दू साल आकि तीन साल रूसत सएह ने, मुदा हमसभ तँ बारह सालक रूसलकेँ बौसैक लूरि रखने छी। ओहिना नहि ने गामक नाओं सीतापुर अछि..!

हजार बीघाक सिमानमे बान्हल सीतापुर गाममे जहिना ऊपर-निच्चाँ खेत बनल अछि, जेकरा लोक उपरारि भीठसँ लऽ कऽ मध्यम नीचरस आ चौरी कहैए, तहिना अनेको रंगक माटियो अछि जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला अछि। माने अधिक उर्वर शक्तिबला माटिसँ लऽ कऽ कमसँ कम उर्वर शक्तिबला माटि सेहो अछिए। पचीसोसँ ऊपर

रंगक माटि गाममे अछि, जेना- खरिआए, मटियार, उस्सर, बलुआही, चिक्कैन, धुसरी, दोरस, तेरस, गाबीस इत्यादि...।

ओना, उपज माटियोक हिसाबसँ होइए आ जमीनक ऊपर-निच्चाँ आकारक हिसाबसँ सेहो होइते अछि। जइसँ धान, गहुम, मरूआ, मकइ, खेसारी, मौसरी, राहैर, केराउ, बदाम, तीसी, सेरसो इत्यादि पचासो रंगक जजाति उपजैत अछि। तैसंग खैहन, दलिहन, तेलहनक अनेको रंगक जिनिसक उपज सेहो होइत अछि। तेतबे नहि, रंग-रंगक तीमन-तरकारी जेना- अल्लू, कोबी, बैगन, टमाटर, झिमनी, रामझिमनी, सजमैन, कदीमा, घेरा इत्यादि सेहो उपैजते अछि। रंग-बिरंगक मात्र अन्ने-तरकारी नहि, पचासोसँ ऊपर रंगक फलो आ फूलोक उपज सेहो होइत अछि। आम-जामुन, लताम-लीची, सरीफा, आँता, बेल, धात्री इत्यादि वृक्षनुमा गाछक संग झाड़ीनुमा गाछक फल सेहो उपैजते अछि, जेना- नेबो, दारीम इत्यादि। जहिना नमगर-छरगर फलक वृक्ष अछि तहिना बौना किस्मक फलक गाछ सेहो अछि जेना- सरीफा, अनरनेबा इत्यादि-इत्यादि। तेतबे नहि, अन्न-तीमन-तरकारीक संग अनेको किस्मक साग-पातक उपज सेहो होइत अछि, जेना- गेनहारी, ठढ़िया, पटुआ, घौका, लफ इत्यादि। संग-संग लत्तीनुमा तरकारीक अलाबे जहिना गाछनुमा तरकारीक उपज होइए तहिना फूलोक अछि। चम्पा, शिवलिंग, करबीर, अड़हुल इत्यादि जहिना वृक्षनुमा गाछक फूल होइए, तहिना जूही, चमेली, बेली इत्यादि झाड़ीनुमा गाछक होइए आ तहिना लत्तीनुमाक सेहो अनेको फूल फुलाइते अछि...।

❑ साभार : पंगु, उपन्यास- 2018, पृष्ठ संख्या- 10-12

“किछु ने करी, जीवनकेँ पकैड़ जीवनमे (भूमिमे) स्थापित करैत आगू देखैत अपन डेग

उठबी। जेतए ठाढ़ छी वा झुकल छी वा बैसल छी वा खसल छी, तैठामसँ अपन जीवनक आधार बना उठि कऽ अखनेसँ ठाढ़ भऽ दौड़ैक चेष्टा करी।”

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक मनमे सेहो समेलैन जे नीक विचार रामकिसुन बुझए चाहि रहला अछि। मुदा जइ गम्भीरतासँ बुझैक जरूरत अछि, से तँ अपनो धड़फड़मे नहियेँ बुझा सकै छी। तथापि ऊपरो-झापड़ जँ विषय दिस माने भविष्यक सम्भावना दिस, विचारकेँ धकेल देब तँ रामकिसुनक अपनो मन ने ओकरा खोदि-खोदि निकालए चाहता। तइ बीच अपनो किए ने इमानदार विचारवान जकाँ विषयकेँ इमानदारीसँ तत्काल अराधि, अपनो होशकेँ सम्हारि ली। मंगलदेव बजला- “रामकिसुन, एक संग दू प्रश्न अछि , तँए एकटाकेँ संक्षिप्त परिचय दैत दोसरसँ नीक जकाँ परिचय कराएब।”

अपन सहमत दैत रामकिसुन बजला- “भाय साहैब.! कोनो विषयकेँ सोल्होअना बुझब ने सुननिहारे मने होइए आ ने कहनिहारे मने, ओ होइए विषय मने। तँए दुनूक बीच सामंजस करब जरूरी अछि। समयकेँ देखैत संक्षेपमे बुझा दिअ, पछाइत समय भेटलापर आगू आरो बुझा देब।”

मंगलदेव बजला- “रामकिसुन, जहिना मनुक्खक जीवन सम्भावनासँ लबालब भरल अछि जे जे कियो अपन लक्ष्यकेँ इमानदारीसँ पकैड़ क्रियाक संकल्पित भेलापर प्राप्त करै छैथ। तहिना गामो-समाज सम्भावनासँ भरल अछिए, तँए जरूरी अछि... ।”

मंगलदेव अपन विचारकेँ पूर्ण विराम लग अननौं ने छला कि बिच्चेमे रामकिसुन बाजि उठला- “मनुक्खक जीवनक की सम्भावना भाय साहैब?”

मंगलदेव- “रामकिसुन अहाँ तँ अपने काज दुआरे सुनए नहि चाहै छी, तखन... ।”

रामकिसुन बजला- “मुड़कट्टीमे कहि दिऔ ।”

मंगलदेव बजला- “जहिना मनुक्खक आगू भरपूर सम्भावना अछि जे समयोचित जे जे करए चाहता से प्राप्त कऽ लेता, तहिना अपनो गाम आ आनो-आन गामकेँ असीम सम्भावना अछिए जे किसानक जीवनक काजमे, जे हाथसँ होइत आबि रहल अछि, केना धक्का मारि ओहन स्वचालित मशीन लग पहुँचा दिऐ, जेना जापानक लोक धक्का मारि पहुँचा लेलैन अछि जइसँ हुनका सभक जहिना उत्पादन मशीनक तहिना खेतक सेहो तेते अगुआ गेलैन अछि जे दुनियाँक कान काटै छैथ। ”

मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुन बजला- “अखन की करी?”

मुस्कुराइत मंगलदेव बजला- “किछु ने करी, जीवनकेँ पकैड़ जीवनमे (भूमिमे) स्थापित करैत आगू देखैत अपन डेग उठबी। जेतए ठाढ़ छी वा झुकल छी वा बैसल छी वा खसल छी , तैठामसँ अपन जीवनक आधार बना उठि कऽ अखनेसँ ठाढ़ भऽ दौड़ैक चेष्टा करी ।”

❑ **साभार : अन्तिम क्षण, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 106-07**

मिथिलांचलक चिन्तन धारामे सिरिफ उच्च कोटिक मनुष्ये नहि, उच्च कोटिक समाज आ सामाजिक-पद्धतिक सेहो दिशा-दर्शन रहल अछि। जन-गणक नगर जनकपुर। आ जनकपुरक राजा जनक। जनिक कन्या जगत जननी जानकी। एक-सँ-एक चिन्तक, तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक मिथिला भूमि पैदा केने अछि। जेकर वानगी इतिहास-पुराण जीवित अछि।

गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच बसल मिथिलो आ कामरूपोक रहने उपजा-बाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक आनो-आनो सम्बन्ध सहज अछि। जहिना कामरूप तलहटी मैदानसँ लऽ कऽ पहाड़-पठार, वनक संग प्रवाहित होइत जलधारासँ सम्पन्न अछि तहिना बिहारो अछि। बंगालक खाड़ीसँ उठैत मानसुनसँ जहिना कामरूपक भूमि सिंचित होइत तहिना मिथिलांचलोक। ओना मुँहपर पड़ने कामरूपमे अधिक बरखा आ जेना-जेना पछिम मुहेँ ससरैत तेना-तेना कम होइत जाइत, मुदा दुनूक बीच नजदीकी रहने बहुत बेसी अन्तर नै पड़ैत। गंगा-ब्रह्मपुत्रक एक तलहटी रहने माटियो आ माइटिक सुगंधोकेँ एकरंगाह बनौने अछि। उत्तरी पहाड़सँ निकलैत (नदी धारा) जल धारो एक-रंगाहे रहल अछि। जैठाम जेहेन माटि-पानि तैठाम तेहन उपजा-बाड़ी। जैठाम जेहेन उपजा-बाड़ी तैठाम तेहने खानो-पान आ आचारो-विचार। जैठाम जेहेन खान-पान, आचार-विचार तैठाम तहिना कला-सांस्कृतिक सम्बन्ध। जे दुनूक बीच अदौसँ रहल अछि।

ओना, खेती-बाड़ीमे एक-रूपतो अछि आ भिन्नतो। अधिक मध्यम बर्षा भेने, पनिसहू फसिलो आ फलो-फलहरीमे अन्तर होइत, से ऐछो।

जइ कामरूपमे नारियल, सुपारी, चाहक बहुतायत अछि ओ मिथिलांचलमे कम अछि। ओना मिथिलांचलमे सिरिफ आम हजारो किस्मक अछि। मुदा पटुआ आ धान जहिना कामरूपक मुख्य फसिल अछि तहिना मिथिलोक। मुदा जहिना नीलक नब अविष्कार भेने नीलक खेती मारल गेल तहिना पोलीथिनक आगमनसँ पटुआक खेती प्रभावित भेल अछि।

मिथिलाक उर्वर भूमि। जहिना माटि-पानि तहिना स्वच्छ हवो। जइसँ सभ कथूक वृद्धि। चाहे ओ खेती हुअए आकि जीवन पद्धति हुअए आकि कला-संस्कृति। मिथिलांचलक चिन्तन धारामे सिरिफ उच्च कोटिक मनुष्ये नहि, उच्च कोटिक समाज आ सामाजिक-पद्धतिक सेहो दिशा-दर्शन रहल अछि। जन-गणक नगर जनकपुर। आ जनकपुरक राजा जनक। जनिक कन्या जगत जननी जानकी। एक-सँ-एक चिन्तक, तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक मिथिला भूमि पैदा केने अछि। जेकर वानगी इतिहास-पुराण जीवित अछि।

जहिना सौंसे देश गुलामीक शिकंजामे हजारो बर्खसँ रहल तहिना देशक उत्तर-मध्य बसल मिथिलो अछि। ओना मिथिला दू देशमे बटल अछि। साठि-पैंसैठ बरख पहिने भारत स्वतंत्रताक साँस लेलक जहन कि नेपालक मिथिला हालमे साँस लेलक। जहिना अभावी परिवारमे अभावक चलैत जीवनक सभ किछु प्रभावित होइत, तहिना भेल। जीवन-पद्धतिमे खोंट अबैत-अबैत खोंटाह होइत गेल अछि। जेकर असर अधलाह पड़ैत गेल। मुदा तैयो मिथिलाक वएह भूमि छी जे अदौसँ रहल।

❑ साभार : 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन गवाहाटी- 2011' मे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक अध्यक्षीय उद्बोधनसँ...

जैठाम एकटा शब्द अंगरेजीमे छै तैठाम मैथिलीमे अहाँकेँ दर्जनो शब्द ओइ शब्दक छइ! एतेक समृद्ध भाषा मैथिली अछि। जनभाषा छिऐ। और ई धरतीसँ ऐ भाषाक जन्म भऽ रहलै हेन, आ हेतइ, आगूओ हेतइ। भाषाक जन्म और भाषाक विकास अवरूद्ध नै कहियो हेतै, ओ समयक अनुकूल परिवर्तित होइत चल जेतइ! और बढ़ैत जेतइ..!

आइ सौमा कार्यक्रमकेँ पाबैन हम-सभ मना रहल छी और ऐ पाबैनकेँ कोनो कार्यक्रम–जे साहित्यिक कार्यक्रम होइ वा राजनीतिक कार्यक्रम होइ–भार लेनिहारमे जखन ई भावना आबि जाइ छैन जे कार्यक्रम अप्पन छी, जँ केतौ त्रुटियो भऽ रहल हेन तँ ओकरा अनठबैत, कार्यक्रमकेँ अधिक-सँ-अधिक सफल केना बनाबी, नीक-सँ-केना बनाबी..; ई औझुका कर्यक्रमक स्पष्ट प्रमाण अछि। जे सबहक जिज्ञासा एहेन रहलैन जे कार्यक्रम सफल हुअए.!

ऐठाम पैघ-पैघ बहुत लोक सभ छैथ, पैघ-पैघ माने साहित्यिक क्षेत्रमे, साहित्यिक काज केनिहारक क्षेत्रमे...। आइ भाषाक दृष्टिकोणसँ अहाँ कहबै जे कि मैथिलीकेँ की जान छै? तँ एक्केटा शब्द हम कहब जे अंगरेजी डिक्सनरी लिअ और अहाँ मैथिलीमे, डिक्सनरी नइए जँ कियो लिखनौं छैथ तँ प्रकाशित जकाँ नइ भेल छै , भऽ सकै छै जँ गोटे-आधे प्रकाशित भाइयो गेल होइ तँ, हम नइ देखलिऐ हेन। जे एकटा, जैठाम एकटा शब्द अंगरेजीमे छै तैठाम मैथिलीमे अहाँकेँ दर्जनो शब्द ओइ शब्दक छइ! एतेक समृद्ध भाषा मैथिली अछि। जनभाषा छिऐ। और ई धरतीसँ ऐ भाषाक जन्म भऽ रहलै हेन, आ हेतइ, आगूओ हेतइ। भाषाक

जन्म और भाषाक विकास अवरूद्ध नै कहियो हेतै, ओ समयक अनुकूल परिवर्तित होइत चल जेतइ! और बढ़ैत जेतइ..!

तँए भाषा कमजोर नइए। हँ, साहित्यक क्षेत्रमे भलेँ कहबै जे रचना हमरा सबहक कम अछि। और रचनो जे अछि ओइमे सभ विधापर...। समाजकेँ...। आइ, हम सभ अतित दिस कनी बेसी बढ़ि जाइ छी, जे रचनाकारमे हमरा कनीक दोष बुझाइए। ई बात जरूर जे ओ इतिहास छी, ओ पुराण छी, ओ परमपरा छी..! मुदा ओकरा ओइ दयरामे राखए पड़तै। ओकरा अगर आइ हम वर्तमान वा भविष्यकेँ नजैरमे राखि कऽ जँ मनुखकेँ देखबै तँ ओ कल्याणकारी नइ हेतइ। कल्याणकारी लेल दुनू दिस देखए पड़त। ओइसँ अहाँकेँ सीख लिअ पड़त- अतितसँ, मुदा ओकरे पूजा-पाठमे उतारि देबै, ओकरे हम भविष्य बनाकऽ ओही दिशामे बढ़ि जेबै तखन साहित्य अवरूद्ध भऽ जेतइ।

❑ **साभार : 'सगर राति दीप जरयक मादे'**

शीर्षक आलेखसँ...।

मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ।
तीन अवस्था तँ सबहक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ
बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ
दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। जे एकाकी परिवारमे नइ
भऽ पाबि रहल अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल
अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना
कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत
तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ,
बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता
केतौ रहए लगल अछि।

"जखन ई दायित्व सभ मनुखक छी तखन अपने गाममे देखियौ- ऐ सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखबे करै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छेलै, ने भरि देह वस्त्र आ ने रहैले सुरक्षित घर छेलइ। ओना, अखनो नै छै आ ने रोग-बियाधिसँ बँचैक सुरक्षित उपाय। बाजू, छेलै की नै छेलइ?"

धीमी स्वरमे डॉक्टर महेन्द्र बजला-

"हँ से तँ ठीके।"

"आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाइ, पड़ाइक मतलब जेतए पेट भरत ओतए जाएब। जँ कियो पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छइ। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनत आ असानीसँ जिनगी जीनाइ ताधैर

सम्भव नइ अछि, जाधैर मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। अगर जँ किछु गोरेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ बुझनाइ नेने-नेने गुलामीक जीनजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुख आ गुलाम होइ छै ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओइ रूपेँ चलि रहल अछि जे जहिना हम-अहाँ पोखैरमे कनी बोर दऽ बनसी पाथि दइ छिऐ आ नमहर-नमहर माछ खेनाइक लोभे फँसि जाइए तहिना मनुखोक बीच चलि रहल अछि। जेकरा नजैर गड़ा कऽ देखए पड़त।”

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलैन। मुदा मुड़ी डोलौला पछाइतो मनमे किछु शंका रहबे करैन। जे मुँहक हाव-भावसँ सुबुध बुझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत सुबुध बजला-

“अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जा अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेच लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसन्धान कऽ कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेच आरो पछुअबैए। एकटा सबाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नइ अछि जे ओ अपन बुधिक सदुपयोग कऽ सकता। तँए अपन बुधिक सदुपयोग करैले आन देश जाइ छैथ। मुदा हमरा बुझने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नइ अछि। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यएह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर देशकेँ माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहलै। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ। जइसँ जेहो सम्पैत-साधन ओइ देशकेँ रहत, ओहो लूटा जाइए। जखन ओ लूटा जाएत तखन आगू-मुहेँ केना ससरत?”

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र बजला- “तखन की करक चाही?”

सुबुध- "आँखि उठा कऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ -आ पढ़ने विद्वान बनि सकल। वा बनि सकै छैथ? जँ से नहि, तखन पछुआएल देश वा लोक केना बिना कठिन मेहनत केने आगू बढ़ि सकैए? ..तँए पछुआएल देशक लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तैन। जँ से नइ बुझि अगुएलहाक अनुकरण करता तँ पुनः गुलामीक बाटपर चढ़ि जेता। केते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस चलू... ।"

डॉक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुनः सुबुध बाजए लगला- "अपना ऐठाम जे पारिवारिक ढाँचा अदौसँ रहल ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ। तीन अवस्था तँ सबहक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। जे एकाकी परिवारमे नइ भऽ पाबि रहल अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच बरतन जकाँ मनुख होइए। कखन की ऐ शरीरमे भऽ जाएत तेकर कोनो गारंटी नहि। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थक अवस्थामे तँ से नइ भऽ सकैत अछि। तखन केहेन कष्टकर जिनगी मनुखक सामने उपस्थित भऽ जाइ छइ। तोहूपर तँ नजैर दिअ पड़त।"

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकैन। देहमे कम्पन आबि गेलैन। बोली थरथराए लगलैन। कनी काल धरि असथिर भऽ मनकेँ थीर केलैन। मन थीर होइते महेन्द्र बजला- "सुबुध भाय, भलेँ हाइ स्कूल धरि

संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अ हाँ चिन्हलौं ओ हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अ हाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक मात्र बुझै छेलौं मुदा ओ भ्रम छल। संगी रहितो अ हाँ गुरु छी। करवनो काल, जखन एकांत होइ छी, अपनो सोचैत रहै छी जे एतेक कमाइ छी, मुदा तैयो दिन-राति खटैत-खटैत बेचैने किए रहै छी, करवनो चैन किए ने भऽ पबै छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि मुदा देखैक समय नइ भेटैए। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए, जे फल्लाँकेँ समय देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रिसानीक लाभ की भेटैए तँ सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छी..?”

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्कियाइत सुबुध बजला- “भाय, पाइ जिनगी चलबैक मात्र साधन छी, नइ कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुखकेँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर मनुषत्व समाप्त भऽ जाइ छइ। जइसँ चीन-पहचीन सेहो समाप्त भऽ जाइ छइ। तेतबे नहि, अपराधिक वृत्ति सेहो पनपए लगै छइ। अपराधिक वृत्ति मनुखमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे स्वतः धकला जाइए। तँए अपन जिनगीकेँ देखैत परिवार आ समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना, मनुख मात्रक सेवा-ले सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही, जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एतेक कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छैथ। मुदा ओ थाकब हारब नहि, जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि ओइ जड़िमे तामि-कोरि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक अछि। जइसँ ओ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकेँ समरपित कऽ देबाक अछि।”

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सक्कत बनए लगलैन।

आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलैन। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबुधोकेँ कहलखिन- "दुनू गोरेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहेन नै बँचत जइ दिन हमरा चारू गोरेमे सँ कियो-ने-कियो ऐठाम नै रहब। ओना, मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नै होएत मुदा परिवारो आ समाजोकेँ नइ छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखन तँ ओते अनुभव नइ अछि मुदा चाहब जे समाजमे बिमारी-ले जे खरच हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजकेँ खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना हमहूँ स्वस्थ्य-ले ओरियान जरूर करब। समाजकेँ कहि दियौन जे जिनका किनको कोनो रोग बिमारी होइ ओ आँखि मूनि कऽ ऐठाम चलि अबैथ। हुनकर इलाजक सेवा जरूर हेतैन। ऐ बेर बिना निआरे गाम आएल छेलौं तँए किछु लऽ कऽ नहि एलौं। मुदा कहै छी जे ज हाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते पठा देब। तत्काल अखन भाबो गामेमे रहती। बौएलाल आ सुमित्रा सेहो रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिन-ले आएब। आ ऐठाम आबि अधिक-सँ-अधिक गोरेकेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी आ हम समाजक छिऐ।"

❑ **साभार : मोलाइल गाछक फूल, उपन्यास,**

लेखन वर्ष-2004, पृष्ठ संख्या- 183-187

जहिना भाषाक बीच, तहिना जाति-सम्प्रदायक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहैए। एहेन परिस्थितिमे केना सामंजस करैत अपने-आपकेँ सुरक्षित राखि सकब, नान्हिटा बात थोड़े अछि। तहूमे समाजक बीच एहेन मनोवृत्ति बनि गेल अछि जे जे शक्तिशाली आ बहुसंख्यक अछि ओ शक्तिहीन आ अल्पसंख्यककेँ सेहो सदिकाल निच्चाँ देखबए चाहैए।

"अखन सात बजैए। दस बजे निकलैक विचार अछि।"

ओना, सीतानाथ गपो-सप्प कऽ रहल छल आ मने-मन राधारमणक चेहराकेँ सेहो निहारि रहल छल जे मनमे केहेन खुशी छैन। राधारमणक चेहरासँ स्पष्ट दुनू रूप झलैक रहल छेलैन। पहिल , नव जीवनमे पदार्पणक खुशीक रूप आ दोसर अखन तक माने चौबीस बर्खक जे सामाजिक जीवन रहलैन ओइसँ अलग होइक कारणे मलिनता सेहो छेलैन। मुदा दुनूकेँ सामंजस करैत राधारमण बीचक सीमापर अपनाकेँ असथिर रखने छला। सीतानाथ बाजल-

"भैया, अपने तँ कमलपुरक ओहन सहस्र दल कमल जकाँ बनि गामसँ निकैल रहल छी जेकर महमही देश भरिमे पसरत..!"

सीतानाथक बात सुनि राधारमणक मनकेँ जेना कोनो भारी वस्तु दाबि देने होनि तहिना भेलैन। मनमे उठलैन जे सीतानाथ कोनो अधला बात तँ नहियेँ बाजल। किए तँ देशक कोनो कोण आकि भागमे एक

जवाबदेहक रूपमे काज करैक भार पड़बे करत। भारक माने एतबे नहि ने जे नियम-कायदा माने अधिकारक जे कानून-कायदा अछि, तइ अनुकूल अपनाकेँ स्थापित करैत समय बीता ओइठामसँ बदैल दोसरठाम चलि जाइ। एकर तँ दोसरो पक्ष अछि किने। ओ अछि जे ओइठामक जन-मानसक बीच अपन की छवि अछि, तेकरा प्रदर्शित करैक अवसरो तँ अछिए। नीक छवि केना बना पएब ई तँ अपने केने हएत। यएह ने अपन कार्य-शैलीक प्रमुख अंग भेल। अपन देश सभ तरहेँ विशाल अछिए। जहिना लम्बाई-चौड़ाइ अछि तहिना जनसंख्या सेहो अछि। जइमे रंग-रंगक जीवन माने मनुखक जीवन सेहो अछिए। तैसंग अनेको जाति, अनेको भाषा आ अनेको सम्प्रदाय सेहो अछि। जहिना भाषाक बीच, तहिना जाति-सम्प्रदायक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहैए। एहेन परिस्थितिमे केना सामंजस करैत अपने-आपकेँ सुरक्षित राखि सकब, नान्हिटा बात थोड़े अछि। तहूमे समाजक बीच एहेन मनोवृत्ति बनि गेल अछि जे जे शक्तिशाली आ बहुसंख्यक अछि ओ शक्तिहीन आ अल्पसंख्यककेँ सेहो सदिकाल निच्चाँ देखबए चाहैए। मनमे उठल घनघोर विचारकेँ सामंजस करैत राधारमण बजला-

“बौआ सीतानाथ, कमलोक महमही तखने छिटकैए माने पसरैए, जखन ओकरा पवित्र स्थान भेटै छै। जँ से नहि भेटि दुर्गन्धित स्थान भेटि जाइ छै तखन ओकर महमही थोड़े हवामे पसैर पबैए। मुदा तूँ जे बजलह ओकरो महत तँ अछिए।”

गीतानाथ बाजल- “भैया, अपने तँ ओहन डिग्री प्राप्त कऽ लेलिऐ जे सामान्य विद्यार्थीक लेल असंभव अछि।”

गीतानाथक विचार सुनि राधारमणक मन थोड़ेक ठमकलैन, मुदा अपने मन जेना भीतरसँ धक्का देलकैन जे जे विचार गीतानाथक मनमे अछि ओ केते सही अछि? राधारमण बजला-

“बौआ, जखन आई.ए. पास केलौं आ बी.ए.मे प्रवेश केलौं तखने

मनमे उठल जे आई.ए.एस. करब, मुदा जखन देश भरिक प्रतियोगी परीक्षापर नजैर गेल तखन मन आगू-पाछू करए लगल।"

आगू-पाछू सुनि सीतानाथ बाजल- "की आगू पाछू करए लगल, भैया?"

गीतानाथपर सँ नजैर हटा सीतानाथपर नजैर दैत राधारमण बजला- "बौआ, दू तरहक विचार मनमे उठए लगल। पहिल , ई जे देश भरिक प्रतियोगी परीक्षा छी, जइमे हजारो-हजार विद्यार्थी शामिल होइए आ सामान्य रिजल्ट जकाँ रिजल्टो नहि होइए। जे पास मार्क आनत ओ पास करबे करत आ दोसर ई उठल जे एहनो तँ नहियेँ अछि जे कियो पास करबे ने करैए। अही, दुनू विचारक बीच अपनो मनमे विचार उठि रहल छल।"

गीतानाथ बाजल-

"तखन, निर्णय केना केलिऐ?"

राधारमण बजला-

"बौआ, पिताजीक जे कुदृष्टि छेलैन तइसँ मनमे ठना गेल छल जे केतौ-ने-केतौ नोकरी करैक अछि। किएक तँ जँ अपन जीवन माने अपन परिवारक भार अपना कन्हापर उठा नहि चलब तँ सदिकाल परिवारक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहत आ अनेरे ओइमे ओझराएल रहब। जखन नोकरी मनमे रोपा गेल तखन विचार उठल जे नोकरियो तँ केते रंगक अछिए। तइमे नीक नोकरी केना पेब सकब तइ ले तँ अपनो ओहन साधना करए पड़त।"

❑ साभार : सुचिता, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 11-13

भगवान राम जखन बोन जाए लगला तँ अन्तिम विदाइ अयोध्यावासी लैत-दैत पुरुख-नारी कहि तँ सभकेँ विदा कऽ देलखिन आ अपने दच्छिन मुहेँक रस्ता धेलैन, आ बीचमे किछु गोरे ओहिना ठाढ़े रहि गेल, ओ की केलक से बुझल अछि?

“जे समस्या अपना परिवारमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ खाली अपने परिवार-टा मे भेल आकि आइये भेल अछि आ पहिने नइ भेल हएत से केना बुझै छिऐ? सभ दिन होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। महादेवकेँ सेहो अर्द्धनारीश्वर कहल जाइ छैन। जखने अर्द्धनारीश्वर तखने ने सन्तान विहीन! कार्तिक आ गणेश तँ तखन भेलैन जखन महादेव आ पार्वती दुनू दू छला। मुदा जखन दुनू सटि एक भेला तखन कोनो सन्तान नइ ने भेलैन। तँए की हुनका देववंशसँ कियो हटा देलकैन आकि हटा देतैन?”

ओना, मंगली काकीकेँ महादेव-पार्वतीक ओ कथा (माने अर्द्धनारीश्वरबला कथा सुनल रहैन मुदा एना भऽ कऽ नहि, ई नइ बुझल रहैन जे अर्द्धनारीश्वर की। तँए, धार-कातक पँकियाएल चपचपीमे जहिना चँङ्गराएल चिड़ैयो आ पैरबला जानवरक संग लोको चपि कऽ गड़ि जाइए, तहिना मंगली काकी सेहो चपि कऽ गड़ि मुँहपर हाथ लैत बजली-

“ऐँ.अ..अ..!”

जीवन काकाकेँ जेना सहगर खेतक लभगर हाल भेटलैन तहिना बजला-

“ऐँ-टैँ नइ करू! वएह शिवजी महादेव छैथ जे देखलखिन जे जे

कृष्णजी महिला संगठनक नेता छैथ ओ महिला छोड़ि पुरुखक प्रवेश रोकने छैथ, तखन ओ की केलैन से बुझल अछि?”

विचारक बोनमे हेराएल-भोथियाएल बेटोही जकाँ मंगली काकी बजली-

“नइ! अहूँ ने तँ कहियो कहने छेलौं। ”

जीवन काका बजला- “कोनो कि एकेटा गप अछि जे ओ छुटि गेल ते बड़ जुलुम भऽ गेल। जखने जागी तखने परात..!”

उत्सुकाएल मंगली काकी बजली-

“पहिने शिवशंकर दानीक कथा कहि दिअ।”

पत्नीक चपचपी देखि चपचपाइत जीवन काका बजला-

“शिवसँ शिबानी बनि कृष्णजीक महिला संगठनमे शामिल भऽ गेला..!”

मंगली काकीकेँ जेना एकाएक भक् खुजलैन तहिना बजली-

“एहेन बात जे अहाँ पेटमे रखने छेलौं आ कहियो एतबो सिनेह नइ भेल जे हमरो कहितौं..! ”

पत्नीक झुझुआइत मनकेँ जीवन काका पकैड़ बिच्चेमे बजला -

“पेटमे कि एतबे अछि। अच्छा जखन अहाँ पेटक बात लिअ चाहै छी ते सुनू। ई तँ शिवशंकर महादेवक विषयमे कहलौं। आब सुनू महाभारतक विषय।”

‘महाभारत’क नाओं मंगली काकी सुनने जरूर छैथ आ द्रौपदीक चिरहरणक सिनेमो देखने छैथ। तँए, महाभारतक नओं सुनि आरो जिज्ञासा बढ़ि गेलैन। बजली-

“सुनाइये दिअ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जँ मन लगले चलि जाएत तखन तँ अनेरे ने भूत बनि लपकबै।”

मुस्की दैत जीवन काका बजला-

“जखन महाभारत होइत रहै ने, तइमे एकटा वीर रहै शिखंडी, ओहो अपने श्यामा जकाँ छल। ओ की केलकै से बुझल अछि?”

मुड़ी डोलबैत मंगली काकी बजली-

“नइ..!”

जीवन काका बजला-

“कृपाचार्योकेँ आ कृतवर्मोकेँ छेरा-छेरा भरौलक!”

मंगली काकीक मनमे जेना आत्मबल फुलाए लगलैन तहिना बिहुसैत बजली-

“अरे वा..!”

जीवन काका मंगली काकीक मनमे पसि बजला-

“ऐँ., एतबेमे हदिआइ छी! भगवान राम जखन बोन जाए लगला तँ अन्तिम विदाइ अयोध्यावासी लैत-दैत पुरुख-नारी कहि तँ सभकेँ विदा कऽ देलखिन आ अपने दच्छिन मुहेँक रस्ता धेलैन, आ बीचमे किछु गोरे ओहिना ठाढ़े रहि गेल, ओ की केलक से बुझल अछि?”

मंगली काकी बजली-

“नइ..!”

जीवन काका बजला-

“ओ सभ–जे ठाढ़ छल से–के सभ छल? जे पुरुख-नारीक बीचक अछि। जेकरा शखा-सन्तान नइ हएत। जखन रामचन्द्रजी, लक्ष्मण आ सीताक संग घुमि कऽ अयोध्याक आड़िपर पहुँचला तखन वएह सभ दुनू भाँइक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे ‘अहाँ हमरा किए ने विदाइ देलौं? जइ आशामे अहीं जकाँ चौदह बर्ख हमहूँ सभ टपला खेलौं ?”

मंगली काकीक मनो आ शरीरो जेना शान्त भऽ गेलैन। बजली-

"जे अहाँ करबै सएह ने हमहूँ करब।"

रणभूमिक संगी पेब जीवन काका बजला-

"श्यामा हमर सन्तान छी। अपना जीबैत ओकरा भीख माँगैत देखब, की ओहन लाजक विचार लोक अपने नइ करत। दुनियाँ एक दिस भऽ जाए, मुदा...। जाबे धरि श्यामा पढ़ए चाहत, समांग बुझि सहयोग देबइ। जहिया ओ पढ़ाइ छोड़त तहिया अपना आँखिक सोझमे ओकरा मनोनुकूल जीबैक साधन बना देबइ। अपना पैरपर ठाढ़ कऽ समाजक ओहन मनुख बना देबै जे अपन श्रमसँ अपन सुभिमानी जिनगी बना जीबत आ ओकर रक्षा करैत रहत।"

❑ साभार : सुभिमानी जिनगी, कथा संग्रह, प्रकाशन वर्ष 2018, पृष्ठ- 97-100

हीरालाल, भने कहलह जे समाजक भागे जीबै छिऐ, मुदा अपन की भाग अछि तेकर आड़ि-धूर अछिए नहि, तखन तोहीं कहह जे एहेन समाजक भागी बनब सोहंतगर हएत?

अनेको राजनीतिक चिन्तकक चिन्तन हीरालाल पढ़बे टा नहि केलैन, मनन-चिन्तन सेहो केलैन। आने जकाँ हीरालालो अपन पितृ-पितराइनिक अतीतमे भरमए लगला। ऐठाम 'भरमव' शब्दक माने घुमब-फीरब, भ्रमण करब अछि। गामक स्कूलमे जे हीरालाल पढ़लैन-सुनलैन, जे मनुक्खक जीवन झूठ बजैले नहि भेटल अछि ओ भेटल अछि सत् बजैले आ सत्त काज करैले सेहो। जखने से हएत तखने ने सकारात्मक सोचो आ सकारात्मक काजोक समत्व रूप बनत, से विचार अखनो ओहिना हीरालालक मनमे जीवित छैन जहिना सभक मनमे होइए। तैसंग अपन नैतिक जीवनक निर्वहन बेकतीगत रूपमे सेहो करैत एला जइसँ अपन समाजक बीच कटल-कटल रूप धारण कए हीरालाल अखन तक चलि रहला अछि।

अपन मन हीरालालकेँ मजगूती दइते छेलैन जे कालखण्डक जे समाज अछि तइमे अपनो समाज ओहिना जीवित अछि जहिना आन-आनक छैन। जीवनक सन्तुष्टि मनमे रोपि हीरालाल परिवारसँ निकैल समाज दिस डेग उठबए चाहलैन, तँ पहिल पड़ोसी–सुमन्त काका–क घर पड़ैत रहैन। एकमुँहरी मन हीरालालक बनियेँ गेल छेलैन तँए पड़ोसिया डाहकेँ महादेव जकाँ विष-अमृत सभ एक्केबेर घोंटिक ऽ पीब लेलैन।

पढ़ल-लिखल हीरालाल अतीतसँ आगू बढ़ि जखन आजुक परिवेशकेँ अंकैत सुमन्त काका ऐठाम बेरुका उखड़ाहामे पहुँचला तँ क्षुब्ध भेल बैसल सुमन्त काकाकेँ देखलैन। अपन करनीक फल मने-मन सुमन्त काका जोड़ि रहल छला। ओना, हीरालालक मनमे एहेन विचार नहि जगलैन जे सुमन्त काका अपन करनीक फल जोड़ै छैथ। किए तँ सुमन्त काकाकेँ अखनो हीरालाल ओहिना देखै छैथ, जेना चोरी करैबला चोर, झूठ बजैबला झूट्ठा, अधला काज करैबला अधला लोकसँ विपरीत जीवन धारण केनिहार होइ छैथ। सुमन्त काका, समय पेब नीककेँ नीक आ अधलाकेँ अधला कहिते छैथ। तँए हीरालालक मनमे किए उठितैन जे परिवारक कोनो कलहसँ काका क्षुब्ध छैथ। प्रणाम करैत हीरालाल बजला-

“समाजेक भागे ने आब अहाँ सभ जीब रहल छिऐ काका?”

समाजक बीच जे वैचारिक चलैन अछि तइ अनुकूल हीरालाल बाजल छला। मुदा सुमन्त काका अपन परिवारक खाधिमे तेना फँसि गेल छैथ जे अक-बक दुनू बन्न भऽ गेल छैन। ओना, अपन विचारक धारणकर्ताक रूपमे काका अपनाकेँ ठाढ़ कइये नेने छैथ मुदा जइ परिवारमे बास छैन ओइ बासक बसबैया बसौ दइन तब ने, तइले तँ समाजो चाही आ तैसंग परिवार सेहो चाही, मुदा तही परिवारमे ढनढनी लागि गेलैन जइसँ बेसीकाल परिवारमे राँउ-झाँउ होइते रहै छैन, तइसँ मन अक्कछ रहबे करै छैन। ओना, अपन बनौल जीवन-धारमे बहनिहार लोक सुमन्त काका छथिए। मुदा कानो तँ कान छी, जखने राँउ-झाँउसँ भरए लगत तखने अमूल्य समय दुइर करबे करत।

सुमन्त काका बजला-

“हीरालाल, भने कहलह जे समाजक भागे जीबै छिऐ, मुदा अपन की भाग अछि तेकर आड़ि-धूर अछिए नहि, तखन तोहीं कहह जे एहेन

समाजक भागी बनब सोहंतगर हएत?"

सुमन्त कक्काक विचारसँ हीरालालकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक परिवारमे किछु भेलैन अछि तँए मन उखड़ल सन छैन। परिवार दिस विचारकेँ मोड़ैत हीरालाल बजला-

"परिवारक सभ ठीक-ठाक छैथ किने काका?"

सुमन्त कक्काक मनक आगि, माने परिवारक प्रति, नीक जकाँ मिझाएल नहि रहैन, ओही भुमहुरक ताउमे सुमन्त काका बजला-

"बौआ हीरा! होनी हाथ धड़ा कऽ होइए, सएह हमरो भेल। अपने नीक जकाँ बुझि नहि पेलौं, कियो ओहन सहयोगी जीवनमे भेटला नहि तँए अपन बुइधिक चूक भेल।"

❑ साभार : नीक ठकान ठकेलौं, कथा संग्रह, प्रकाशन वर्ष 2021, पृष्ठ- 09-11

“दुनू दियादनी टोलमे सभसँ बुतगर जनाना रहबो करैथ। बुतगर ऐ माने मे जे जखन दुनू दियादनी अपनामे झगड़ा करैत तखन दोसरकेँ ओइ भीड़ नहि आबए दैथ, आ जखन दोसर परिवार संग झगड़ा-लड़ाइ होनि तँ दुनू दियादिनी एक बनि दोसरकेँ दाबि दैथ। जइसँ गामक सभ अबिसवासु जनाना दुनूकेँ बुझै छेलैन जइसँ दुनूक पछपोहूक कोन बात जे गपो -सप्प सुनैले गामक कियो ने तैयार रहैन।”

ओना, मन भेल जे पुछिऐन, काका जखन सौंसे टोलक लोकक दुश्मने दुनू दियादनी रहैथ, तखन किए ने सभ आगि-पानि ढाठि देलकैन। मुदा अपने मन कहलक जे जे विचार सहसलाल काका बाजि रहला अछि पहिने तेकर मर्म बुझब तखने ने मरम-जीयम बुझब। बिच्चेमे टोकारा दैत बजलौं-

“काका, अपनेक कथा तँ इतिहाससँ बेसी साहित्य जकाँ मनमे बैस रहल अछि।”

हमर विचारक सह पेब आकि अपन मनक सह पेब सहसलाल काका बजला-

“वएह, माने कुरीतेलालक दुनू पुतोहु, अधडरेरपर सँ माने कुरीतलालक डाँर लगसँ काटि दुनू दियादनी बँटवारा कऽ लेलकैन। ”

बाबा मुँहक, माने सहसलाल कक्काक बाबा मुँहक, सुनल विचार अन्त होइते बजलौं- “काका, एकटा विचार मनमे बड़ी कालसँ घुरिया रहल अछि जे अपने की हलैल गेलौं?”

मनिहारा दोकान जकाँ सहसलाल कक्काक अपनौं मनमे दोकान छैन्हे। तँए पुरजा-पुरजी तकैमे कनी देरी लगबे केलैन। लगबो केना ने करितैन, कोनो कि कनियेँटा दुनियाँ अछि जे लगले सभ किछु नापि लेब आकि भेट जाएत। लगले सुनब जे अमेरिकासँ भारत (खेलमे) जीत गेल आ लगले सुनब जे एते करजा भारत अमेरिकासँ लेलक। जहिना नमहर दोकानदार नमहर सौदाकेँ सरियाकऽ रखैक नीक (नमहर) लुरियो बनौने रहै छैथ तहिना सहसलाल काकाकेँ सेहो छैन्हे। विचार तँ विचारक जहिना ताला छी, तहिना कुंजी सेहो छीहे। जइसँ रंग-रंगक तालो अछि आ रंग-रंगक कुंजीयो तँ जीवनक अछिए। अपन जीवन, माने पारिवारिक जीवन, केँ अँकैत सहसलाल काका बजला- “जुगे, ऐगला जिनगी सेहो कनी धकिया गेल आ अखुनका तँ सहजे तीन मासक मेहनत सोल्होअना मरि गेल।”

❑ साभार : की सत्त की फुइस? शीर्षक कथासँ...

काका, जानियेंकऽ ते पाइनिक कारोबार करै छी। आइये नहि, सभ दिनसँ अपन मिथिला बाढ़ि-रौदीक इलाका रहल अछि, तैठाम जहिना रौदी खतरा अछि तहिना दाही खतरा सेहो अछिए। तही बीचमे ने अपनो चलैक अछि आ अपन कारोबारकेँ सेहो चलबैक अछि।

"काका, बीतल डेढ़ मासक बीचक सभ काज उघारि कऽ कहि दइ छी। गप-सप्पमे लोक छअकेँ पाँच आ पाँचकेँ छअ कहि छक्का-पंजा करैए मुदा काजक अपन जीवनक पैमाना छै, जइक बीचमे झूठक समावेश नहि अछि।"

छक्कालालक विचार सुनि मन मानि गेल जे एहेन विचार लोककेँ अपन जीवन दइ छइ। ओना, छक्कालालक अपन जीवनक अनेको रूप अछि, से अछि दुनियाँकेँ देखबइयोले आ कहिकऽ बुझबैयोले। मुदा जेहेन विचार छक्कालाल बाजल अछि ओ निश्चित रूपसँ कोनो कर्मनिष्टक विचार छी। एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे छक्कालालोक ओहन रूप होइ। बजलौं-

"छक्कालाल, मनमे जे बजैक वेग उठए तँ ओकरा बाजिकऽ शान्त कऽ ली, नहि तँ वएह वेग जनमारा सेहो भऽ जाइए।"

छक्कालाल बाजल-

"काका, की कहब! बरखा शुरू भेला चारि दिनक पछाइत पोखैरमे कटनिया लगि गेल। बुझले अछि जे सोलहटा पोखैर अपने जोतै छी। चारिम दिन, माने बरखा शुरू होइसँ चारिम दिनक बर्खाक पछाइत, सँ सुतब (आराम करब) हराम भऽ गेल। भरि-भरि राति दुनू बापूत, ऐ

पोखैरसँ ओइ पोखैर दौड़-बरहा करिते रहलौं। तैयो दूटा पोखरिक माछ उजहि गेल। पछाइत उजाहिक ढबाहि लगि गेल आ उजहैत-उजहैत बारहटा पोखरिक माछ उजहि गेल।"

छक्कालालक बात सुनि मने-मन हिसाब लगेलौं तँ बुझि पड़ल जे बारहअना, माने तीन चौथाइ, पोखरिक सम्पैत नष्ट भऽ गेलइ। जइसँ मनमे कचोट आएल, मुदा उपाइये की अछि। शान्त सम्मत विचार दैत बजलौं-

"छक्कालाल! दुनियाँमे किछु अछि , किछु ने अछि। कहैले सभ किछु अछि मुदा अछि बहुरूपिया, ने अपने थीर रहत आ ने दोसरकेँ रहए दइए। जीवन छी, अहिना होइत आबि रहल अछि।"

कलुषित मने छक्कालाल बाजल-

"काका, अहाँसँ लाथ की करब। सोलहटा पोखैरमे दूटा गामक किसानक पोखैर आ दूटा सैरातक पोखैरमे माछ बँचल अछि बाँकी सभ बेरवाद भऽ गेल.!"

अपने तँ जीवनमे कहियो माछ-मखानक कारोबार केने नहि छी, तँए अनुभुआर छीहे। बजलौं -

"आब की उपाय करबह?"

जेना छक्कालालक ओहने धाँगल जीवन होइ तहिना बाजल-

"काका, जानियेँकऽ ते पाइनिक कारोबार करै छी। आइये नहि, सभ दिनसँ अपन मिथिला बाढ़ि-रौदीक इलाका रहल अछि, तैठाम जहिना रौदी खतरा अछि तहिना दाही खतरा सेहो अछिए। तही बीचमे ने अपनो चलैक अछि आ अपन कारोबारकेँ सेहो चलबैक अछि।"

छक्कालालक विचार नीक लागल। बजलौं -

"हँ, से तँ चलैयेक अछि।"

छक्कालाल बाजल-

“सैरातबला पोखैरकेँ तँ सुढ़िया लेब। चारिटा पोखैर बँचल अछि, तइसँ अपनो गुजर कऽ लेब। मुदा गमैया पोखरिक झमेल अछि। किए तँ रौदी-दाहीक जिम्मा अपने ऊपर नेने छी।”

मन कहलक अनेरे किए छक्कालालक ओहन क्लूकेँ निकालब जइसँ बेचाराकेँ परेशानी बढ़त। बजलौं -

“नीक जकाँ सभ काज सलटिया जेतह किने?”

हँसैत छक्कालाल बाजल-

“भरि दिन मोटर साइकिल ओहिना दौड़बै छी।”

❑ **साभार : ‘कुभाँज समयक भाँजमे’ कथासँ**

समाजोक तँ एहेन रूप बनियेँ गेल अछि जे बरो-बिमारीक
अवस्थामे, जैठाम सभ तरहक मदैतिक जरूरतक होइ छै
तहूठाम, जखन एककेँ दोसर ठाढ़ नहि होइए तखन बाजिये
कऽ की हएत। मुदा लगले मनमे ईहो उठए जे अपने जे
बगुला जकाँ किदैनपर सोल्होअना टक दुनियेँपर लगौने छी
आ अपने दुनियाँकेँ की केलिऐ तेकर कोनो ठेकाने ने। यएह
विचार ने कृष्ण अर्जुनकेँ नहि कहि फलक आशा छोड़ि दइले
कहलैन। गाछ-बिरीछ आकि माल-जाल अपन सेवा
लेलहाक बदला, माने काजक फल, दइते अछि
तैठाम मनुक्खो तँ मनुक्ख छीहे, एकक
बदला दस दइले तैयार अछि।

"आब तँ नोकरियो लगिचाइये गेल हेतह?"

विकास बाजल-

"तेहने सन।"

विकासक विचारसँ बुझि पड़ल जे थाल महक गैंचियो माछसँ बेसी पिछराह अछि। रहैए थालमे मुदा पानियोक माछक सुआदसँ अपन नीक सुआद चोरा कऽ रखने अछि। बजलौं -

"तेहने सनक, माने?"

सौंस मनक विचार ने सक्कत होइए मुदा अधखिल्लू, अधपक्क आकि काँच-कोंचिल थोड़े सक्कत भऽ सकैए। हिया हारि विकास बाजल -

"जीवनक अजीब खेलमे पड़ि गेलौं भाय।"

जीवन तँ अपने अजीब अछि, तैठाम अजीबमे की अजीब भेल आकि सजीव भेल? तहूमे 'तमाशा' नहि भेल 'खेल' भेल.! अनेको विचार

मनमे जगि गेल। फेर अपने मनमे उठल- जखन जिज्ञासा करैक विचारसँ विकास ऐठाम एलौं अछि तखन किए ने विकासेक अनुकूल अपनो जिज्ञासा करी। बजलौं-

"की जीवनक अजीब खेल, विकास?"

अपन प्रश्न सुनि विकास ततमताए लगल। मनमे उठलै जे सुपुट मुहेँ अपन जिनगीक चूक बाजी आकि ओइमे कल-छप्पन करी। कारण दुनूक बनैए। समाजोक तँ एहेन रूप ब नियैँ गेल अछि जे बरो-बिमारीक अवस्थामे, जैठाम सभ तरहक मदैतिक जरूरतक होइ छै तहूठाम, जखन एककेँ दोसर ठाढ़ नहि होइए तखन बाजिये कऽ की हएत। मुदा लगले मनमे ईहो उठए जे अपने जे बगुला जकाँ किदैनपर सोल्होअना टक दुनियैँपर लगौने छी आ अपने दुनियाँकेँ की केलिऐ तेकर कोनो ठे काने ने। यएह विचार ने कृष्ण अर्जुनकेँ नहि कहि फलक आशा छोड़ि दइले कहलैन। गाछ-बिरीछ आकि माल-जाल अपन सेवा लेलहाक बदला, माने काजक फल, दइते अछि तैठाम मनुक्खो तँ मनुक्ख छीहे, एकक बदला दस दइले तैयार अछि। तेतबे किए, तहूसँ बेसी ओहनो दाता दिगंबर (दिक्+अम्बर) तँ छथिए जे देबेटा जनै छैथ आ लइक खगता रखनहि नहि छैथ। खाएर जेतए जे अछि, तेतए से अछि, ऐठाम तँ अपन आ विकासक बात अछि।

एकाएक विकासक मनमे ठनका जकाँ चेतौनी चेत खसल। जइसँ मनमे आशाक आश जागल। विकास बाजल-

"जीवन भाय, आबो जँ मुँह चोराकऽ राखब तँ ओ चोराएलक चोराएले रहि जाएत, मुदा जँ बाजि देब तँ एते आशा कएले जा सकैए ने जे एहेन परिस्थितिमे पड़ल चेत जाइथ।"

विकासक विचार सुनि अपनो मनमे ठाँहि-दे लागल जे जखन दुनियाँ असथिर रहैबला नहि, ओ गतिशील अछि। जैठाम पहाड़ अछि तैठाम समुद्र बनि जाएत आ जैठाम समुद्र अछि तैठाम पहाड़ बनि जाएत,

तैठाम मनुक्ख आ मनुक्खक काज केते थीर रहत.? बजलौं-

“विकास भाय, आब अपना सभक उमेर ओहन भइये गेल अछि, जे आमे कि जामुने गाछक शीलकैं चारि गोरेसँ कन्हापर सांगि लगा उठाएब, मुदा एते तँ अछिए ने जे साइठ-एकसइठ बर्खक एक जीवन धारमे बहैत आबि रहल छी। ओ केते नीक रहल आकि अधला रहल, तइसँ तँ ऐगला पीढ़ी परिचित भइये जाएत किने।”

हमर विचार सुनि विकासक मन उजगुजा गेल। उजगुजाइक कारण भेलै जे अपन बात पहिने बाजी आकि समाजक बाजी, तैसंग ईहो उठि गेलै जे तीन पीढ़ीक बीच अपन जीवन रहल अछि, पिताक समय की रहल, अपन केहेन रहल आ आब जे अन्तिम अवस्थामे एलौं तँ ऐगला पीढ़ीक संग केहेन रहत? ..सामंजस करैत विकास बाजल-

“जीवन भाय, साइठ सालक जिनगी पानि-झाड़सँ लऽ कऽ बोन-झाड़ तकक बीतल अछि, तँए लत्ती जकाँ जीवनक अनेको मुँह-कान भइये गेल अछि। ताड़क गाछ जकाँ एकमुहाँ तँ रहल नहि, तँए सेरियाकऽ बजैमे ओझरी अछिए।”

मनक बात आ मुँहक बातक बीच जे दूरी विकासक मनमे उठि गेल, तेकरा सोझड़बैत बजलौं-

“विकास भाय, जेना-जेना मनमे उठैत जाइ छह तेना-तेना बजैत चलह। से ताबत धरि बाजह जाबत धरि पेटक सभ बात नहि सठि जाह। देखिते छहक जे तेहेन समय भऽ गेल अछि जे दिन कटने ने कटाइए, निचेने छी, बाजह।”

ओना, आने जकाँ विकासोक मनमे उठल जे जहिना सभ अपन अतीतेक विचार भरि दिन करैए तहिना अपने पिते लगसँ बाजी, मुदा लगले अपने मन रोकलकैन जे जँ पिताकैं स्मरण करिऐन आ पुत्रकैं छोड़ि

दिऐ सेहो नीक नहि हएत। फेर अपने मन रोकैत कहलकैन जे जखन पिते-पुत्रक विचारक बीच रहि जाएब तखन अपने जे सेवा निवृत्त हेबाकाल कलंकक मोटरी नेने ऐ अवस्थामे पहुँच गेल छी.? से कहिया विचार करब। ओना, विकासक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे आरो चारि गोटाकेँ बजा अपन सभ बात कहि, अपन उद्धारक विचार करी, मुदा मुद्दो तँ मुद्दा छी। विकासक मन घुरिया गेलैन। बजला-

“जीवन भाय, की पहिने बाजी आ की पछाइत, से विचारे ने बनि रहल अछि..!”

बजलौं- “विकास भाय! कोनो कारबारक घूस, कारबार होइसँ पहिने जाबीरेटा बुझैए, मुदा कारबारक पछाइत सभ बुझैए। जखन सभ बुझैए तखन तँ अपनो मानए पड़त ने जे फल्लाँठाम चूक भेल कि गलती भेल, आकि लोभमे पड़ि जिनगीकेँ मरनीक घाट चढ़ा देलौं।”

हमर बात जेना विकासकेँ बज्रवाण जकाँ छातीमे लगलैन जइसँ हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन। सुपुट मुहेँ बाजल-

“जीवन भाय, बिनु कहनौं अहाँ देखिये रहल छी, तइ बीच अपने अपनाकेँ छिपाबी से मन नहि मानि रहल अछि।”

❑ **साभार : ‘अजीब खेल’ कथासँ...**

गामक बीच, माने गामक लोकक बीच, एते अधिक मुहाँ-फुल्ली भऽ गेल जे लगक लोक रहितो, माने एकठाम घर रहितो बाजा-भुकी बन्न भऽ गेल। विचारधाराक प्रभावसँ जँ गप-सप्प हेबो करैत तँ झगड़े-झंझट भऽ जाइत। जखने बाजब-भूकब बन्न भेल तखने लेन-देन, पैंच-पालट सभ प्रभावित भेल, जइसँ समाजकेँ चलैमे असोकर्ज हुअ लगल।

पूर्वमे जे जमीन्दारक प्रभाव छेलैन, ओहो समाप्त भऽ गेल। किए तँ बुझले अछि जे 'खाया-पीया धोया हाथ, तेरा-मेरा कोन साथ।'

समाजक विचारधारापर प्रभाव पड़ल। जइसँ एक्के-दुइये लोकक मुहसँ निकलैत समाजक अधिकांश लोकक मुहसँ निकलए लगलैन जे जमीन आ जमीन्दार लऽ कऽ एते दिन समाजमे झगड़ा छल, मुदा से तँ आब रहल नहि, तँए जइ दिनक जे दोख छल से भेल आब सभकियो समाजक एक-इकाइक रूपमे अपन-अपन सहयोग करू। नीक विचार, तँए गामक विचारधारामे एकरूपता बनल। एक शब्दमे सभ कियो अपन-अपन सहमति जतौलैन जे एक समाज छी तँए एक बनि रहबे कल्याण हएत। ओना, मंगलदेवो आ रामकिसुनो अपन दलक बीच, माने साम्यवादी दलक बीच, सहमत बनाइये लेने छला जे समझौता भऽ जाए। मुदा बीचमे जे बाधा छल ओ छल जे तेरहटा ओहन मुकदमा जे तीस सालसँ कोर्टमे लटकल छल, बिना तेकरा हल केने समाजमे समझौता केना हएत। हँ एकटा एहनो भऽ सकैए जे समानो रूपमे आकि कनी

कमियोँ-बेसी कोर्टक मुकदमाक रहल तँ मुकदमाक वजन देखि समझौता कएल जा सकैए, मुदा से तँ कमलपुरमे छल नहि। छल ई जे एक पार्टी, साम्यवादी दल, एकतरफा मुद्दालह छला आ दोसर पार्टी एकतरफा मुदई। मुदा तैयो सभ सहमत जतौलैन जे एक शर्त्तपर समझौता कऽ लेब। ओ शर्त्त ई जे समाजक बीचक विवाद छी, तँए समाज अपने बीच बैस निराकरण कऽ लैथ तँ सभसँ नीक। मुदा तइमे पंच ओहन होथि जे कोनो झंझट वा केस-मुकदमामे संलग्न नहि रहल होइथ। सौंसे गाममे तँ सहमत बनि गेल मुदा जखन ओहन लोकक ताक-हेर भेल तखन एक्को गोटा ओहन नहि भेटला जे कोनो-ने-कोनो दलसँ जुड़ल नहि छला।

भोगेन्द्रजीक बीच समझौताक (आपसी समझौताक) विचार भेल छल किए तँ भोगेन्द्रजी कार्यक्रममे कमलपुर आएल छला, जखन वापस जाए लगला तखन विरोधी पार्टी माने दोसर पार्टीक दर्जनो लोक आबि कऽ कहलकैन जे 'जहिया जे भेल से भेल, अपने जे कहबै हम सभ तैयार छी।' अपन विचार भोगेन्द्रजी दऽ देलखिन जे सभकियो एकठाम बैस मिलि-जुलि विवादकेँ अन्त करू। तेकर पछाइत भोगेन्द्रजी बेर-बेर तगेदा सेहो करए लगला जे की भेल?

बटाइदारीक पीठेपर सूदखोरीक आन्दोलन सेहो चलि रहल छल। गामक पनचानबे प्रतिशत लोक ओहन छला जे अन्न-पानि हुअए आकि रूपैया-पैसा, कर्जक तरमे छेलाहे। जमीन्दारे मालिक जकाँ महाजन मालिक सेहो छेलाहे। तैबीच कानूनी बात भोगेन्द्रजीक मुहसँ सभ सुनियेँ चुकल छला जे केतबो दिनक कर्ज किए ने हुअए, दोबरसँ बेसी नहि लेल जा सकैए। तँए सभक मनमे बिसवास बनले छेलैन। महाजनक कर्ज वापस करब समाजक सभ रोकनहि छला। ओना, छिट-फुट घटना माने पकड़-धकड़, गारि-गरौऐल अनेको भेल, मुदा सामुहिक रूपमे एको दिन नहि भेल।

मधुबनी जिला बनि चुकल छल। नित्यानन्द बाबू डी.एम. छला। विधिवत लखनौर ब्लौक काज शुरू नहि केने छल। अट्ठाइसो पंचायतिक ब्लौक मधेपुर छल। कमलपुरमे बी.डी.सी.क बैसारक कार्यक्रम बनल। नित्याबाबू अपने सेहो एला। कार्यक्रमक दौड़मे महाजनीक चर्च करैत बैंकक चर्च करैत ऋृण-मुक्तिक प्रमाणपत्र सेहो बाँटि देलखिन।

कम्मे कर्जदारकेँ प्रमाणपत्र भेटलैन, आम कर्जदारकेँ नहियेँ भेटलैन। मुदा एते तँ भेबे कएल जे ओहन कर्जदारकेँ प्रमाणपत्र भेटलैन जिनका ऊपर कर्जक भारी मोटा छेलैन। महाजनो सभ अपन हिसाब जोड़िकऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे बारहअना, माने तीन-चौंथाइ, कर्ज तँ जाइये रहल अछि, अपन कारोबारमे ढील देलैन। तैबीच एकटा महाजन छला, ओ मरि गेला आ परिवारमे चारि भाँइक भैयारीमे भिन-भिनौज भऽ गेलैन। चारू भैयारीक समांग सभ ओहन छला जे या तँ नौकरी करै छला वा अपन कारोबार करै छला। नमहर महाजनक महाजनी बन्न भेने छोट-छोट महाजनी-करोबारी जे छला ओ भरमे-सरम अपन हाथ-पएर समेटि लेलैन। ओना गामक ई स्थिति बनि चुकल छल जे कोनो परिवारमे कन्यादान हुअ आकि मृत्युक श्राद्ध-कर्म, बिना कर्ज लेने काज चलि नहि सकै छेलैन। गामक जे नवयुवक सभ छला ओ अपन जीवनकेँ अपना बले ठाढ़ करैक पाछू जी-जान लगा देलैन। जइसँ छोट-मोट कारोबार आ खेतियोक रंग बदलल। गामक स्थितिमे दिनानुदिन सुधार हुअ लगल।

❑ **साभार : अन्तिम क्षण, उपन्यास 2021,**

पृष्ठ संख्या- 52-54

“कौल्हुका गाड़ीसँ हमरा राँची पहुँचा कऽ अ हाँ घुमि जाएब। अहाँ नोकरी करै छी तँए छुट्टी कटत, दरमाहा कटत। मुदा ओइठाम पहुँचला पछाइत तँ अपन चसमसँ सभ किछु देखबै। नै जरूरत पड़तैन जिगेसा भेल, जरूरत पड़तैन रहि कऽ सेवा करबैन।”

पुतोहुक बात मुनेसरक मनकेँ खोड़ि देलकैन। विचारए लगला जे केना कएल जाए। ओना, अपन अंगीते डॉक्टर छैथ। ओहो जनै छैथ आ हमहूँ जनै छिऐन मुदा सोझहा-सोझही गप-सप्प नै भेने चेहरासँ ने ओ चिन्है छैथ आ ने हम चिन्है छिऐन। मुदा लगले मनमे द्वन्द्व ठाढ़ भऽ गेलैन। एक मन कहए लगलैन जे जखन समांग डॉक्टर छैथ तखन नीक काज किए ने हएत। दोसर कहैन जे जखन पाइयेक खेल-तमाशा अछि तखन परिचय दऽ कऽ अपन प्रतिष्ठा किए गमाएब। प्रतिष्ठो तँ प्रतिष्ठा छी। सासु-ससुर जँ भीखो मांगि खेती आ जँ बेटी-जमाइक दरबज्जापर हाथीए रहतैन तँ केना हाथ पसारती। मुदा सम्पैत सम्पैत छी जे भोज्य पदार्थ छी किन्तु प्रतिष्ठो सएह छी। खाएर जे हौउ, मुनेसर विचार केलैन जे एक शिक्षकक रूपमे अपन परिचय देबैन। गाम-घरक कोनो चर्च नै करब। मन ठमकलैन, उत्साह जगलैन, काल्हि निसचित डॉक्टर ऐठाम जेबे करब। मुदा जाइसँ पहिने नीक हएत जे अस्पतालोक बेवस्था देखि लिऐ आ प्राइवेटो सभकेँ देखि ली।

आँखिक देखलकेँ मनो मानै छइ। बिनु देखलमे एहनो भऽ सकैए जे औगताइमे अधले भऽ जाए। पछाइत जँ बुझैमे एबो करत, ता काजे हूसि गेल रहत।

दोसर दिन सबेरे आठ बजे मुनेसर टेम्पू पकैड़ अस्पताल पहुँचला। रोगी-वार्ड सभमे जा-जा देखलैन तँ मन मानि गेलैन जे प्राइवेटेमे इलाज

कराएब नीक। ओना, हड्डियो रोगक केते डॉक्टर छैथ, मुदा तइमे नीक के छैथ? भाँज लगबैत-लगबैत भाँज लगलैन जे डॉक्टर शेखर नीक छैथ। मुदा छिया तँ अंगीत। पाइबला सबहक सोभावो बदैल जाइ छइ। केतबो लगक किए ने हुअए, पाँच प्रतिशत छोड़ि कऽ, मने-मन बाजिए देता जे जेते-हेराएल-भोथियाएल रहैए, धरमशाला बुझैए। तँए नीक जे जखन चेहराक चिन्हारए नै अछि तखन भषो तँ दूरी बनैबते छइ।

वार्ड सभ देखि-सुनि मुनेसर ऑफिसक आगू पहुँचबे केलाह आकि डॉक्टर शेखर गाड़ीसँ उतैर ऑफिसमे प्रवेश केलैन। संयोग नीक बुझि मुनेसरो कनियेँ अँटैक कऽ पाछूसँ ऑफिस पहुँचला। कुरसीपर बैसैत पुछलखिन-

“डॉक्टर साहब, अस्पताल अच्छा होगा कि प्राइवेट?”

डॉक्टर शेखर-

“अच्छा दोनो है। हमहीं लोग ने दोनो जगह हैं। रही बात देख -रेख की, यहाँ हम स्टाफ को कह सकते हैं, दवाब नहीं दे सकते हैं। लेकिन प्राइवेट की दूसरी बात है।”

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प शुरूहे भेल छेलैन आकि मुनेसरक पिसियौत भातीज माने डॉक्टर शेखरक सार, ऑफिस पहुँचला। मुनेसरकेँ देखिते गोड़ लागि पुछलकैन-

“काका, केमहर-केमहर आएल छी?”

मुनेसर-

“कलपर बहिन खसि पड़ली से डाँड़मे कज्जी भऽ गेल छैन सएह एलौं जे नीक अस्पताल हएत आकि प्राइवेट।”

डॉक्टर शेखरक सार-देवेन्द्रक संग मुनेसरक बीच सम्बन्धकेँ अँकैत डॉक्टर शेखर मुँह खोललैन-

“अपने पलामूमे कार्यरत छिऐ?”

मुनेसर-

“छेलिऐ। आब सेवा-निवृत भऽ गेलौं।”

जहिना डॉक्टर शेखर मुनेसरक सम्बन्धमे बहुत बात जनै छैथ तहिना मुनेसर सेहो डॉक्टर शेखरक सम्बन्धमे जनिते छैथ। मुदा पनरह साल पहिने जे शेखरक बिआह भेलैन तइमे मुनेसरकेँ रहनौं चेहराक चिन - पहचिन नै भेल रहैन।

..जहिना कोनो पोथी पढ़ैक जिज्ञासुकेँ अनायास कोनो समांगक माध्यमसँ एने मनक पोटरी अपने खुजि जाइत तहिना डॉक्टर शेखरोकेँ भेल छेलैन। होइक कारण भेलैन जे बिआहक पद्धति मोन पड़ि गेलैन। मोन पड़ि गेलैन पत्नीक पिताक मात्रिक नीक कुल-मूल। अपनसँ पैघ। ओना, पैघ-छोटक बीच वैवाहिक सम्बन्ध पुरान अछि मुदा ऐठाम दोसर भेल। ऐठाम भेल अर्थक कारण। उदार पिता बेटीक सुख-सुविधा (आर्थिक) देखि अपन विचार सुधार केने रहैथ। मोन पड़लैन सुलोचना दीदीक जिनगी। केना नैहर-सासुरमे ठोकरौल गेल छैथ। एहेन जगहपर जँ मानवीय विचार प्रतिपादित नै करब तँ हमरा विचारक कोनो मोल नहि।

मनमे विचार फुटिते डॉक्टर शेखर, देवेन्द्रकेँ कहलखिन- “चाचाजी एला अछि आ अहाँ बैसल गप-सप्प करै छी।”

❑ साभार : बड़की बहिन, उपन्यास- 2013, पृष्ठ संख्या- 107-110

“जखन दुनियाँ छोड़िये रहल छी तखन किए ने अन्तिम बात कहिए दिऐ जे, भाय जे केलियह से खेलियह, किछु जमा तँ रहल नहि, जे देने जेबह। एकरा गलती बुझि छोड़ि दाए आकि जवाबदेही बुझि द्वारिका छाप दऽ दाए।”

मैट्रीक परीक्षासँ तीन मास पूर्ब कोठरीमे बैस राधामोहन अपन दिन-दुनियाँक सम्बन्धमे सोचैत रहए। ओना , परीक्षाक तैयारी-ले बैस कऽ पढ़ैत रहए मुदा किछु कालक पछाइत, जखन पढ़ैसँ मन उचैट गेलै, अनायास जिनगीक बात मनमे उठलै। परीक्षाक फारम भरला पछाइत स्कूल आएब-जाएब बन्न भऽ गेल छेलइ।

राधामोहनक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा उठै बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ जे उठै आ फुटि जाइ। कोनो असथिर विचार ने मनमे उठै आ ने अँटकैत रहइ। कोनो विचारकेँ ने ठीकसँ पकैड़ पबैत आ ने सोचि पबैत। किछु कालक पछाइत मनकेँ असथिर कऽ अपन भूत-भविसपर नजैर अँटका गौर करए लगल तँ तीन तरहक विचार अभरलै। ओ ई जे अखन धरि साले-साल स्कूलक परीक्षा स्कूलेमे होइतो रहल आ आगूओ बढ़ैत गेल। मुदा आब तँ से नै हएत। सरकारी देख-रेखमे परीक्षो हएत आ रिजल्टो निकलत। जँ फेल करब तँ दोहरा कऽ फेर ऐगला साल परीक्षा दिअ पड़त आ जँ पास करब तँ आगू..? आगू तँ पढ़ि नै पएब। जँ पढ़ि नै पएब तखन की करब?

साधारण चारि बीघा जमीनबला परिवारक राधामोहन। चारि बीघा माने अस्सी कट्ठा। अस्सी कट्ठाक माने सोलह साए धूर। ओना, दुनियाँक मानचित्रमे भिन्न-भिन्न देश आ भिन्न-भिन्न जमीनक महत अछि। जँ

जापानक बेस किमती तँ साइबेरियाक से नहि। मुदा मनुख तँ दुनूठाम ऐछे आ रहबे करत। खाएर जे हौउ, ने जापानक चर्च भऽ रहल अछि आ ने साइबेरियाक। चर्च तँ मिथिलांचलक भऽ रहल अछि तँए मिथिलांचलक जमीन देखए पड़त। सबहक जिनगियो सभ रंगक अछि।

पैंतालीस बर्ख अबिते-अबिते राधामोहनक पिता नन्दलाल पूर्ण रोगी बनि चुकल छला। तीन बर्ख पूर्व धरिक जिनगी जखन नन्दलालक मनमे आबैन तँ अपनो नै बिसवास होनि जे हमहूँ जोड़ा बरदबला किसान छेलौं, आ मस्तीक किसानी जिनगी बितबै छेलौं..! जइ साल सुभ्यस्त समय होइ छेलै तइ साल जेहने घरक कोठी भरै छल तेहने पोखैरक महारपर नारक टाल लगबै छेलौं। मुदा आब ओहन दिन -दुनियाँ थोड़े देखब। अछैते खेत रहितो थोड़े हएत। करबो के करत, जखन केनिहारे नै तखन हएत केना। दुनियाँक माटि -पानि तँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहत। मुदा जइ समय जेहेन मनुख रहत तइ समय दुनियाँक रंगो -रूप तँ ओहने रहत किने...।

जाधैर नन्दलालक शरीरमे रोगक आगमन नै भेल छेलैन तइसँ पूर्व दुनू परानी अपन खेत-पथारमे, कहियो गरदामे तँ कहियो थालमे लेटाइत रहै छला। काजक एहेन सूत्र बनल छेलैन जे आगू-पाछू सोचै-विचारैक बात मनमे उठबे ने करैन। ओना, साले-साल बरहम स्थानक भागवतमे कातिक मास सुनै छला जे 'जिनगी क्षणभंगुर छी, तँए समयकेँ बिना गमौने समरपित भऽ किछु कऽ ली।'

..मुदा से भागवते धरि रहि जाइ छेलैन। भरि पेट भोजन भेटिए जाइ छेलैन तँए ने घटबी बाट मनमे उठै छेलैन आ ने दुआर-दरबज्जा भरल देखै छला जइसँ बढ़ती बात उठै छेलैन। भागवतोकेँ धर्मस्थानक धर्मक बात बुझि घर्मस्थानमे सुनि लइ छला। गामपर अबिते घरक चक्कीमे जुटि जाइ छला। अपन खेत, अपने केनिहार तँए अपना मनोनुकूल खेती-गिरहस्ती करै छला। जइ वस्तुक जेते जरुरत अछि,

पहिने ओते पुरा लेब तखने ने अनका दिस ताकब। जँ से नइ तँ आँखिक खच्चरपन्नीसँ अनके सभ किछु देखैत रहब आ अपन देखबे ने करब।

नन्दलालक विशाल रूप जहिना बुधनी देखै छेली तहिना बुधनीक विशाल रूप नन्दलाल देखै छला। कोठरीक राधा-रानीक जिनगी नहि, विशाल दुनियाँक मंचपर नट-नटी बनि दुनू-परानी कखनो खेतक गोला कोदारिसँ फोड़ैत, तँ कखनो संग मिलि धान रोपैत। तहिना, कखनो माल-जालक थइर-गोबर करैत, तँ कखनो इच्छानुसार खाइ-पीबैक ओरियान करैत। जिनगीक लीला तँए लजाइ-धकाइक कोनो प्रश्ने नहि।

तीन सालक बीच नन्दलाल तेना रोगा गेला जे मन मानि लेलकैन 'आब नै जीब! चल-चलौक बाटपर आबि गेलौं!' ..मुदा एते दिन तँ अही समाजमे समाज बनि जिनगी गुदस केलौं , जँ किछु अनकर नै केलिऐ, तँ केकरो भारो तँ नहियेँ बनलिऐ। मेहक बरद जकाँ किसानक संग खेत-पथारमे बहबे केलिऐ। तैबीच ठेहुनक गीरह कचैक उठलैन। कचैक एतेक जोरसँ उठलैन जे बुझि पड़लैन सौंसे देहक बुत्ताकेँ छिन्न-भिन्न कऽ देत। मुदा ई तँ भेल देहक रोग, मनकेँ तइसँ कोन मतलब। ओकर तँ अपन सभ किछु छइ। मुदा शरीरक पीड़ाक कष्ट तँ मनोकेँ प्रभावित कैये देने रहैन। पीड़ाएल मन आ शरीरक बेथा देखि नन्दलाल अपन बोरिया-विस्तरकेँ हाँइ-हाँइ समटैत बुदबुदेला-

"जखन दुनियाँ छोड़िये रहल छी तखन किए ने अन्तिम बात कहिए दिऐ जे, भाय जे केलियह से खेलियह, किछु जमा तँ रहल नहि, जे देने जेबह। एकरा गलती बुझि छोड़ि दाए आकि जवाबदेही बुझि द्वारिका छाप दऽ दाए।"

❑ साभार : नै धाड़ैए, उपन्यास- 2013, पृष्ठ संख्या- 07-11

“विचारचन, जखने मनुक्ख समयक संग अपनाकेँ बान्हि लेत तखने ओकर दरिद्राक आधा बेड़ा पार भऽ जेतइ, बँचल अधे बेड़ा पार करैमे ने जीवन संघर्ष करए पड़तै।”

“की करब आ की नइ करब से हम अपन परिवारमे अपने ने करब आकि केकरो कहने करब। जँ एतबो स्वतंत्र अपन परिवारकेँ नहि बना सकलौं तँ कि गामे घिनबैले जनम नेने छी।”

विचारचनक विचार सुनि सावित्रीकेँ मोन पड़लैन छह मास पूर्वक विचार, पतिक संग रघुनाथक प्रति विद्यालय प्रवेश करेबाक संकल्प। परिवारक एक अंग ओहिना टुटिकऽ खसि पड़ल जहिना कोनो घरक एकटा कोण टुटिकऽ खसैए, तँए लोक ओइमे रहब थोड़े छोड़ि दइए। पतिक संग कएल संकल्पपर सावित्री विचारए लगली। अपने किछु छी मुदा छी तँ रघुनाथक माइये किने। रघुनाथ बपटुग्गर भऽ गेल मुदा माता-पिताक संयुक्त सीमेपर ने बेटा-बेटी रहैए, तैठाम आधा दायित्व तँ निमाहिते छेलौं, आधा ओहन दायित्व कपारपर चढ़ि गेल जेकरा नइ केने पार नहि भऽ सकै छी। मास दिनक पछाइत काल्हि कने मन चैन भेल। तइ बिच्चेमे आइ भोरे बौकी दादी बेन परैस गेली जे फल्लाँक पहिल छाया छिऐन।

अखन तकक माने छह मासक भीतरक जे जीवन सावित्रीक रहलैन ओ नीक जकाँ जीवनक पाठ पढ़ा देलकैन जे चाहे डॉक्टर होथि आकि ओझा-गुणी, परिवार हुअ आकि देवालय, सभठाम अर्थेक (पाइयेक) खेल चलैए। सात मास पूर्व, जखन पति छेला तखन जेते सम्पैत छल, जइपर परिवार ठाढ़ भेल चलै छल, ओइमे केते घटबी

भेल..!

जेना-जेना सावित्री परिवार दिस तकै छेली तेना-तेना नव-नव भूरो फुटल देखि पड़ए लगलैन आ तरे-तरे मन काँपियो रहल छेलैन जे केना एहेन भूर मुनब। दिन भरि सावित्री अपने परिवारक बीच बिरहाएल रहली।

दिन ढलल, रातिक आगमन हुअ लगल कि विचारचन आबि बजला- "दोस्तीनी, अखुनके समय ने देवन भाय देने छैथ?"

अपन मजबूरी देखबैत सावित्री बजली- "हँ, से तँ समय देनहि छैथ, मुदा..?"

अपन विचार सावित्री मनेमे दाबि 'मुदा' कहि छोड़ि चुप भऽ गेली। विचारचनक उड़ल मन, उड़ल मन भेल देवनसँ निमंत्रित अतिथि जकाँ, बुझि पड़लैन, बिनु विचार केनहि बजला-

"मुदा-तुदा किछु ने, अखन चलब अछि।"

विचारचनक उत्साहित मन देखि सावित्री बजली- "मुदा, यएह जे आब अन्हार पसरत। तैबीच दुनू छोट बच्चाकेँ अ सगरे अँगनामे केना छोड़ि देबइ।"

धीपल ताबामे जहिना पापड़ तरैमे देरी नइ लगैए तहिना विचारचनक मन रहबे करैन, धाँइ-दे बजला-

"दुनू बच्चोकेँ नेने चलू।"

सएह भेल, दुनू गोरे, माने विचारचनो आ दुनू बच्चाकेँ अगुऐने सावित्री सेहो देवन ऐठाम पहुँचली। अपन नियमानुसार देवन दरबज्जापर बैसल छला। कनी फरिक्केमे विचारचन आ सावित्रीकेँ देखि देवन बजला-

"विचारचन, तोरा देखि मन बेहद खुशी भेल।"

देवनक विचारक बेहद खुशीक अर्थ विचारचन नीक जकाँ बुझबे ने केलैन। किए तँ अखन तक विचारचन खुशी आ नाखुशी दुइये टा बुझै

छैथ, तँए 'बेहद खुशी' की भेल से भाँजपर चढ़बे ने केलैन। मने-मन जखन विचार करैथ तँ 'बेहद खुशी'क माने बुझि पड़ैन खुशीक सीमा तक। मुदा लगले होनि जे 'बेहद'क माने तँ बिनु हदक सेहो ने भेल। माने ई जे जेकर आड़ि-धूर नहि अछि..! बिच्चेमे विचारचनक विचार ओझरा जाइन जे जैठाम आड़िये-धुर नहि रहत तैठाम सीमा पार की भेल? मुदा बिनु 'हँ-हूँ'क विचार केनहि विचारचन बजला-

"से की भाय सहाएब?"

जेना विचारिये कऽ देवन बाजल होथि तहिना बजला-

"विचारचन, जखने मनुक्ख समयक संग अपनाकेँ बान्हि लेत तखने ओकर दरिद्राक आधा बेड़ा पार भऽ जेतइ, बँचल अधे बेड़ा पार करैमे ने जीवन संघर्ष करए पड़तै।"

❑ साभार : संकल्प, उपन्यास- 2021, पृष्ठ संख्या- 104-106

गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल।
जइ गाममे कमिटी सक्रिय भऽ काज केलक
ओइ गामक जमीन भूमिहीनक बीच आएल,
मुदा जइ गाममे सक्रिय रूपमे काज नै भेल
ओइठाम लड़ाइक अखड़ाहा बनल अछि।
जइ भूदान आन्दोलक उदेस 'देशक छठम
हिस्सा जमीन भूमिहीनक बीच आबए'
अखनो सरकार चारि डिसमिल
बास-भूमि दइक शक्ति
नै रखने अछि।

एक दिस जमीन प्रतिष्ठाक मूल अधार बनि चुकल अछि तँ दोसर दिस राजा-रजबारक अन्त भेने मालगुजारीक शासन समाप्त होइतिक फल सोझमे आबि गेल। राजशाही अन्त भेने रसीदक माध्यमसँ औना-पौना दाममे जमीन बीकए लगल। बकास्त जमीनक लड़ाइ गाम-गाममे शुरू भेल। एक जबरदस भूखण्डमे बटाइदारी आन्दोलन- 'जे जमीनकेँ जोते-कोड़े ओ जमीनक मालिक छी'क नारा अकासमे उठल। धरती अपन जीवन-ले बलि मंगै छैथ, से भेल। सिकमी बटाइक कानून बनि लागू भेल। जेतए बटेदार तैयार भेल ओतए बटाइदारी हक भेटल। जेतए तैयार नै भेल ओतए अखनो लटकले अछि।

आम जमीन सभपर दसनामा संस्था सभ ठाढ़ हुअ लगल। स्कूल, अस्पताल बनए लगल। मनुखक मूल समस्या दिस जनमानसक नजैर

दौड़ल। जइसँ तियाग-भावनाक जन्म भेल। लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिड्ल, हाइ स्कूल धरि बनए लगल। गोटि-पँगरा कौलेजो बनल। सरकारोक धियान शिक्षा दिस बढ़ल, जइसँ पढ़ै-लिखैक वातावरण बनए लगल। तैबीच भूदान आन्दोलन सेहो शुरू भेल। दानकेँ धरम बुझि जमीन दान हुअ लगल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल। जइ गाममे कमिटी सक्रिय भऽ काज केलक ओइ गामक जमीन भूमिहीनक बीच आएल, मुदा जइ गाममे सक्रिय रूपमे काज नै भेल ओइठाम लड़ाइक अखड़ाहा बनल अछि। जइ भूदान आन्दोलक उदेस 'देशक छठम हिस्सा जमीन भूमिहीनक बीच आबए' अखनो सरकार चारि डिसमिल बास-भूमि दइक शक्ति नै रखने अछि।

गामक लोकक पड़ाइन भेने गाममे रहि खेती केनिहारकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। जमीनोक रूप बदलल। प्रतिष्ठाक वस्तु बुझल जाइबला जमीन रूपैआमे बदैल गेल। बैंकक सूदिक हिसाबसँ जमीनक उपजा बुझल जाए लगल। उपजाक अदहाबला बँटाइदारी प्रथा ढील भेल। मनखप, पट्टा, मनहुन्डा इत्यादिक जन्म भेल। पनरह किलो कट्ठा धानक उपजा आ दस-सँ-पनरह किलो कट्ठा गहुमक उपजा बँटाए लगल।

कोसी नहर आ नव-नव सड़क बनने चौक-चौराहाक संग-संग बोनिहारकेँ काजो बढ़ल। मुआबजाक रूपैआ सेहो सहायक भेल। शिक्षा मित्रक बहालीक संग एन.एच.डब्लू. सेहो किछु मदैत केलक। सड़क बनने गाड़ी-सवारीक धन्धा सेहो जन्म लेलक।

मिथिलांचलमे एक नव वर्गक जन्म भेल, किसान वर्ग। मुदा ऐ वर्गक क्षेत्र छिड़ियाएल अछि। हरित-क्रान्ति एने जमीनक, माने खेतक भाग्य चमकल। मुदा जइ रूपमे चमकबाक चाही तइ रूपमे नहि। जँ एक रूपमे चमकैत तँ जहिना कहियो मिथिला दुनियाँक गुरु मानल जाइ छल तहिना फेर प्रतिष्ठित भऽ जाइत। तइमे कमी अछि।

देशमे अखनो कम क्षेत्र अछि जइमे मिथिलांचल एते इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, साहित्यकार इत्यादि अछि। दुर्भाग्य ई जे ओ लोकैन मिथिला छोड़ि दुनियाँ भरिमे छिड़ियाएल छैथ । बाध्यतो छैन, ने कल-कारखाना अछि जे इंजीनियर ओइमे काज करता, आ ने स्वास्थ-ले समुचित जगह अछि जइमे डॉक्टर अपन अँटावेश करता। ने विज्ञानक शोध संस्था अछि जइमे वैज्ञानिक अपन चमत्कार देखौता आ ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्था अछि जइमे साहित्यकार अपन प्रतिभाकेँ निखारता।

गंगा ब्रह्मपुत्र मैदानी इलाका रहैत मिथिलांचल अनेको नदीसँ सकबेधल अछि। नदियो ओहन-ओहन उपद्रवी अछि जे इलाकाक इलाकाकेँ सदिकाल रूप बिगाड़िते रहैए। लोकक जिनगी एहेन दुब्ब र बनि गेल अछि जे जएह लोकैन मिथिलांचलमे ठाढ़ छैथ ओ धैनवादक पात्र छैथ।

किसान वर्ग बनने जातिवादक बन्हन ढील भेल। केतेको एहेन धन्धा, खेतीसँ लऽ कऽ लघु उद्योग धरि, अछि जे खास जातिक सीमामे बान्हल छल ओ टुटि कऽ कोनो धन्धा कोनो जातियेक बीच नै रहल। मुदा जहिना कोसीमे डुमल इलाका पुन: कहियो जागि चहटी रूपमे जन्म लइए आ पुन: ओइपर बसि मनुख पूर्ववत गाम बना लइए, तहिना करैक जरूरत अछि।

❑ साभार : जीवन-संघर्ष, उपन्यास 2010, पृष्ठ संख्या- 155-157

अपन जे मिथिलांचल अछि ऐ क्षेत्रमे तँ केतौ लोक
मैथिली बाजि जिनगी गूदस कऽ सकैए। मुदा जैठाम
भाषाक दूरी अछि , जीवन-शैलीक दूरी अछि तैठाम की
गिरगिट जकाँ सात बेर जिनगी बदैल सकैए? रहल बात
जीबाक उपाइक। तँ की जैठाम मनुख रहत ओइठाम कोनो
वस्तुक उत्पादनक जरूरत नै अछि? की हमरा सभकेँ शिक्षा
आकि दबाइक जरूरत नइ अछि, भोजन-वस्त्रक जरूरत
नइ अछि? मनोरंजनक जरूरत नइ अछि आकि कला-
संस्कृतिक जरूरत नइ अछि? मुदा ई के करत?
जेकर छिऐ से बोहु लऽ लऽ शहर घुमैए तँ की
सोझे सीते भूमि कहने अयोध्यासँ
राम औता?

मुदा छोड़ू दुनियाँ-जहानकेँ। अखन जे काज सोझहामे अछि पहिने तेकरा देखू...।

हँ, तँ जाधैर करिया काका आ सुन्दर काका नै पहुँचला, तैबीच एकटा आरो कहि दइ छी। राज-विराजसँ तीन कोस उत्तर धरि हमरा बाबूकेँ जजमैनका छेलैन। लोकोक धारणामे सराध-कर्मक महत बेसी छल। जइसँ आमदनियोँ नीक होइन। अखुनका जकाँ जिनगियो फल्लर नै छेलइ। लोको बेसी बिसवासू। आँखि देखा कऽ केकरो कियो बेइमानी नै करैत। जहाँ-तहाँ बाबूओ अपन समान, बरतन-कपड़ा रखि देथिन, ओना, कपड़ाक केते जरूरते परिवारमे रहै छल, जइसँ राजसी ठाढ़मे जीवन बितौलैन। जखन मुइला तखन चारू दिससँ भूत पकैड़ लेलक।

भाय कहलैन जे नोकरीए करब। अपन परिवार लऽ कऽ चलि गेला। काजे-उदममे पाहुन जकाँ अबै छैथ। दोसर, छोटजनक कहबे केलौं जे गामक फेदार मोरगंक दफेदार भऽ गेल अछि। सुनै छी जे भरि-भरि दिन नानीक सिखैलहा खिस्सा सभ मौगी सभकेँ सुनबैत रहैए। खाएर, किछु करह। हमरो तँ कपार नहियेँ चटैए। आब की भऽ गेल अछि जे अल्लापुरक सभ जाति अपने-अपने पुजबए लगल। जजमैनका घटि गेल। अल्लापुरक देखौंस सीमो -कातक गाम सभ करए लगल हेन। रहैत-रहैत पाँच गाम बँचल अछि। ओना, आब नवका जजमान- मारवाड़ी सेहो बढ़ल हेन। पाइबला पार्टी।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछलखिन- "ओ सभ अपन छोड़ि देलक?"

"अपनो धेनइ अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ वेपारी भऽ गेला। पुजेगरी कहाँ अछि। एक बेर पान खुआउ...। गामक खेल-तमाशा देखि मन कनैत रहैए मुदा तैयो जे ठोरपर पछबा लहकी देखै छिऐ तँ तामसो उठैए। ओना, सभसँ भला चुप। ने किछु बजै छी आ ने केकरो किछु कहै छिऐ।"

पान मुँहमे लऽ कनी काल गुलगुला कऽ पीत फेकैत शंकरदेव फेर बजला-

"भाय, छह माससँ निचेन भऽ गेलौं। मुदा दियादवादक जे दशा-दिशा देखै छिऐ तइमे होइए जे भगवान हमरो ऊपरमे तकै छैथ।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछि देलखिन-

"से की?"

'से की' सुनिते शंकरदेव बजला- "भाय-साहैब सभ तेहेन रस्ता पकैड़ लेलैन जे चिन्ता मेटा देलैन। मझिला भाए जे नोकरी करै छैथ, ओ गामपर सभतूर आबि बलजोरी दुनू भाँइकेँ लऽ गेलखिन। की कैहतिऐन। अपनो बुझै छी जे दिनानुदिन जीविका घटले जा रहल अछि। तहन तँ

सभ दिन समाजक बीच रहलौं तँए आब ऐ उमेरमे केतए जाएब। जाधैर समाज जीबैए ताधैर कहुना-ने-कहुना बहिते रहब। मुँहपर तँ नइ मुदा पत्नी लग भावो बजली- 'उसरागा खाइत-खाइत सभटा उसरन भेल जाइए। हमरा की लोक नै दुसत जे बाप -पित्ती बड़का हाकिम छथिन आ बेटा-भातीज दसखतो करै जोगर नै भेलखिन।' कहि दुनू भाँइकेँ लऽ जा अपने लग अफसर सबहक जे स्कूल छै तइमे नाओं लिखा देलखिन। छोटका भाए हरिदम फोन करैत रहैए- 'हमरा तेते चढ़ौआ होइए जे केतए रखब। उठा-उठा लऽ लऽ जाउ।' मुदा गाड़ीमे चलैत डर होइए। तेते छिना-झपटी, निशाँ-खुऔनी हुअ लगल अछि जे हमरा बुत्ते तीस घन्टा गाड़ीमे बैस दिल्ली पहुँचल हएत। मुदा तैयो अनका-अनका दिआ तेते चीज पठबैत रहैए जे कोनो चीजक कमी नै अछि। संतोष एते भऽ गेल जे कियो अपन बाप-माइक किरिया-कर्म करैत अछि तैबीच हम किए डाक-डकौवैल करिऐ। पूर्वज सभ तँ तीन श्रेणीक सराध कर्म तँइयेँ कऽ गेल छैथ। जेकरा जइ तरहक विभव रहै छै ओ ओइ तरहक कर्म करि एकलोटा पानि तँ पूर्वजकेँ दइए दइ छैथ। मुदा लोकोमे छल-प्रपंच छइ। जँ करै छी तँ श्रद्धापूर्वक करू नइ तँ ठकि कऽ पिण्ड कटौने नै हएत। तहिना हमहूँ करै छेलौं। दियादवाद अखनो करिते छैथ जइसँ दशो तेहने भेल जाइ छैन। गामेमे वेदान्ती काका छैथ। वेचारा अपन जिनगी अपना ढंगसँ बना नेने छैथ।

ओना, ओ लोअरे-प्राइमरी स्कूलमे गुरुआइ करै छैथ, गामेक स्कूलमे। मुदा अप्पन क्रिया-कलाप छैन। जहिना किसान काजकेँ दू उखड़ाहा–भिनसरसँ बारह बजे आ दू बजेसँ सूर्यास्त धरि, बँटने छैथ। तहिना स्कूलमे दुनू उखड़ाहा पढ़बै छथिन। दरमाहा भेटलैन आकि नै तेकर कोनो चिन्ता नहि। किछु ऑफिसक किरानी ठकि कऽ खाइ छैन तँ किछु बैंकक, तहिना कहियो कियो नाँगट देह आ बच्चाकेँ पोथी-कॉपी देखा मांगि लइ छैन, तँ कहियो बैंकक चारू भाग मरड़ाइत लुच्चा सभ

झोड़ा छीन लइ छैन। मुदा ने कहियो काकी मुँह उठा हिसाब मंगै छथिन आ ने अपने केकरो कहै छथिन। मन पुष्ट रहै छैन जे अपनो तँ जीबते छी, तहन अनेरे घरमे रखि कऽ की हेतइ। कातिक मासमे 'कार्तिक महात्म्य' बरहम स्थानमे बैस कऽ सभ साल सात दिन धरि समाजकेँ सुनबै छथिन, तइमे तेतेक कपड़ा भऽ जाइ छैन जे सालो भरि दुनू परानी बिनु सुइया भिरौल कपड़ा पहिरै छैथ। दूध खाइले गाइये पोसने छैथ। ओना , खेती अपने नै करै छैथ। गाममे दू कट्ठा वाड़ी छोड़ि घराड़ीएटा छेबो करैन। पिता जजमैनका पुजबैत रहथिन। गामे-गामे जे जजमान दानमे खेत आ आमक गाछ देने छैन वएह तेते आबि जाइ छैन जे दू -सलिया-तीन-सलिया चाउर सेहो पथ्य-पानिले रहै छैन। आदतो तेहेन रखने छैथ जे केकरोसँ मंगैक काज नहि। आजुक छौड़ा सभ जकाँ नै ने जे- बाबा, कनी खैनी खुआउ। पचास गाछ तमाकुलक खेती अपने हाथे-बुधिये करै छैथ। काकी गाइयेक पाछू बेहाल रहै छथिन। जहिना एक बहिन दोसर बहिनक माथमे केश बिहिया-बिहिया ढीलो तकैत आ नीक-अधलाक गप्पो करैत तहिना गाइक संग काकी लगल रहै छैथ। जहिना तमाकुलो अपने हाथे उपजबै छैथ तहिना चूनो अपनेसँ बनबै छैथ। दियादमे जखन हुनकापर नजैर पड़ैए तँ स्वत: नजैर निच्चाँ भऽ जाइए। मुदा ओहीठाम दोसर छैथ जिनका घराड़ी दुआरे एक्के अँगनामे सोरेक -सोरे धिया-पुताक संग तीन भाँइ छथिन। भोर होइते तीनू महाभारत शुरू कऽ दइ छैन! तीनू दियादनियोँ तीन परगनाक छथिन। एकटा अल्लापुरक, दोसर भौरक आ तेसर– गंगा ओइ पारक, मगहक छथिन। तीनू जे तीन सुर-तानपर गारिक गीत गाएब शुरू करै छथिन, तखन बुझि पड़ैए वृन्दावनमे छी आकि लंकाक पुष्प-वाटिकामे..।"

❑ **साभार : जीवन-मरण, उपन्यास 2010, पृष्ठ संख्या- 104-107**

भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिये समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पण्डित लोकैनक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली चलैत तँ दोसर दिस टुटल-फुटल मैथिली–जनभाषा चलैत। जेकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगियो पछुआएल।

अंग्रेजी शासनक संध्यावेला। मिथिलांचलमे केतौ-केतौ संस्कृत विद्यालय, केतौ-केतौ गोटि-पँगरा संस्कृत महाविद्यालय आ एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय, जइमे संस्कृत भाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ होइत। मुदा शिक्षा जनोपयोगी कम, सेहो आमजन-ले उपलब्ध नहि। ग्रामीण इलाकामे कियो-कियो खानगी शिक्षक रखि अपन-अपन बेटाकेँ पढ़बैत। लड़कीकेँ पढ़ाएब सेहो बर्जिते जकाँ। कोनो-कोनो गाममे, गौंआँ अपन सहयोगसँ लोअर-प्राइमरी स्कूल चलबैत। हाई स्कूल आ कौलेज नगण्ये जकाँ। सेहो बजारक इलाकामे। तँए ग्रामीण इलाकामे आगू पढ़ैक कोनो उपाइए नहि। किछु गनल-गूथल सुभ्यस्त परिवारक विद्यार्थी पढ़ैत ओहो बाहर जा-जा।

ओना, मिथिलांचलमे जमीन्दारीक विरोधमे जन-आन्दोलन शुरू भेल जमीनक लड़ाइ जोर पकड़लक। अपन कमजोरी जमीन्दारो बुझैत मुदा अंग्रेजी हुकुमतक जन-विरोधी शासनक लाभ उठा ओहो सभ माने जमीन्दारो सभ आम जनक विरोधे करैत। गोटि-पँगरा जमीन्दार आम-जनक संग सहानुभूति रखैत। मुदा तैयो जन-आन्दोलन बढ़िते गेल कमल

नहि माने दबल नहि।

भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिये समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पण्डित लोकैनक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली चलैत तँ दोसर दिस टुटल-फुटल मैथिली–जनभाषा चलैत। जेकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगियो पछुआएल।

आम जनक जिनगी पछुआइक अनेको कारण छल, जेना-जमीन्दार खेतक मालगुजारी लइ छल जे दू-साल नै देलापर किसानक जमीन निलाम कऽ लेल जाइत। जइसँ आइक किसान काल्हि बोनिहार बनि जाइत। जइसँ उपजा-बाड़ीमे अबैत गेल। काज पतराइत गेल। सभ दिन काज नै रहने लोक कर्जामे डुमि जाइ छल जइसँ दिनानुदिन ओकर हालत निच्चे-मुहेँ होइत जाइ छल। तैपरसँ प्राकृतिक आफद सेहो होइते रहै, जइसँ कहियो बाढ़ि तँ कहियो रौदीक चपेटमे चटपटाएब निश्चित छल। समाजक बीच स्पष्ट दू तरहक जिनगी चलैत। जइसँ स्पष्ट दू तरहक कला-संस्कृति चलैत रहल। एक दिस परिनिष्ठित संस्कृति बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिस टुटल-फुटल संस्कृति, लोक संस्कृति, सेहो चलि बढ़ि रहल छल।

❑ साभार : उत्थान-पतन, उपन्यास 2009, पृष्ठ संख्या- 190-191

दुनियाँमे जेते मनुख अछि , सभ मनुख छी। सभकेँ
एक्के रंग सभ अँग छइ। हाथ, पएर, मुँह, नाक, कान
इत्यादि। सभ अन्न खाइए, पानि पीबैए, कपड़ा पहिरैए आ
रौद-वसात, पानि, पाथर आ जाड़सँ बँचै दुआरे घरमे रहैए।
अस्सक पड़लापर दबाइक जरूरत होइ छइ। बुधिक दुआरे
पढ़ैए। मनोरंजनक दुआरे नचबो करैए आ गेबो करैए। तँए
सभ-ले एक रस्ता हेबा चाही। नीक रस्ताकेँ धर्मक रस्ता
मानल गेल अछि आ अधला रस्ताकेँ पापक। तखन
आब तोँही कहह जे भदबरिया बेंग जकाँ
एते सम्प्रदाय किएक अछि?

एक काज-ले रस्ता अनेको भऽ सकैए मुदा सभसँ नीक रस्ता तँ एक्केटा हएत। जखन एक्केटा रस्ता नीक हएत तखन एते रस्ताकेँ कोन जरूरत। तइले लोक एते मारि-मरौवैल, गारि-गरौवैल किए करैए?"

मुड़ी डोला देवन समर्थन केलक। देवनक मुड़ी डोलौनाइ आ मुँहक रूखि देखि बटोहीक मनमे खुशी होइत रहैन। मनमे खुशी ऐ दुआरे होनि जे हम्मर बात देवनक ह्रदयमे चुभि रहल अछि। औरो आह्लादित होइत बटोही कहए लगलखिन-

"बौआ, अजीव अछि दुनियाँ। कहए तँ बहुत चाहै छी मुदा तोहूँ अनतए छह आ हमहूँ अनतए छी। तोहूँ केतौ जा रहल छह आ हमहूँ बाटेमे छी। मुदा तैयो जेतबे समय अछि तेहीमे किछु बुझि लएह, जिनगीमे काज औतह। तहूमे अखन तूँ बच्चा छह बहुत दिन ऐ धरतीपर जीबैक छह। जहिना घर बान्हैले एक्के ढंगसँ अनेको घर बनैत, एक्के

किताब पढ़लासँ अनेको लोककेँ ज्ञान होइत तहिना तँ जिनगीक आवश्यकता-ले एक्के लूरिसँ काज चलि सकैए। तखन एते रंग-बिरंगक चालि किए महंथ–सम्प्रदाय चलौनिहार–धरबैए? केते अजगूत बात अछि जे कियो खा कऽ पूजा करैले कहैए तँ कियो भूखले। तहिना कियो दाढ़ी-केश बढ़ा पूजा करैए तँ कियो दाढ़ी-केश कटा कऽ। कियो माटिक भगवान बना, तँ कियो पाथरक तँ कियो ओहिना, बिनु मूर्तियेक। तहिना कियो मन्दिर बना, तँ कियो मस्जिद बना, तँ कियो गिरिजाघर बना कऽ पूजा करैए। ..नहि जानि केते रंगक देवालय होइत। तँ कियो ओहिना, बिनु मन्दिरे, मस्जिदेक- कियो भगवानकेँ परसाद चढ़बैत तँ कियो बिनु परसादेक पूजा करैत। कियो ताड़ी-दारू पीब, माछ-मौसु खा पूजा करैत तँ कियो ओकरा अधला कहि निन्दा करैत। कियो नारीकेँ मुक्तिक मार्गक बाधा बुझैत तँ कियो नारीए पूजाकेँ उद्धारक रस्ता बुझैत। अजीव अछि ई दुनियाँ आ अजीव अछि ऐ दुनियाँक लोक। कियो वेश्याकेँ अधला बुझैत तँ कियो पूजा करैकाल वेश्या नचबैत। कियो-ढोलक-झालि, मजीरा बजा कीर्तन-भजन करैत तँ कियो ओहिना बिनु साजे-बाजक।”

जहिना कोनो खेलौना वा पढ़ै-लिखैक कोनो वस्तु-ले बच्चा सभ अपनामे छीना-छीनी करैत तहिना देवनक मनमे, हुअ लगल। देवनक मुँहक बिजकब देखि बटोही मने-मन सोचए लगला। जे वेचारा द्वन्द्वमे पड़ि गेल अछि। करवनो मन गुड़ैक कऽ एमहर तँ करवनो ओमहर भऽ रहल छइ। मन असथिरे ने भऽ रहल छइ। कनीकाल बटोही गुम्म भऽ देवनक भावनाकेँ अँकए लगला। देवनक मन करवनो खुश होइत तँ करवनो चिन्तित भऽ जाइत। करवनो मुहसँ हँसी निकलैत तँ करवनो कानै सन भऽ जाइत। ओना, बटोही मने-मन हँसैत रहैथ मुदा मुहसँ बाहर हँसीकेँ निकलए नइ दैत रहथिन। बटोहीक मनमे एलैन जे आब विषय बदैल दी। बजला-

“बौआ, देखै छहक ने जे केकरो घरमे अन्न सड़ैए तँ कियो भूखले

रहैए। केकरो गामक-गाम खेत छै, तँ केकरो घरो बन्हैले ने छइ। केकरो धरमे कपड़ा सड़ै छै तँ कियो नँगटे रहैए। कियो कोठाक भीतर कोठा बनौने अछि तँ कियो गाछक निच्चाँमे रहैए। केकरो बोरे-बोरा नून तँ केकरो रोटियोपर ने होइत। कियो दबाइकेँ सड़ा-सड़ा पानिमे फेकैत तँ कियो दबाइ बिनु मरैए। केते कहबह पहिनहि कहि देलियह जे ऐ दुनियाँक एक भाग निरोग अछि तँ दोसर भाग सड़ल छइ। ”

देवनक चेहरा उदास हुअ लगल। मुँह मलीन आ आँखिक ज्योति बदलए लगल मुदा ज्ञानक भूख मनमे आरो जागए लगलै। मने-मन देवन सोचलक जे जखन एतबे दूर एलापर एतेक भेटल तँ ऐसँ आगू गेलापर केते भेटत। ई बात मनमे अबिते देवन बटोहीकेँ कहलकैन-

“दादा, जखन एते दूर आबिए गेलौं तँ ऐगलो रस्ता बता दिअ , ओहो देखिये कऽ घूमब।”

मुस्कियाइत बटोही आगूक अनुभव बाजए लगला-

“ऐठामसँ कोस भरिपर मनपुर अछि। जखन ओइठाम पहुँचबह तँ देखबहक जे किछु गोरे पल्था मारि बैसल अछि आ मने-मन जिनगीक हिसाब जोड़ैए जे जेते समय खटै छी ओइसँ जे उपारजन होइए, ओहिक भीतर अपन जिनगीकेँ रखि जीबी। आ सएह करबो करैए। मुदा भेड़िया-धसान लोककेँ देखबहक जे खड़क बैलून जकाँ हवामे उड़ैए जइसँ केते फुटिये जाइत अछि आ केते गिरबो करैए, जेकर कोनो ठेकानो ने छइ। तँए तूँ ओइ बैसलाहा लोक सबहक दर्शन करिहह। ओकर दर्शन सीखि जिनगी बनबिहह। जिनगी की छी? जिनगी तँ वएह छी जे मनुख बनि जिनगी जीब लेब छी। ..मनपुरसँ कोस भरि आगू बुधिपुर अछि। जखन बुधिपुर पहुँचबह तँ देखबहक जे ऐठाम जेते लोक अछि सभ जुआरी अछि। भरि दिन, भरि राति जुए खेलाइए। ओ जुआ खेलाइक पासा तीन तरहक अछि। एक तरहक पाशा अछि जइमे बाप-बेटा खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत अपनामे गारि-गरौवैल करए लगैए। बाप बेटाकेँ कहै

छै, 'सार तूँ बेइमान छँह।' तहिना बेटो बापकेँ कहै छै, 'सार, तूँ बेइमान छह।' ..देखबहक जे बाप-बेटा सार-बहानचो करैए। मुदा ओइठाम बेसी नै अँटकिहह। देखि कऽ आगू बढ़ि जइहह। किएक तँ ओ सार दुनू चोट्टा छी। जहिना छोटका माछक बोर दऽ बंशी खेलेनिहार, बड़का माछ मारि लइए तहिना ओ सभ छोटका गारि देखा फंसा लेतह आ गारि पढ़तह। तँए देखि कऽ तुरन्त हटि जइहह। ..दोसर पासा देखबहक जे भाए-भैयारी आमने-सामने बैस जुआ खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत देखबहक जे दुनू एक-दोसरकेँ बेइमानी करए लगैए। जइसँ गारि-गरौवैल, मारि-मरौवैल करए लगैए। मुदा ओहो दुनू नमरी चोट्टा छी। तँए ओकरो देखि कऽ लगले हटि जइहह। जँ अँटकबह तँ धोखामे पड़ि जेबह। ..तेसर पासा जे देखबहक ओ असली पासा छी। ओइमे देखबहक जे दू परिवारक लोक जुआ खेलाइए। कसमकस खेल ओइ पासापर होइ छइ। दुनू खेलाड़ी सभ तरहक शक्ति लऽ कऽ खेलाइए। गारिक जवाब गारिसँ, मारिक जवाब मारिसँ, लाठीक जवाब लाठीसँ आ बम-बारूदक जवाब बम-बारूदसँ देल जाइ छइ। ओइ पासाकेँ देखि मनमे हेतह जे हमहूँ एक भाँज खेलि ली। ओइठाम अँटैक जइहह। जेते दिन देखैक मन हुअ तेते दिन ओतै रहिहह...।"

बटोहीक बात सुनि देवनकेँ मनमे खुशी भेलइ। मुस्की दैत पुछलक-

"ओइठिनसँ कियो भगौत तँ ने?"

बटोही-

"हँ! एक पासाक खेलाड़ी भगौनिहार अछि मुदा दोसर रखनिहार। जे बचेनिहार हेतह। ओकरा 'भाय' बुझि पिठपर रहिहक। ओ जे जीतत तइसँ तोरो लाभ हेतह। ओ सिरिफ अपनेटा लऽ नै खेलैए तोरोले खेलैए, सभ-ले खेलैए।"

बटोहीक बातकेँ गौरसँ सूनि देवन मुड़ी डोला सोचिते छल आकि

फेर बटोही बजला-

"ओइठाम देखि आगू बढ़ि जइहह। ओइठामसँ कोसे भरि आगू विवेकपुर अछि। जखन बुधिपुरसँ आगू बढ़बह तँ विवेकपुर लगे बुझि पड़तह। जाइकालमे सेहो नहि बुझि पड़तह। मुदा बिनु विवेकपुर गेने आपस नै घुमिहह। जखन विवेकपुर पहुँच जेबह तखन विवेक बाबासँ भेँट हेतह। विवेके बाबाकेँ लोक ज्ञानेश्वर, धर्मगुरु, जगत पिता सेहो कहै छैन। ओइठाम देखबहक जे रंग-बिरंगक ढेरो घोड़ा अछि। एक-सँ-एक सुन्नर, एक-सँ-एक तेज दौड़ैबला। केकरो बान्हल नै देखबहक। ओहिना बिनु बन्हले सभ रहैए। विवेके बाबाक टहलू हम छी। टहैल-टहैल दुनियाँ देखै छी।"

'विवेक बाबाक टहलू सुनि बिच्चेमे देवन पुछि देलकैन- "ऐठाम किए आएल छेलौं?"

❑ साभार : जिनगीक जीत, उपन्यास 2009, पृष्ठ संख्या- 197-201

‘यज्ञ’ सुनि फुलटुसीकेँ भेलैन जे भरिसक एकादशी यज्ञक विचार करता, मुदा सुधीरक विचार मनमे ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एक शब्दक अनेको अरथो अछि आ अनेक जगहो तँ अछिए। तही बीचमे ने अनर्थ करैक जगह सेहो अछिए...।

जहिना जन्म भेल बच्चाक तकतियान माता-पिता वा परिवार नहि करता तँ ओ बच्चा केते काल धरतीपर जीब सकैए, तहिना उमर-पेब–वृद्धावस्थामे, जे हर मनुक्खक एक अवस्था छी– दोसराक खगता भइये जाइए, तँए परिवारो आ बेकतियोक खगता मनुक्खकेँ भइये जाइए। ओना, कहब जे एकरंगा ऋषि-मुनि ई बात नहि बुझै छला? हँ, जरूर बुझै छला आ बुझैत कहै छला, ‘मरब विदेशमे नीक, जैठाम अपन कियो ने रहए। जानवर सभ देहक मौस खाएत तँ ओकरो पेट भरतै, जइसँ ओकरो मन तृप्ति हेबे करत।’ मुदा तेतबे नइ बुझै छला, ईहो बुझै छला जे ‘अपन जीवन अपन हाथ, अपन जहान अपन साथ।’

विद्यालयसँ घरपर अबैकाल रस्तामे रमानन्द बाबूक मनमे ईहो खौंझ उठैत रहैन जे गाम-गाम विद्यालय अछि आ समाजक लोक ढलैक कऽ नीचमुँह बनल अछि। तइ दिस नजैरिये ने जा रहल छैन आ बच्चा सभकेँ आदर्शक रस्ता धड़बै छैथ। फेर अपने मनमे रमानन्द बाबूकेँ भेलैन जे अनेरे ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’क भाँजमे पड़ि कऽ की करब। मुदा सुधीरक बिआह तँ अपन परिवारक समस्या छी, तँए नीक हएत जे

अपने सभ परिवार माने बेटो आ पत्नियोँक बीच बैस अपना मनमे जे अछि ओकरा पर्दाक भीतर नहि रखि वेनग्न रूपमे किए ने सभकेँ कहि दिऐ। जइसँ ओकरो सबहक विचार देखि-सुनि लेब...। रमानन्द बाबूक मन मानि गेलैन जे यएह नीक हएत।

रमानन्द बाबूक मनमे बेटा-बिआहक विचारक उद्वेग रहबे करैन। घरपर अबिते पत्नियोँ आ बेटोकेँ कहलखिन, 'रौतुका भोजनसँ पहिने आ सौंझुका जलखै-चाह-पानक पछाइत बीचमे जे एक घन्टाक समय अछि, तइमे परिवारक एकटा यज्ञक विचार अछि। तँए सभ एकठाम बैस विचार करैक अछि।'

ओना, 'यज्ञ' सुनि फुलटुसीकेँ भेलैन जे भरिसक एकादशी यज्ञक विचार करता, मुदा सुधीरक विचार मनमे ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एक शब्दक अनेको अरथो अछि आ अनेक जगहो तँ अछिए। तही बीचमे ने अनर्थ करैक जगह सेहो अछिए...।

❑ साभार : नव पोथी, कथा संग्रह- 2020

राजा हरिश्चन्द्र सपनेमे ने राज-पाट सभ बोहा लेलैन। मुदा ई विचारबे ने केलैन जे राज-पाट राजवासीक छिऐक आकि अपन खतियानी छी..!

"बाप रे! जीब कठिन अछि..!"

ओना, नीक जकाँ लाल भाइक भक् टुटल नइ रहैन, भकुआएलमे मुहसँ निकललैन। ओछाइनपर सँ उठि ठाढ़ भेल रहैथ। तइसँ किछुए पहिने पत्नी उठि घर बहारि रहल छेलखिन।

पतिक बात सुनि सुचित्रा भौजी मने-मन विचारि लेली जे भरिसक सपनाएल मन छैन तँए मुहसँ एहेन बोल निकललैन। एहनो भऽ सकैए जे सपना देखिते समय नीन टुटि गेल हेतैन, तहूसँ एना बजला अछि। ..मुँहक बातकेँ, सपनेक बात बुझि सुचित्रा भौजी झुठियाबए लगली। ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे सुतैकाल, ओछाइनपर अबैसँ पहिने नीक जकाँ हाथ-पएर नइ धोने हेता तँए सपनेला अछि। फेर भेलैन जे जँ हाथ-पएर धोनौं होथि आ ओछाइनकेँ नीक जकाँ झाड़ि कऽ नहि ओछौने होइथ? मुदा अपने मन रोकैत कहलकैन जे ओछाइन तँ अपनेसँ झाड़ि कऽ ओछौने रही..! लगले फेर दोसर विचार जगलैन, एहनो तँ भइये सकैए जे पैशाव करि कऽ नहि सुतल होइथ।

अनिसचित विचार सुचित्रा भौजीक मनमे उठने निसचित विचार जगबे ने केलैन।

घर बाहरब छोड़ि सुचित्रा भौजी लाल भाइक चेहरापर नजैर देलैन। बसियाएल फूल जकाँ लाल भाइक चेहरा मौलाएल सन बुझि पड़लैन। पतिक चेहरा देखि सुचित्रा भौजी किछु पुछैसँ पहिने परहेज

करैत सोचली जे दिनक वा खाइ-पीबै राति तकक जँ बात रहैत तँ निर्भिक भऽ पुछलो जा सकइ छल मुदा लगले बिछानपर सँ निनाएल उठबे केला हेन। ई तँ ओहन अवस्था छी जखन कियो समाधि सम्पन्न करैत उठै छैथ। ई अवस्था दुनियाँ-दारीसँ हटल रहैक होइए, तइ बीच दुनियाँ-दारीक ओहन विषये किए सोझामे औत जे एना चौंक कऽ बजला.. ? किछु बजैसँ परहेज करैत सुचित्रा भौजी अपन मुँह बन्ने रखली।

लाल भायकेँ ओछाइनपर सँ उठिते पत्नीपर, माने घर बहारैत सुचित्रापर नजैर पड़ि गेने चेत एते चेतनशील भइये गेल रहैन जइसँ मनमे उठैत अनेको दृश्यकेँ मनेमे दाबि अनमनस्क भेल विचारि लेलैन जे मनक देखल दृश्यकेँ मने-मन किए ने मँथली जे आखिर एहेन दृश्य मनमे आएल केना? देखल दृश्य जँ दोहरा कऽ अबैए तँ ओ उचित भेल मुदा बिनु देखल ओहन दृश्य जँ अबैए तँ ओहन दृश्यक रूप मनमे बनल केना? तँए अनमनस्क ठाढ़ भेल लाल भाय विचारए लगला। भोरक सपना। भोरक सपना तँ सत् होइते अछि, की दृश्य देखलौं? यएह ने देखलौं जे जीवन विचड़नक बीच सघन बन पहुँच गेलौं , जइमे सुन्दर-सुन्दर गाछो-बिरीछ, झड़नो-पहाड़ आ बाघ-सिंह आ भालु सन जानवरो अछि। तइ बीच जीब केना सकै छी? जी-बन माने जिनगी बना जीब कठिन अछिए। मुदा लगले मन ठोस गबाही दैत कहलकैन जे कठिन जरूर अछि मुदा असम्भव अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जँ से रहैत तँ फेर जीवक जीवन अछि की नहि..!

चौंकल मन लाल भाइक छेलैन्हे, अपन पूर्वज मोन पड़लैन। राजा हरिश्चन्द्र सपनेमे ने राज-पाट सभ बोहा लेलैन। मुदा ई विचारबे ने केलैन जे राज-पाट राजवासीक छिऐक आकि अपन खतियानी छी..!

❑ **साभार : रहै जोकर परिवार_2020**

“बौआ, तूँ ते बहुत पहिने गाम छोड़ि चलि एलह तँए बच्चा महक बात बिसैर गेल हेबह मुदा अपने तँ पचहत्तैर बर्ख ओही गाममे जन्मसँ अखन धरि बितेलौं अछि।”

“भाय साहैब, पहिने ई कहू जे एते दूरसँ एलौं हेन , हाथ-पएर धोइ बैसब आकि पहिने नहाएब-सोनाएब?”

छत्तर भायकेँ जेना भक्क खुजलैन। तहिना बजला-

“अखन भोर भेबे कएल अछि तखन नहाइ-सोनाइक कोन धड़फड़ी अछि। मुहोँ-कानमे पानि लइये नेने छी।”

तैबीच जेठकी बेटी रूक्मिणी चाह-पानि-बिस्कुट नेने पहुँच गेल। एक तँ ओहुना छत्तर भायकेँ दू दिनसँ अन्नक भेँट नहि भेल छेलैन , तैपर अपन डुमैत घर-आँगन मनकेँ तेना मथि रहल छेलैन जे होशे उड़ि गेल रहैन, जइसँ रूक्मिणी हाथसँ बिस्कुट लैत हाँइ-हाँइ खाए लगला। ओना, अपने जीवनानुभव अछिए जे आगूमे अन्न देखि भूखल केना लपकैए आ नाङ्गट केना वस्त्र देखि तरसैए। तँए विचारमे मोड़ दैत बजलौं -

“भाय साहैब, गामक हाल-चाल पछाइत कहब, पहिने अपन आ परिवारक कहू?”

अपन बात सुनैत-सुनैत छत्तर भाय चाह पीब पानो मुँहमे लऽ नेने छला। गालक तरमे पान-जरदाकेँ दाँतसँ घेरि बाजए चाहलैन कि एकाएक दुनू आँखिसँ नोर खसए लगलैन। नोराएल अँखिमने छत्तर भाय बजला -

“बौआ बुधियार, सात घर दुश्मनोकेँ भगवान ओहन गति नहि देथुन जे देलैन।”

छत्तर भाइक मुँहक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र बढ़ल।

बजलौं-

"से की छत्तर भाय?"

जहिना गुड़-घाओक मुँह फुटने विकार निकलैकाल सुआस पड़ैत रहैए तहिना छत्तर भायकेँ सेहो अपन मनक भरास निकालैत भेलैन। बजला-

"बौआ, तूँ ते बहुत पहिने गाम छोड़ि चलि एलह तँए बच्चा महक बात बिसैर गेल हेबह मुदा अपने तँ पचहत्तैर बर्ख ओही गाममे जन्मसँ अखन धरि बितेलौं अछि।"

ओना, अपना धुनियेँ छत्तर भाय बाजि रहल छला। मुदा अपना मनमे तरे-तर हुअ लगल जे दुनू हाथे छत्तर भायकेँ उठा माथपर चढ़ा ली। मुदा, मुद्दा तँ मुद्दा छी। बजलौं-

"भाय साहैब, अपने तँ..?"

हमर अधखड्डआ बातमे छत्तर भायकेँ की भेटलैन से तँ छत्तर भाय बुझलैन मुदा अपन बामा बाँहिपर दहिना हाथ मलैत बजला-

"बौआ, जवानी पानिमे नहि फेक देने छी, अपनो ले आ समाजो ले बहुत किछु केने छी।"

छत्तर भाइक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र भेल। उग्रानु अन्वेशी बनि जिज्ञासाकेँ जगबैत बजलौं -

"से की छत्तर भाय?"

छत्तर भाय बजला-

"कमलाकातक गाम रहने खेती-पथारीक हालत खराबे छल, सत-सत बेर धान रोपै छेलौं आ तैयो दहाइ छल मुदा बाप -दादाक घराड़ी लोक पेटक खातिर छोड़ि देत, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल, तँए गामक बेसी परिवार महींस पोसि गुजर करैत आबि रहल छैथ। जइसँ आन -आन

गामक अपनो जाति-बेरादर गामकेँ महिंसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छला। जइसँ एकठाम बैस खाएबो -पीब बन्न छल आ कथो-कुटुमैतीमे घटबिये छल। खुलि-खुलि आन गामक लोक बजै छल जे ओइ गाममे बेटी देब गोबरबिछनी, गोबरपथनी बनाएब भेल।"

❑ साभार : गामक सूरत बदैल गेल_2020

“चाहे ‘नख-शिख’ वर्णन लिखह आकि ‘शिख-नख’क वर्णन लिखह, बात बरबरिये भेल, दुनू लिखिनिहार श्रेष्ठ सृष्टिकर्ता भेबे केला। जहिना तोहर विचार हुअ तहिना बाजह।”

हिम्मतलाल बाजल- “भाय साहैब, जहिना अपना मनमे अछि तहिना माइयोक इच्छा छै, जे अपने विवाहसँ चारि दिन पहिने सभ परिवार आबि कऽ मिथिलाक जे विवाहक बेवहार अछि ओइ बेवहारे अपन बेटीक विवाह करब। से तँ अपने सभ परिवार रहने ने सम्भव भऽ सकैए।”

ओना, चारि दिनक समय आ मिथिलाक बेवहार, केना सम्भव हएत। राधारमणक मनमे नाचि उठलैन। कहू जे चूड़ाक धान पहिने ताड़ल जाइए, पछाइत भाड़ल जाइए, तखन सुखौल जाइए पछाइत ने कुटोल जाइए, से केना चारि दिनमे सम्भव अछि। अदौरी कि बर-बरी बनबैमे कम मेठैन अछि से चारि दिनमे केना हएत। तहूमे अदौरीकेँ सुखैयेमे समयक हिसाबसँ दुइयो दिन लगैए आ पाँचो दिन नइ लगैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैसंग घर-दुआरक लिखिया-पढ़िया माने चित्रकारीसँ शुभ सन्देश लिखै धरि, सेहो अछि। तहूमे आन काज छी नहि जे एको-दुइयोटा चित्रकारीसँ काज चलि सकैए। विवाह सन यज्ञ छी। कोहबरसँ राज-सिंहासन तकक चित्रकारी करैक काज अछि। मुदा मनकेँ मिथिलाक दृश्य हटा राधारमण मन मिथिलाक दिशा दिस मोड़ैत विचार करए लगला। मिथिलाक दृश्य की? वएह ने जे जे कोनो काज, चाहे साधारण जीवनसँ जुड़ल हुअए आ उच्चकोटिक यज्ञ स्वरूप हुअए, जेते मनसँ मथन-मथि करैत करब ओते ओ नीकसँ नीकतम होइते जाइए। यएह छी

मिथिलाक दर्शनक दर्पण। जेना कोनो भोज्य वस्तु अछि, ओकर उपयोग साधारणो ढंगसँ होइए आ अधिक-सँ-अधिक नीक बना सेहो नइ भऽ सकैए, ईहो बात नहियेँ अछि। तहिना, आनो-आन जीवनसँ जुड़ल जे काज अछि तहूमे नीक हेबे करत। मुदा संजोग रहल जे हिम्मतलाल अपन विचारकेँ, सन्मुख धार जहिना अपन धाराकेँ प्रवाहित रखितो धारक अगल-बगलमे मुँह बनबैत दोसरो धाराक धार बना प्रवाहित करैत आगू बढ़ैए तहिना हिम्मतलाल अपन विचारकेँ यथास्थितिमे समेट बाजल-

"भाय साहैब, की कहब। बुढ़ियाक रंग-ढंग दोसरे छैन।"

हिम्मतलालक माइक 'रंग-ढंग दोसरे छैन' सुनि जिज्ञासा करैत राधारमण बजला-

"की दोसरे?"

हिम्मतलाल बाजल- "भाय साहैब, भोर होइते चरियाबए लगैए जे राधारमण बौआसँ भेँट भेना बहूदिन भऽ गेल। वेचारे केना रहैत हेता केना नहि से कनी बुझब। ओना, मोबाइलसँ गप-सप्प होइते छैन, मुदा तइसँ मन थोड़े भरै छैन।"

हिम्मतलालक मुहसँ माइयक बात सुनि राधारमणक मन जहिना निछोह दौड़ैत अपन माए लग पहुँचलैन तहिना सुवासिनीक मन सेहो अपना माएपर पहुँचलैन। तैसंग सुचिताक मन सेहो अपन माइयक जीवनक ओइ घटनापर पहुँचल, जखन राधारमण विवाह करैमे अपन परिवारसँ विद्रोह केलैन आ अखनो वागी बनल छथिए। देखू हे सखि दुनियाँक रीत 'एक घर कानै एक घर गीत..।' कियो अपन जिनगीक कमाइ लुटाइत देखि कनैए तँ कियो ओही लूटलकेँ भोगि हँसबो करिते अछि। समाजो तँ समाज छीहे। अट्ठारह बर्खक पछाइत लड़कीक आ तइसँ ऊपरे उमेरक लड़काक विवाह करब तँ तीन-चौथाइ समाज मानि चलैनमे आनि नेने छैथ मुदा अपन स्वेच्छासँ, वयस्क भेला पछातियो,

लड़का-लड़कीक विवाहमे अपन विचारक कोनो मोल अछिए नहि। गाए-महींस जकाँ खरीद-बिक्री भऽ रहल अछि आ सभ मुँह देखि रहल अछिए। तहूमे युवा वर्गक जे खास समस्या छी तइ दिस कियो तकनिहार नहि। वाह रे आजुक पढ़ल-लिखल समाजक नव पीढ़ी। विवाह परिवारक ओहन महान कृत्त छी जे वैचारिक रूपमे फूलसँ हल्लुको, फलसँ मीठो अछि आ असान जीवनो बना सकैए, से कियो देखिये ने पेब रहल अछि।

ओना, सुचिताक चेहरा देखि राधारमणक मन सेहो व्यग्र भऽ रहल छेलैन, मुदा आलमारीमे पोथी रखनिहारक मनमे एते आशा तँ बनले रहैए जे समय एलापर वा लगलापर निकालि देखि लेब। तँए राधारमण अपन विचारकेँ प्रस्फुटित होइसँ रोकने छला आ मने-मन आँकि रहल छला जे हिम्मतलाल अपन मान-मरजादा रखैत अपन बेटीक विवाह ठीक केलक अछि। मुदा तैयो मनमे एकटा विचार घुरियाइये रहल छेलैन जे अनमेल विवाहकेँ सममेल केना बनौल जाए। अनमेलक कारण अखन नहि, किए तँ जे बाधा अनमेल ठाढ़ केने अछि ओ समाजकेँ विग्रह करबेकेँ नीक बुझैए...।

❑ **साभार : सुचिता_2020**

केकरो गलतीकेँ छिपाकऽ राखब उचित नहि,
हँ एते विचार कएल जा सकैए जे कोन विचारकेँ
केतए राखक चाही। जँ गलतीकेँ झाँपि कऽ राखब
तँ ओकर धार दुनू दिस बढ़त। माने भेल जे गलती
बढ़बो करैए माने एकसँ दू, तीन-चारि आ घटबो
तँ करिते अछि जखन गलतीकेँ अनुचित बुझि
लोक विचार करैए, तखने ने गलतीकेँ
वस्त्रक मैल वा दाग बुझि छोड़ाइये
लेब हितकर बुझैए...।

विचार जेना सबल बनए लगल जइसँ मनमे उपकल, अपना ऐठाम गरीबी (मजबूरी)केँ लोक छिपाकऽ रखए चाहैए, दोसर-तेसरक बीच नहि बाजए चाहैए जइसँ ओ समाजमे पसैर सामाजिक मुद्दा (समस्या) बनि समाजमे ठाढ़ हएत। एहेन रोग माने अपन मजबूरीकेँ लोकसँ दाबब, पुरुखक अपेक्षा महिला संस्कारमे बेसी अछि, जेकर फलाफल सेहो सबहक सोझहेमे अछि। मन जेना निर्बलसँ सबल हुअ लगल। जइसँ विचार उफैन निकलल-

"काका, भोरे-भोर लोक भगवानक नाओं लैत शुभ-शुभकऽ जीवनलीला दिस बढ़ैए आ हमरा बज्जर सन कथा पत्नीक मुहेँ भेटल।"

'बज्जर सन कथा' सुनि जगरनाथ काका पुन: गुम भऽ विचारए लगला जे बज्जर सन केतौ कथा हुअए। बज्जर वस्तु होइए, कथा भाव छी, तखन एहेन तुकमिलान केना भेल? मुदा लगले मन ससैर हमरापर पड़लैन। पड़िते बुझि गेला जे भोलानाथ, भोलेनाथ छी। सर्वव्यापी

महादेव जहिना जीरो बैलैंसमे सभदिन चलैत रहला तहिना भरिसक भोलोक समस्या अछि। अपने बात उठबैत जगरनाथ काका बजला-

"भोला, की कहबह! कहियो चीनी घरमे नइ रहने नून देल चाह पीबै छी तँ कहियो दूध नहि रहने नेबोक पात देल आ कहियो चाह पत्ती नइ रहल तँ तुलसी-पत्ता देल पीबै छी। भेल तँ मनकेँ खाली बुझाएब जे चाह छी।"

जगरनाथ कक्काक विचार सुनि, भानस करैबला चुल्हिक पाछू राखल मोम जहिना अपने पघिलए लगैए तहिना अपनो मन पघिल गेल। जइसँ निरभिकता सेहो जगल। बजलौं - "काका, ठीके लोक अपना ऐठाम कहैए जे ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा घर-घर एक्के लेखा।"

हमरा बातमे जगरनाथ काकाकेँ की भेटलैन से अखनो धरि नहि बुझि पेलौं मुदा मन हर्खसँ हरखित जरूर भऽ उठलैन। बजला- "बौआ, दुनियोँ बड़ीटा अछि आ अपन देश सेहो बड़ीटा अछि , ओतेकेँ समटब से पार लागत तँए अपन पैछला सालक कहै छिअ। एकटा कहह तँ अखन गाम केहेन देखै छहक?"

बजलौं-

"एकदम चानी जकाँ सौंसे गाम पानिसँ झलैक रहल अछि। "

जगरनाथ काका बजला- "एना किए भेल?"

'एना किए भेल' से की कोनो हमरे कएल अछि जे बुझल रहत। अन्दाजसँ किछु बाजब तँ ओ झुठो भऽ सकैए , भाय अपन मुँहक बात फुसि भेने लोक फुसियाह बनैए आ जँ अनकर मुँहक सुनल बात ओकर नाम कहि बजलौं तखन केना फुसियाह भेलौं। ओना , फुसियाहक सेहो कोनो आड़ि-धुर नहियेँ अछि। किए तँ केतौ लोक फुसि बजैए आ केतौ भगवाने (प्रकृति) ओकर प्रकृति बदैल फुसि बना दइ छैथ। जगरनाथ कक्काक बात 'एना किए भेल'क जवाब फुरबे ने कएल, मुदा मुहोँ बन्न

राखब उचित नहियेँ होइत तँए विचारकेँ बदलैत बजलौं -

"काका, पैछला सालक अपन बात तँ कहबे ने केलिऐ?"

जगरनाथ काका बजला- "बेस मोन पाड़ि देलह नहि तँ ओ बात छुटिये जाइत। पहिने एकबेर चाह पीब लएह।"

कहि सुमित्रा काकीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन चाह बनौने आउ।

सुमित्रा काकीकेँ चाह-दे कहि जगरनाथ काका मने-मन जेना किछु मोन पाड़ए लगला। मोन पाड़ैक क्रममे देखलयैन जे करवनो मुस्की भरि रहल छैथ, करवनो तामसे आगि जकाँ लहैर रहल छैथ तँ करवनो सोल्होअना शान्त भऽ जाइ छैथ। तैबीच सुमित्रा काकी लोटामे पानि आ गिलास नेने एली। लोटो आ गिलासोकेँ बीचमे रखि चाह आनए आँगन गेली कि बिच्चेमे जगरनाथ काका अपने फुरने बजला-

"दुनियोँ अजीब अछि। ठीके तुलसी बाबा कहने छैथ जे भाँति-भाँतिक लोकसँ दुनियाँ भरल अछि।"

तैबीच सुमित्रा काकी चाह नेने पहुँचली। दुनू गोरे चाह पीलौं। ओना, मनमे ई बात औनाइये लगल जे साढ़े तीन हाथक मनुख, अपना हाथे सभ होइए, तैठाम काका किए तुलसी बाबाक नाओं लगाकऽ कहलैन जे भाँति-भाँतिक लोक संसारमे अछि। मुदा किछु बजलौं नहि। चाह पीब जहिना जगरनाथ कक्काक मन सर्ड़ास भेलैन तहिना अपनो मन हुअ लगल मुदा भेल नहि। नइ होइक कारण भेल जे पत्नी मोन पड़ि गेली। मोन पड़ैक कारण भेल जे अपने तँ चाह पीलौं मुदा चाह -चीनी दुआरे भरिसक ओ नइ पीने हेती। द्रवित मन ठमकल। ठमकल ई जे हरिवासय सन पाबैन जे तीन दिन सहि करै छैथ ओ एक बेर माने एकटाइम चाह नहियेँ पीती तँ की हेतइ। तइले अनेरे मनमे माया पसारने छी। बजलौं-

"काका! पैछला सालक बात पछाइत कहब, पहिने भाँति-भाँतिक

लोक तुलसी बाबा किए कहलखिन से कहियौ।”

हमर बात सुनि जगरनाथ काका मने-मन खूब हँसला मुदा हँसीकेँ मुहसँ बाहर नहि हुअ देलखिन। ओना, मन मधुआ गेले रहैन, बजला-

“भोला, बजबोकाल आ गोड़ो लगला पछाइत सभ आसीरवचन दइते छैथ जे ‘भगवान नीक करथुन’, मुदा ओइ आसीरवचनकर्ताक अपन कोन भगवान छिऐन जे.! हाथ-पएर ठीक विपरीत दिशामे चलि रहल छैन।”

जगरनाथ काका जइ प्रवाहमे बजला तइसँ बुझि पड़ल जे दमगर बात काका बाजि रहला अछि मुदा अपने से बुझि नहि पेब रहल छी। बजलौं- “काका, ऐ बातकेँ कनी दोहरा दियौ।”

मुड़कट्टीमे जगरनाथ काका बजला-

“भोला, जेना लोक बजैए तेना जँ करबो करए तँ तीन-दिनमे दुनियाँक रूप सुन्दर भऽ जाएत, यएह बात तुलसीबाबा कहलैन जे काजकेँ कियो जीवनक मर्म बुझैए आ कियो एकटा शब्द, यएह भेल भाँति-भाँतिक लोक।”

❑ साभार : कर्ताक रंग कर्मक संग, कथा संग्रह- 2020,

पृष्ठ संख्या- 41-45

सामान्य क्लासमे शिक्षक पढ़बै छैथ, मुदा ट्यूटोरियल क्लास तँ से नहि छी , शिक्षके विद्यार्थीकेँ पुछै छैथ। भेल तँ जइ मुहेँक प्रश्न उठल, उत्तर देनिहार तइ मुहेँ विदा हएत। सएह भेल। शिक्षक प्रश्न रखलैन- "अध्यात्म दर्शन की छी?"

संजोग बनल, बी.ए.मे जखन दुनू गोरे माने तेतरो आ गुलटेनो पढ़ै छल, दर्शनशास्त्रक शिक्षक ट्यूटोरियल क्लासमे पहुँचला , तखन मात्र दूइयेटा विद्यार्थी, तेतर आ गुलटेनकेँ दीनानाथ बाबू देखलैन। देखिते दीनानाथ बाबूक मन मुसैक गेलैन। मुसकैक कारण भेलैन जे संजोग नीक अछि। आइये किए ने दुनूकेँ जिनगीक मुराम जगह देखा दिऐ।

सामान्य क्लासमे शिक्षक पढ़बै छैथ, मुदा ट्यूटोरियल क्लास तँ से नहि छी, शिक्षके विद्यार्थीकेँ पुछै छैथ। भेल तँ जइ मुहेँक प्रश्न उठल, उत्तर देनिहार तइ मुहेँ विदा हएत। सएह भेल। शिक्षक प्रश्न रखलैन- "अध्यात्म दर्शन की छी?"

अध्यात्मक नाओं जहिना तेतर सुनने तहिना गुलटेन सेहो सुननहि रहए मुदा दार्शनिक शिक्षक लग जवाब देब असान नहियेँ छी, मुदा तैयो जहिना तेतर जाइतिक आधारपर अध्यात्मक उत्तर देलकैन तहिना गुलटेन सेहो सम्प्रदायिक आधारपर उत्तर देलकैन।

दुनूक उत्तर सुनि शिक्षक बिगड़ला नहि , ओना दर्शनशास्त्रक शिक्षककेँ क्रोध लगले उठि जाइ छैन से गुण दीनानाथ बाबूमे नहि छैन। धिया-पुताक गलती देखि जहिना माता-पिता हँसि कऽ कहै छैथ- 'धुर बकलेल', तहिना दीनानाथ बाबू बजला- "धुर बकलेल, अध्यात्म दर्शन

जीवनक ओ दिशा देखबैए जे जीबैक कलामे सभसँ असान अछि।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि जहिना तेतरकेँ उत्कण्ठा जगल तहिना गुलटेनकेँ सेहो जगल। उत्कण्ठा जगिते जेना दुनूक मनमे , माने गुलटेनोक मनमे आ तेतरोक मनमे अनेको जिज्ञासा जगि गेल, जे प्रश्न बनि मुहसँ निकलए चाहि रहल छेलै, तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न उठबैले उठि कऽ ठाढ़, माने ब्रेंचपर सँ निच्चाँमे दुनू गोरे ठाढ़ भेल। दुनूक जिज्ञासा देख, दीनानाथ बाबू दुनूकेँ कहलैन -

"अपन-अपन प्रश्न कागजपर लिखू।"

टटका प्रवाह तँए लिखबोक लेल अनुकूले भेल, दुनू अपन-अपन प्रश्न अपन-अपन कागजपर लिखि दीनानाथ बाबूक हाथमे दऽ देलकैन।

दुनूक प्रश्न देखि दीनानाथ बाबू मने-मन विहियबैत विचारलैन जे किए ने आमक आँठीए लग पहुँच, धरतीसँ अकास धरिक वृतान्त बुझा दिऐ। दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ, एकरा नीक जकाँ बुझि लेब जे मनुख अपने काज (किरिया, कर्म) केने सुखो पबैए आ दुखो पबैए, यएह जवाब भेल अध्यात्म ज्ञान आ मानव भेल दर्शन।"

दीनानाथ बाबूक परिभाषाक शब्द एतेक असान छेलैन जे शब्दक ओझरौठ विचार दुनूमे सँ केकरो ने उठल। तँए कि परिभाषाक बीज परेख सकल, सेहो नहियेँ भेल। मुदा दुनूक मन जेना मस्त होइत आगू मुहेँ बढ़ए लगल तहिना दुनूकेँ भइये रहल छल। ओना , दीनानाथ बाबूक मनमे सेहो एकटा भ्रम पैदा लऽ लेलकैन। भ्रम ई जे अपने मने ने बुझलैन जे जहिना अपने अध्यात्म दर्शनक बाहरी रूप बुझि रहल छी तहिना गुलटेनो आ तेतरो बुझने हएत। मुदा से तँ भेल नहि, परिभाषा तँ जीवन-धारा नहि छी, जीवन-सूत्र छी, जैपर दीनानाथ बाबूक नजैर नहि गेलैन, नजैरियो केना जइतैन अपन जानब, मानब आ करब माने अपन बुधि, विचार,

बेवहार एक बनि चलै छैन तँए नजैरसँ फड़ैक गेल छेलैन।

अध्यात्म दर्शनक परिभाषा सुनि जहिना गुलटेनकेँ भेल जे जीवनक रत्न भेट गेल तहिना तेतरोकेँ भेल। मुदा ई बुझबे ने केलक जे जखन देव-दानव समुद्र मथन केलैन तखन नूनगरहा पानिकेँ मथैत-मथैत जखन समुद्रक पेनी देखलैन माने समुद्रक थाह पौलैन तखन ने रत्न सभक खान भेटलैन। खाएर जे बुझलैन, मुदा एते आशा तँ मनमे आबिये गेलैन जे अध्यात्म दर्शन जीवनक पूर्ण सूत्र छी तँए जँ ऐ सूत्रकेँ पकैड़ जीवनक घाट पार करए चाहब तँ पार भइये सकै छी। गुलटेन बाजल-

"श्रीमान्, सूत्रक धागाक धारण केतएसँ शुरू होइए?"

गुलटेनक प्रश्न सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे दोहरी विचार जगि गेलैन, पहिल आत्मात्मिक जिनगीक शुरूआत आ दोसर जगलैन रंगमंचपर (नाटकक मंचपर) जहिना सूत्रधार नाटकक रहस्यकेँ कवित्व स्वरमे सुना दइ छैथ, तहिना सुना देब।

..दुनूक बीच माने दुनू विचारक बीच , दीनानाथ बाबूक मनमे द्वन्द्व उठिये गेल छेलैन। मुदा तेकरा ओ दर्शनक दृष्टिसँ मनेमे समाधान केलैन। समाधान केलैन जे अन्हार-इजोतक बीच द्वन्द्व रहैए, मुदा जहिना अन्हारकेँ मेटाइते द्वन्द्व समाप्त भऽ जाइए तहिना सभ किछुमे अछि। अपनाकेँ निरविचार दार्शनिकक रूपमे स्थापित करैत दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ सभ सुनह। दुनियाँकेँ देखैसँ पहिने अपनाकेँ देखि लएह। जखन अपन रूपक थाह पेब जेबह तखन दुनियोँक, ऐठाम दुनियाँक माने अपन जीवनक दुनियाँसँ अछि , थाह पेब सकबह।"

❑ साभार : कर्ताक रंग कर्मक संग, कथा संग्रह- 2020,

पृष्ठ संख्या- 94-97

जाधैर साहित्य समाजक वस्तु, माने समाजक साहित्य नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लागत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समाजपर रखि दोसर आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं राज - धानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक समाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।

मनमे उठलैन जे हजारो बर्खक गाछ किछु-ने-किछु अपनामे नवीनता अनिते रहैए। चाहे नव टुसा हउ आकि नव मुड़ी आकि नव पात आकि नव कलश। विचार तँ उठलैन मुदा मनमे दुनू केस तँ रहबे करैन। जाइ-अबैक परेशानी नहि, केसक सजाए केर परेशानी। दुनू सेशन केस। दू-दिना-चारि-दिना तँ छी नहि जे बुझथिन पहुनाइ करए जहल गेल छला। सालक-साल दस साल, बारह साल। दुनू मिला बीस सालसँ बेसी। तैबीच की कएल जाए। जाधैर केससँ छुटकारा नै पाबि लेता ताधैर दोसर दिस बढ़ब नीक नै हेतैन।

केसक छुटकाराक पछाइत करबे की करितैथ। गुजर लेल खेती करिते छला। नोकरी दिस कहियो मनसँ तकबे ने केला, वेपार कएले ने हेतैन। मुदा जिनगियो तँ छोट नहियेँ अछि। कठही साइकिल (काठक पाइडिल लगौल साइकिल) तँ जिनगी छी नहि जे थालो-कादो आकि

रस्ताक कटारियोमे कन्हापर उठा लेता आ टपि जेता। जिनगीक गाड़ी छी। एक पटरीपर सँ दोसर पटरीपर आनब। एकर अर्थ ई नहि जे जैठाम पाहि कटैक जोगार छै तैठाम गाड़ीकेँ लऽ जा कऽ दोसर पटरीपर चढ़ा दियौ। दोसर पटरीपर आनैक अर्थ ई जे छोटी लाइन (मीटर गेज लाइन) सँ बड़ी लाइनपर चढ़ेबाक अछि। ओकर आँट-पेट छोट छै मुदा किछु पार्ट- धुरी-चक्का बदलने तँ डिब्बा आ आनो-आनो वस्तु उपयोगी बनि जाइ छइ। प्रश्न एतबे नै अछि, ऐसँ आगूओ अछि। ओ ई अछि जे अदौसँ अबैत ई जिनगीक गाड़ी छी। जेतेक रंगक पटरी तेतेक रंगक पटरीक गति। तैठाम गाड़ीकेँ दोसर पटरीपर लऽ जाएब, असान नहि।

साहित्यो जगतक जे दशा-दिशा अछि ओ छपित नहियेँ अछि। तहूमे लाठी सबहक हाथ पड़ल अछि। कोनो वस्तु मंगलापर नै दऽ छिपा लेब, लाथ कहबैत अछि। मैथिली साहित्य जगत समाजसँ एते दूर हटि गेल अछि जे जोड़ब असान नै अछि।

ओना, ई सिरिफ मैथिलीए-मे नहि, आनो-आन साहित्यमे भरपूर अछिए। जेना- कबीर दासक चर्च मैथिली साहित्यमे कम अछि मुदा कबीर दासक जे जिनगीक (जीवन पद्धति) इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि। विवेकपूर्ण नै हेबाक कारणे कबीर दर्शन समाजसँ हटि गेल अछि। जेहो सभ दर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छैथ। ओहो सभ या तँ अपनो गुमराहे छैथ, नहि तँ लाथी छैथ, जे गुमराह केने छैथ।

तहिना तुलसी दास 'गोस्वामी' कहबै छैथ, मुदा केतेक गाए पोसने छला? जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब।

तहिना जाधैर मैथिलियो साहित्य समाजक वस्तु (समाजक साहित्य) नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लगत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समा जपर रखि दोसर

आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक समाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।

❑ साभार : जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, 2013, पृष्ठ संख्या- 126-128

गाममे किछु लोकक मनोवृत्ति, 1974-75 इस्वीक समय,
एहेन रहलैन जे केस-मोकदमाक विषयमे अपनेटा जनै छी बाँकी
गामक लोक निपट छैथ। बिनु आधारोक केस-मोकदमा ठाढ़
कऽ कोर्टक जे बेवहार अछि तइ अनुकूल जमीन हड़पा-हड़पी
होइते आबि रहल अछि। एहने हड़पनिहार छला लखन झा।
वएह लखन झा हीरालालक जमीनपर केश ठाढ़ केलैन।
बुझितो छी आ देखतो छीहे जे सोझा-सोझी चोरी भेल
मुदा चोर ताबे चोर नहि भेल, जाबे ओकरा
अदालतसँ प्रमाण-पत्र नइ भेटत।

ओना, कानूनक नजरिये भलेँ लोक चोर नहि कहौ मुदा समाजक बीच तँ ओ मने-मन चोर मानले जाइए।

संजोग हीरालालक पक्षमे छेलैन्हे। संजोगक माने ई जे खेत तँ हीरालालक घरे लग छेलैन, तैसंग रामकिसुनक प्रभावक भजार सेहो केतेको मोर्चापर, समाजमे भइये गेल छेलैन। ऐसँ पहिने रामकिसुन सिकमी जमीन कब्जा कऽ चुकल छला, तँए मनमे उत्साह सेहो रहबे करैन। हीरालालक जमीनक मुकदमासँ पहिने लखन झा नीक चोट समाजमे खा चुकल छला। माने ई जे एहने फर्जी केशमे दिनेश झा सभ समांगकेँ, माने लखन झाक सभ समांगकेँ, भरि मन डेंगेनौं छला, जमीनो अपने कब्जामे रखलैन आ कोर्टसँ मुकदमो जीत लेलैन। तइसँ लखन झाक मन समाजमे टुटल रहबे करैन, मुदा दुर्गापूजाक पछाइत, माने 1969 इस्वीक पछाइत, नव शक्तिक जोड़ भेटलैन।

कमलपुरक दुर्गापूजासँ पहिने कमलपुरक समाजक रंग-ढंग किछु दोसर रंगक छल, जे बहुत किछु दुर्गापूजाक पछाइत बदलबो कएल आ

सुधरबो केबे कएल अछि।

साल भरि पहिलुका, माने 1969 इस्वीमे जे कमलपुरमे दुर्गापूजा शुरू भेल, तइसँ साल भरि पूर्व, माने जखन स्वतंत्र देश एक्कैस बर्खक वयस्क मताधिकार प्राप्त कऽ नेने छल, तहियाक घटना छी। खजुरबोनीसँ कमलपुर बरियाती आएल। नीक अजगज बरियातीक छल। नीक अजगज अनैक पाछू पैछला कनारि, कारण छल। कारण ई छल जे खजुरबोनी आ कमलपुरक दूरी आठ कोस , पुरना माइलक हिसाबसँ बीस माइल आ अखुनका किलोमीटरसँ करीब तीस-पैंतीस किलोमीटर अछि। जातीय आधारपर खजुरबोनीबलाकेँ तड़बोनीबलासँ भैंसा-भैंसीक कनारि चलैत छल। जे पैछला तीनू-चारू चुनाव (एम.एल.ए.क) मे बढ़ैत गेल। एकबेर खजुरबोनीबलाकेँ जूता पहिरने तड़बोनीबला दरबज्जाक आगूक रस्तापर चलैत देखलैन तँ हुनका दरबज्जापर बजा कान पकड़बौलैन जे जूता हाथमे उठा गामक सीमा पार करब। तत्काल तँ खजुरबोनीबला अपनाकेँ नि:सहाय बुझि तड़बोनीबलाक विचार मानि लेला, मुदा मनमे आगि लागि गेलैन। तेकरे जवाबमे खजुरबोनीबला अपन जातीय संग्रह करैत ओही दरबज्जापर, माने जइ दरबज्जापर कान पकैड़ जूता हाथमे लऽ गामक सीमा पार करैक आदेश मानने छला, तीन-गैरह माने तीन तरहक नाच नटुआकेँ नचबए लगला। साएसँ ऊपर टायरगाड़ी आ बालि-गाड़ी बरियातीमे छल। बरियातीक संख्या सात साएसँ ऊपर, जइमे जूता-मौजा पहिरने, छत्ता हाथमे नेने, पएरे बेसी बरियाती छला आ अधिकांश गाड़ीपर खाइ-पीबैक वस्तु-जातसँ लऽ कऽ बरतन-बासन छल। अपन समेना, अपन कुरसी, ओना दरबज्जाक आगू जगहो बेसी छल, लगातार तीन दिनक सभ संकल्प केलैन जे जहिना हमरा समाजक लोककेँ कान पकैड़ आदेश मनबौलैन तहिना तड़बोनीबला गौंआँकेँ सेहो मनाएब। तीन दिन तक बरियातीकेँ रोकि नटुआ नचबैत रहब। खजुरबोनीबलाक बेवहारसँ तड़बोनी दलमलित भऽ गेल। खजुरबोनीक सइयो नवयुवक

गामक सभ रस्तापर घुमि सेहो रहल छला। संजोग नीक रहल जे गाममे मुसरी झा पंडीजी छला। मुसरी झा पंडीजीकेँ गाममे सभ दिन कोनो-ने-कोनो बेवहारिक चालिक मादे किनको-ने-किनकोसँ झगड़ा भइये जाइन। जइसँ गाममे पंडीजी असगरे अपन विचारक रहि गेल छला। मुदा तेकर गम पंडीजीकेँ मिसियो भरि नहि छेलैन। सभ दिन नियमित गीता पढ़बो करैथ आ मानितो तँ छेलाहे जे गीता शास्त्र नहि जीवनक अस्त्र छी। जखने मनुक्ख अपन आमद-खर्चक योग क्रियासँ जीवनक योग जोगि-जोगि अस्त्र हथिया लेता तखने ने हथिया नक्षत्र जकाँ मौसममे बदलाउ आनए लगता। जइसँ जीवनक मौसम मासूम बनि मस्तसँ मस्तीमे चलए लगतैन।

समाजक, माने तड़बोनीक, जे मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छला ओ सभ विचार केलैन जे गामक जे अखन दलमल स्थिति बनि रहल अछि, ओ बिना मुसरी झासँ नहि सम्हरत। तँए सभ कियो चलू आ हुनका पकैड़ भार देबैन तखने गामक कल्याण हएत। समाजक लोककेँ दरबज्जापर देखिते पंडीजी बजला-

“किमहर सुर्ज उगल जे सबकेँ थहाथही करैत दरबज्जापर देखै छी..!”

ओना, पंडीजीकेँ गामक सभ जानकारी भइये गेल रहैन। मुदा अपनाकेँ समाजसँ अलग राखि चलैबला मुसरी झाकेँ मिसियो भरि गम नहि रहैन। तँए निर्भीक जकाँ बाजल छला।

मुसरी झाक बात सुनि सभ-सभक मुँह देखए लगला, किनको किछु बजैक साहसे ने होइन जे किछु बजता। पंडीजी दोहरबैत बजला-

“समाज गलती स्वीकार करू, तखन भार उठा सकै छी।”

पंडीजीक साहस देख, माने मुसरीझाक विचारक तजगरी देखि ढोलबा झा बजला- “पंडीजी, गामक भार अहाँ असगरे उठा लेब?”

पंडीजीकेँ अपन अध्ययन-मननपर एतेक बिसवास बनले छेलैन जे एकटा मनुक्ख अगहनमे केतौ सौंसे गामक खेतक धानक बोझ थोड़े उघि सकैए मुदा विचारधारा तँ ओहन शाश्वत गुण छीहे जे एक गामक धानक कोन बात जे सौंसे दुनियाँक खेतक धानक बोझ उघि सकैए..! निर्भीक होइत मुसरी झा ढोलबा झाकेँ जवाब देलैन-

"जँ सौंसे गौंआँ मिलि भार देब तखन किए ने गामक भार असगरे उठा सकै छी।"

पंडीजीक विचारक प्रवाहमे ढोलबा झा बिना दोसर-तेसरसँ विचार नेनहि, अपने फुरने बजला-

"अहाँकेँ सौंसे गामक भार भेटल , जा कऽ सम्हारि दियौ।"

ओना, पंडीजीकेँ मनमे खटकलैन जे ढोलबा झा बुड़िवान लोक अछि, एकरा गप्पक मद्दी देब उचित नहि, मुदा अपनहि दोसर मन प्रेरित केलकैन जे असगरे तँ ढोलबा नहि अछि, संगमे आरो मुड़हन-मुँहगर लोक सभ सेहो छथिन। तँए जखन सभ संगे दरबज्जापर पहुँचलैन तइसँ पहिनहि किए ने सभ मिलि विचारि एकटा बजनिहार बनौलैन। ओना, पंडीजीक मन ईहो कहैन जे अखन तकक जे समाज (गामक समाज) सभ रहल अछि ओ ओहन रहल अछि जेकर डोराडोरि या तँ तइतेँ जकाँ सक्कत मूज जकाँ अछि या तँ काँच सूत जकाँ अछि, काँच सूतक माने भेल जे खुस-खुस टुटैए। पंडीजीक मनमे फेर अपने उठलैन जे मनुक्खोक तँ अपन मनक वेग होइए, ओही वेगानुकूल गामक लोक दबि रहला अछि आ अनगौंआँ बढ़ि रहला अछि। बरियातियोक तँ सभ ओहने नहि छैथ जे समाजक मान-अपमानक महिरमकेँ समान ढंगसँ मानैत होइथ। हो-न-हो कहीं कोनो एहेन घटना ने घटि जाए जइसँ दुनू समाजक नाक -कान कटि जाए। तँए नीक हएत जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी अनगौंआँ सभ गामसँ आदरपूर्वक बहरा जाइथ। सभकेँ, माने समाजक सभकेँ,

आगू बढ़ैसँ रोकैत मुसरी झा बजला-

“जखन हमरा ऊपर गामक भार आएल, तखन ओकर निमरजना करब अपन दायित्व बनैए, अहाँ सभ अपना-अपना ऐठाम जाउ, घन्टा भरिक पछाइत, माने एक घन्टा बीतलापर, सभक कानमे नीक-सँ-नीकतम, सभ समाचार पहुँच जाएत।”

हाँइ-हाँइ कऽ मुसरी झा तमाकुल चुना मुँहमे लेलैन आ छोट पएर रहनौं, माने शरीरक कदक हिसाबसँ, हाँइ-हाँइ डेग उठा बरियातीक जे अगुआ कर्ता छला, माने जिनकर बेटाक बिआहक बरियाती सजल रहैन, तिनका लग पहुँचला। पंडीजीकेँ देखि किनको मनमे कोनो तरहक शंका किए उठितैन। इलाकाक लोक मुसरी झाकेँ जनैत जे घर बनबैक लूरि, छोट जानवर रहितो मूसकेँ जहिना चौपायामे बेसी होइ छै तहिना मुसरी झा पंडीजीकेँ सेहो छैन्हे। आदरपूर्वक हिम्मतलाल, जिनकर बेटाक बिआह रहैन, बजला-

“पंडीजी, अपनेक जे आदेश होइ, मानि लेब।”

अपन भारीपन देखि पंडीजीक अपने मन कहलकैन जे बरियातीकेँ बिना किछु पुछने-आछने धाँइ-दे किछु बाजि देब उचित नहि, तँए मुँह उठा बरियाती दिस केलैन जे जिनका जे किछु हेतैन से मुहेँपर कहता आ मुहाँ-मुहीं ओकरा विचारिकऽ मुड़ियबैत आगू बढ़ब। बरियातीक बीचसँ फोचाइ बजला-

“चुनावमे इलाकाक भोँट लूटि कऽ अहाँक गौआँ अनै छैथ से?”

मुसरी झा बजला- “आब नइ अनता। आगू देखैत अहूँ सभकेँ समयपर पहुँचब अछि, तँए समैयक उपयोग सभ मिलि करू।”

❑ **साभार : अन्तिम क्षण, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 72-77**

आर्थिक दृष्टिसँ जइ रूपेँ मनुक्खक जीवनक गठन होइए तइमे आइ धरि एकरूपता नहि एने जे विषमता हेबा चाही से तँ अछिए। सोभाविको अछिए जे जेहेन आर्थिक उन्नति रहत तेहने ने मनुक्खक निर्माण सेहो हएत। मानि लिअ अहाँकेँ मनमे अछि जे बाल-बच्चाकेँ नीक शिक्षा देब माता-पिताक पुनीत कर्तव्य छिऐन। जेकरा मनमे रोपि कियो माता-पिता अपन संकल्प अपना मनमे स्थापित करै छैथ, मुदा आजुक जे शिक्षा-प्रणालीक बेवहार–खर्चक दृष्टिसँ–बनि गेल अछि तैबीच माता-पिताक मनक संकल्प केतेकाल ठाढ़ रहतैन?

तहिना मर्यादित भोजनो आ आनो-आन बेवहार सेहो अछिए। मर्यादित भोजनक माने भेल सन्तुलित भोजन। जइ गाम-समाजमे (आजादीक समय) साँझक-साँझ चुल्हि नहि पजरै छल तैठाम सन्तुलित भोजन तँ मात्र कल्पनेक विचार ने बनि कऽ रहि जाइए। ई धारणा तँ अखनो जीवित अछिए जे मनुक्खक आयु साए बर्खक अछि, माने मनुख साए बर्ख धरि सक्षम अवस्थामे जीब सकै छैथ, मुदा केहेन जीवन धार बनल रहने मनुक्खकेँ साए बर्खक घाट टपौतैन तहूपर ने नजैर दिअ पड़त। ओना शरीरक रोग माने बिमारीक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, किछु जँ अछियो माने शरीरकेँ सुभोजन, सुकाज भेने-केने, मुदा से केते लोककेँ उपलब्ध छैन, रोगो तँ रोग छी, साध्यसँ असाध्य धरिक अछिए। तैठाम साए बर्खक जीवन धारण करब हँसी-ठट्ठा नहि ने छी।

जेहेन परिवारक स्थिति रहैए तही अनुकूल ने ओइ परिवारक जीवन सेहो बनैए। खाएर जे जेतए बनैए से तेतए बनह। तइसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। पाँच गोरेक अपन परिवार छैन, माने माता-पिता, पत्नी अपने आ एकटा बेटी छैन। जेकरा माने परिवारकेँ, गियानचन जनकपुरक राजा जनकक फुलवारी जकाँ तेना सेवने-सजौने छैथ जे दुनियाँमे एक समृद्ध परिवारक रूपमे ठाढ़ अछि। जइसँ गियानचनकेँ सौंसे दुनियाँ अपन पाँचे गोरेक परिवारमे देखि पड़ि रहल छेलैन। देखियो केना ने पड़तैन? जैठाम गाम-समाजमे माता-पिताक संग बेटा-पुतोहुक बीच दिन-राति गारि-गरौवलि पहरे-पहर होइए तैठाम गियानचनक माता-पिता अपन परिवार बुझि सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक उम्र बितौला पछातियो अपन देहक शक्तिकेँ, अखुनका नवयुवक जकाँ चौरबए नहि चाहै छैथ आ सदिकाल अपन समयानुसार अपन तन-मन-धनकेँ क्रियाशील बनौने रहै छैथ, जइसँ चौबीसो घन्टाक समय हेराएल-बिरहाएल रहै छैन, सएह ने भेल सार्थक जीवन पद्धति। ऐठाम नारदजीक जे ज्ञान सूत्र छैन से नहि कहि रहल छी, ऐठाम एतबे बुझू जे शान्त-चित्त जीवन बना समयक संग ससारैत चलब।

परिवारक बीच माने गियानचनक परिवारक बीच आइ भोरेसँ सभ चहल-पहलमे, सुख-दुखक बीच अपन-अपन काजमे हेराएल छैथ। गियानचनक माए- सुदामा जहिना भोरेसँ पुतोहुक सन्तान जन्मक दर्दक पहिल पीड़ासँ तैयार-तैनात भेल अपन ओरियानमे व्यस्त छैथ तहिना सुदामाक पति माने गियानचनक पिता सेहो आदेशपाल जकाँ घरक दुआरिपर ठाढ़ भेल प्रतीक्षारत छथिए जे जखन जे खगता हएत ओकर पूर्ति करब।

पत्नीक पीड़ा देखि गियानचन जहिना पीड़ाएल-सोगाएल छैथ, तहिना आँखि मुइन माता-पिताक आज्ञाकेँ शिरोधार्य करैले सेहो तैयार छथिए। गियानचनकेँ सोगाएल रहबक कारण छेलैन जे गाममे अनेको

औरतक मृत्यु सन्तानोत्पतिक समय होइत देखि-सुनि चुकल छैथ तँए मन पीड़ासँ घेराएल छैन जे हो-न-हो जँ पत्नी मरि जेती तँ भारी बिपैतमे पड़ि जाएब। दू सालक बेटी अछि, जँ ओ मइटुग्गर भऽ जाएत तँ बिआहो-दान हएत कि नहि। अपना दिस नजैर उठा जखन गियानचन देखै छला तँ देखि पड़ैन जे मातो-पिता आ बेटियोक सेवा-टहल दुनू परानी मिलि करै छी, तइमे जँ पत्नी मरि जेती तखन तँ सोल्होअना भार अपने ऊपर पड़ि जाएत.! अखन अपनेटा काजक भार अछि माने आधा भार कन्हापर अछि तखन दिन-राति कखनो चेन नहि रहै छी आ जखन सोल्होअना भार पड़ि जाएत तखन की दशा हएत..!

चिन्तित गियानचनक मनमे ईहो उठैत रहैन जे जँ भगवान बेटा देलैन आ ओ जीबैत रहल तखन जँ तीन पीढ़ी–पिता, अपने आ पुत्र–एक लकीरमे ठाढ़ हएब तखने ने बच्चाक आत्मभाव प्रवाहित होइत वृद्धक आत्माकेँ पकड़त आ वृद्धक आत्मबल, क्रियागत भेने, प्रवाहित होइत बच्चाकेँ पकैड़ आगूक जीवन ले उद्वेलित करत। यएह ने भेल जीवन धार जे एक दिस प्रवाहित होइत समुद्रमे मिलैए आ दोसर दिस धरतीपर पैदा लैत जाइए। संयोग बनल हँसी-खुशीसँ सावित्रीकेँ बेटा भेलैन। सन्तानक पीड़ासँ पीड़ाएल सावित्री जहिना बेदम होइत हाँफि रहल छेली तहिना सुदामा बच्चा-जन्मक पहिल सेवाक प्रक्रिया पूर्ति करैमे बेदम छैथ। अपन-अपन दायित्वक पूर्ति करैमे परिवारक जखन सभ बेदम भऽ लागि कऽ कर्मगत हएत तखने ने परिवार आँखि उठा दुनियाँकेँ देखैक शक्ति पौत। ई दीगर अछि जे दुनियाँमे जेते अन्हार पसरल अछि तेते इजोतो पसरल अछिए मुदा अन्हार अपन पाशा मारि अपन अन्हरियाक साम्राज्य पसारने अछि। केतौ धर्मसँ धर्मान्ध तँ केतौ धनसँ धनान्ध, केतौ जातीय उन्मादसँ आ केतौ साम्प्रदायिकतासँ..!

मुदा किछु होउ, ईहो तँ सभक मनमे छैन्हे जे शान्तचित्त आनन्दसँ जीवन बिताएब श्रेष्ठ जीवन भेल। जखन मनुख, अखन तकक जीवक जीवनक इतिहासमे, सभसँ नीक सृजन छीहे। तैसंग सभ किछु

मनुक्खकेँ जन्मक संगे-संग भेटते अछि, माने सभ किछु कर्त्ते-धर्ताक रूपमे मनुक्खकेँ भेटते अछि तखन जीवनक कोन अभिलाषा शेष बँचल जे मनुक्खकेँ नहि भेट सकत। खाएर जे अछि तइसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे जहिना सन्तानोत्पत्तिक समय पत्नीकेँ असाध्य पीड़ा उठबए पड़ै छैन जेकर फलाफल मातृत्वक संग भविष्यक खबार पबिते छैथ। तही बीच बेटा जन्मक नाओं सुनि गियानचन सभ किछु बिसैर आनन्दमे विभोर भऽ गेला। ओही बिसरल विभोरमे, जहिना खेत परती रहलापर गोटे-गोटे कोनो गाछ जनमए लगैए तहिना गियानचनक मनमे जनमलैन। जनमलैन ई जे बेटा धन छी, महाधन, मुदा महाधन तँ तखन ने बनत जखन महापथ पकैड़ महिकर्मकेँ अडेज आगू देखैत चलत। तइले तँ होश चाही। होश तँ तखने औत जखन होशगरहाक होशगर होश पकैड़ होशियारीसँ होशमे चलैक बोध हेतइ...। एकाएक गियानचनक मन पसीज ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम पिता-पुत्रक बीच सीमारेखा अछि। होशमे आबि गियानचन अपन पिता दिस देखि विचारए लगला जे जखन हमर जन्म भेल, बच्चा छेलौं, विद्यालय जेबाक समय छल। मुदा गामक कोन बात जे परोपट्टामे पढ़ैक साधन माने स्कूल नहि छल, जइसँ पिताजी हमरा विद्यालय नहि पठा सकला मुदा अखन तँ से नहि अछि, गामोमे अनेको रंगक अनेको स्तरक शिक्षण संस्थान सभ बनियेँ रहल अछि आ बनलो तँ अछिए। जँ बेटा धनक आगमन परिवारमे भेल तँ ओइ बच्चाकेँ पढ़बैक पाछू अपन जीवन दॉवपर लगा देब। अपन संकल्पक संग गियानचन आगू बढ़ि दू सालक बेटी लग पहुँचला। बेटाक आगम सुनि गियानचनक मन खुशीसँ, आगिपर चढ़ल लोहियाक दूध जकाँ आनन्दसँ उधिया रहल छेलैन। जन्मक समय बच्चाकेँ केते दर्द सहन करए पड़ैए आ बच्चाक माएकेँ केते दर्दक पीड़ा होइ छैन से तँ वएह जनै छैथ, तइ दर्दमे पिताक भागीदारी केते होइए..!

❑ **साभार : संकल्प, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 09-13**

महाभारतक कौरब-पाण्डवक लड़ाइ जकाँ कामेसरक
मनमे गाम-शहरक बीचक दूरीक द्वन्द्व उठि चुकल छल।
मुदा मनक दृढ़ता गामक प्रति कामेसरकेँ एते जागि चुकल
छेलै जे नइ जाइक सभ बाधाकेँ जहिना पोड़ो-सागक
लत्तीकेँ हँसुआ खड़ैर कऽ काटि दइए तहिना विचारक
हँसुआ खड़ैर कऽ काटि देलक। एकाएक कामेसरक मनमे
विचारक नव उत्साह जागल जे जहिना पिताजी गामसँ
पड़ाकऽ माने जीवन नइ चलने, कलकत्ता एला तहिना हमहूँ
कलकत्तासँ इंजीनियर बनि गाम जा रहब। मुदा हमरो तँ
बुझए पड़त जे जैठाम अपन जीवनकेँ स्थापित
करए चाहै छी तैठाम अनुकूल
परिवेश केना बनत?

अनेको प्रश्नक संग अनेको उत्तर कामेसरक विचारकेँ घेरनहि छल। तैपर पत्नी–सुभद्रा–बजारोन्मुखी छथिन। रहबो किए ने करती। सुभद्रा जिलास्तरक ऑफिसरक परिवारक पलित-पोसित छैथ। ओना, मनक संकल्पो तँ ओहन बन्धन छीहे जे अनका तोड़ने नहि, अपनेटा तोड़ने टुटैए। तहूमे विद्यालयसँ निकलल टटका नवयुवकक संकल्प।

कलकत्ताक अन्तिम विदाइक भेँटक रूपमे कामेसर बनर्जीदादासँ असिरवाद लिअ हुनका ऐठाम पहुँचल।

सात साल पहिने बनर्जीदादा सरकारी सेवासँ निवृत्त भऽ गेल छला। समयक अनुकूलता पेब माने वेतनक बढ़ोत्तरी भेने बनर्जीदादा अखनो पेंशनक रूपमे ओते रूपैआ मासे-मास उठैबते छैथ जेते शुरूमे सेवारत् वेतन उठबै छला। मुदा महगाइ बढ़ने, किछु कम तँ भेबे केलैन। ओना, जखन वेतनभोगी जीवन छेलैन तखन परिवारक भारो बेसी छेलैन

जेकरा निमाहब अनिवार्य रहैन, से आब नहि रहलैन। तहूमे दुनू बेटा तेना कमाइ छैन जे मुँहमंगा पाइ दइले तैयार रहै छैन मुदा अपनहि पेंशन ओते भेटि जाइ छैन जे बेटाक मदैतिक खगते ने छैन। तँए सदिकाल खुशी-खुशी कहैत रहै छथिन जे बौआ, अपन कमाइसँ अपन जीवन गढ़ू।

आजुक परिवेशमे खगता नहि छैन, कने कठाइन सन प्रश्न अछिए। आजुक तेहेन आर्थिक परिवेश बनि गेल अछि जे सभकेँ माने धनीक-गरीब सभकेँ, पाइक खगता सदिकाल रहिते अछि, किए तँ जिनगीक फालतू आवश्यकता तेते बढ़ि गेल अछि जे अनेरो लोक श्रमकेँ हीन बना भोगकेँ अपना रहल छैथ। मुदा से बनर्जीदादाकेँ नहि छैन। शुरूहेसँ जीवनक गठन तेना गढ़ि लेने छैथ जे जनेउ जकाँ गठिया गेल छैन, तँए साँझ-भोर गायित्री जाप करैमे सरपट दौड़ चलै छैन।

बनर्जीदादाक ऐठाम कामेसर पहुँचला तँ पता लगलैन जे अपने दस बजे दिनसँ वौड़ाएल छैथ, केतए छैथ तेकर कोनो ठेकान नहि। बान्हल जिनगीक ने निर्धारित जीवनो होइए आ जगहो निर्धारित रहैए, मुदा खुलल-खिलल जीवनक आड़ि-धुर अछि नहि। ओना, कामेसरक मनमे उठि चुकल छल जे जखन काल्हि कलकत्ता छोड़ि जाएब अछि तखन दोहरा कऽ अबैक आशा करब नीक नहि। एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे विदाइक तैयारीमे बिसैर जाइ। तैबीच बनर्जीदादाक पत्नी सुनलैन जे एक गोटा भेँट करए आएल छैन। सुनिते सुवोधनी कोठरीसँ निकैल कामेसर लग आबि बजली-

"चलू, दरबज्जापर बैसू। जे घड़ी जे पहर ने अपने पहुँचला अछि।"

निर्भीक भऽ कऽ सुवोधनी बाजल छेली, किए तँ मन गवाही दइये देने छेलैन जे निश्चितकेँ ने समय होइए मुदा अनिश्चितकेँ समय की हएत। कहलो जाइ छै, 'उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान!' अखनो आबि सकै छैथ आ दू घन्टाक पछातियो आबि सकै छैथ। हम अनुमानसँ बजलौं अछि आकि

हुनकर माने पतिक, काज सम्हारैत बजलौं अछि। ओना अपना मिथिलांचल आ बंगालक महिलाक बीच दूरी अछिए। कारण अनेको अछि, शहर-देहातक हुअए कि साक्षर-निरक्षरक दूरी, कि सम्पन्न-विपन्नक दूरी हुअए आकि जीवनक मर्मक संघर्षमय जीवन हुअए। मु दा से अखन नहि।

कामेसरकेँ दरबज्जापर बैसते सुवोधनीक पोती, चाहो आ पानियोँ नेने पहुँचली। तैबीच बनर्जीदादा सेहो पहुँचला। दिन भरिक थाकल, तँए मनमे रहैन जे पहिने नहाएब, पछाइत जे हएत से हएत।

बनर्जीदादाकेँ देखिते कामेसर बाजल-

"दादा, काल्हि कलकत्ता छोड़ि गाम चलि जाएब। जहिना पिताजी जीबैले कलकत्ताक बाट पकड़लैन तहिना हमहूँ गामक बाट पकैड़ गाम चलि जाएब। जीबैक रास्ता भेट गेल, दुनियाँमे केतौ स्वतंत्र रूपमे जीब सकै छी।"

एकसंग कामेसरक विचारमे बनर्जीदादाकेँ सभ किछु भेट गेलैन। सभसँ पैघ विचार 'स्वतंत्र जीवन पएब' छेलैन। बनर्जीदादा एक्के शब्दमे बजला-

"अहाँ संग हमर शुभकामना अछि, कामेसर..!"

❑ साभार : मोड़पर, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 110-112

जखने सामाजिक क्रियामे कमी औत तखने समाजक बीच सामाजिक धार एकोशिया भइये जाएत। जइसँ धारक प्रवाह–सामाजिक धारा– एकोशिया होइत बहैत-भँसैत सुखबे करत। जखने एका-एकी सुखब शुरू भेल तखने सुखाइत-सुखाइत अल्पांशसँ बहुलांश भइये जाएत।

सुपुट शब्दमे सुभावी बजली- “श्यामक बहिन सुवासिनी चारू माय-धी छी। वेचारीकेँ सासुरमे बड़ दुख होइ छै , जइसँ अपन माए-बापकेँ..?”

बजैत-बजैत सुभावी चुप भऽ गेली। गपक लाड़ैन चलबैत जीबेन्द्र बजला- “बीचमे किए मुँह बन्न केलौं। ऐठाम कियो आन अछि जे मुँह खोलैसँ सकुचाइ छी।”

पतिक सह पेबिते सुभावीकेँ अपन विचारक वाण बजैक सह भेटलैन। मुख्य विचार दिस सहटैत बजली- “आब कहू जे एहेन होइ जे माता-पिता अपन बेटा-बेटीकेँ जिनगीक ठौर धड़ा देलैन सएह जँ गारि पढ़ैन से नीक भेल?”

सुभावीक विचार सुनि सुवासिनी थकमका गेली मुदा जगमोही स्वीकारि बाजल- “नहि!”

विचारकेँ सम्हारैत जीबेन्द्र बजला- “बीतल बात केँ खण्डण-मण्डण हेबा चाही जे कि नीक भेल कि अधला भेल, ओकर जँ निराकरणक दृष्टिसँ किछु विचारब तँ ओ समय सापेक्ष थोड़े हएत जे ओकर प्रभाव घटनापर पड़तै।”

पिताक बात सुनि जहिना धीरेन्द्र जगमोही दिस तकलक तहिना जगमोही धीरेन्द्र दिस ताकए लगल। मुदा बाजल दुनूमे सँ कियो ने। ओना, मनपंक्षी एक दोसरसँ लोल मिलानी करैत मने-मन स्वीकारि जरूर लेलक जे अनेरे गाड़ल मुरदाकेँ उखारि पोस्टमार्टम करब नीक नहि। अपना दुनू गोरे समाजशास्त्र पढ़ै छी तँ बड़बढ़िया मुदा इतिहास पढ़निहार की तखन डोका-कॉकोर बीछत। ओ तँ वएह खोजत। चुपा -चुपी देखि जीबेन्द्र बजला- "देखियौ, गामक अनाड़ियो-धुनाड़ी लोक जे समाज सूत्रकेँ नहि जनैए ओहो बजिते अछि जे जाबे धरतीपर एकोटा धर्मात्मा नइ अछि ताबे ई धरती असथिर केना अछि। जखने धरतीपर सँ धर्मात्मा मेटा जाएत तखने ई धरतियो मेटा जाएत।"

जेना सभसँ बेसी बुझैमे सुभावियेकेँ आएल होनि तहिना बिच्चेमे बाजि उठली- "हँ, से तँ हेबे करत।"

पत्नीकेँ सम्हारैत जीबेन्द्र बजला- "एना धड़फड़ा कऽ बजने नइ ने हएत। जखन कोनो गाम आकि गामक समाजक विषयमे विचारै छी तखन नीक जकाँ समाजकेँ देखए पड़त। अखनो सभ गामक किछु परिवार एहेन अछिए जे बेटाक बिआहमे दहेज लेबकेँ पाप बुझै छैथ आ किछु गोरे नीको बुझिते छैथ। दोहरी रस्ता चलने समाजक बीच विघटन हएत। जइसँ अनमेल बिआहक चलैन बढ़त। अनमेलो भेने तँ परिवारक विघटन हेबे करत किने।"

जीबेन्द्र जेना विचारक पाराग्राफ बदलए चाहलैन तहिना चुप भऽ गेला। जइसँ फेर चुपा-चुपी पसैर गेल। सबहक मन अही तारतम्यमे लगि गेलैन जे जाह ई की भेल जे फेर चुपा-चुपी पसैर गेल। दूटा स्त्रीगण तँ साँझ-सँ-भोर आ भोर-सँ-साँझ अपन बोलीसँ गामकेँ अलगेनहि रहैए आ ऐठाम तँ उम्रोक हिसाबसँ आ पढ़लो-लिखलक हिसाबसँ बैसले छी, तखन किए एना भेल अछि। ओना, दहेजक नाओं सुनि सुवासिनीक मन कुकुआ कऽ कड़ुआ लगल छेलैन्हे , मुदा समुदायमे बैसल देखि अपनाकेँ

संयमित केने छेली।

थोड़ेकालक पछाइत जिज्ञासा करैत सुवासिनी बजली- “काकाजी, मास दिन-ले ऐठाम एलौं हें, भरि आम रहब।”

जीबेन्द्र- “नीक विचार सोचि एलौं। नीक जर्को तँ हम जानि नहि रहलौं हेन तँए पहिने अपन ठौर -ठेकान कहि दैतौं ते विचारक आदान -प्रदान करैमे नीक होएत।”

आँखिक इशारा सुवासिनी जगमोहीकेँ देली।

जगमोही आदर सूचक शब्दमे बाजल- “नानाजी, हमर नाम जगमोही छी। बी.ए. ऑनर्समे पढ़ै छी। समाजशास्त्र विषयमे ऑनर्स रखने छी।”

जगमोहीक परिचय सुनि जीबेन्द्र बजला- “धीरेन्द्रो तँ पटनेमे पढ़ैए। दुनू गोरेमे परिचय -पात छह कि नहि?”

जीबेन्द्रक बात (प्रश्न) सुनि जगमोही सकपकाएल, सकपकेबो उचिते अछि। उचित ई जे आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि ओ सही दिशासँ हटि गलत दिशामे बढ़ल जा रहल अछि तँए अपनाकेँ संयमित राखबोक खगता तँ भइये गेल अछि। अपनाकेँ संयमित करैत जगमोही बाजल- “नीक जर्को तँ धीरेन्द्रसँ परि चय नहि अछि मुदा चिन्हा-चीन्ही जरूर अछि।”

जीबेन्द्र- “कए भाए-बहिन छह?”

‘भाए-बहिन’क नाओं सुनि जगमोहीक फेंच जेना खसि पड़ल। फेंच खसिते उदास मने बाजल- “तीन बहिनियेँटा छी।”

एक तँ भाए नहि, दोसर तीन बहिन सुनि जीबेन्द्रक मन खन-खन-खिन-खिन होइत झहरए लगलैन। मुदा विचारक वाणक आगू शिवजीक धनुष रहितो समाजोक पहाड़ आ जिनगियोक पहाड़ तँ आगूमे अछिए। तँए धॉइ-दे किछु विचार करब जल्दवाजी हेबे करत। जखने उचितसँ कम

समयमे कोनो काजकेँ करैक जिज्ञासा जगत तखने जिज्ञासुकेँ जान-परान लगबए पड़तैन। जँ से नइ लगौता तखन बिसवासप्रद फल भेटैक सम्भावनामे असंदिग्धता रहबे करत किने। ओना, जीबेन्द्रक परिवारक गति-विधि सपाट छैन। ओना, सपाटोक विभिन्न रूप अछि। जेना सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक, बेवहारिक इत्यादि-इत्यादि मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे बेटा-बेटीक बिआह, सम्बन्ध आ बेवहार। तइ मानेमे जीबेन्द्रक परिवारक स्पष्ट इतिहास जीवित छैन जे बेटा-प्रति जे दहेजक रूपमे 'हम एते लेब ओते लेब' से अखन धरिक पारिवारिक इतिहास नहि रहल छेलैन। जे धारणा अखनो जीबेन्द्रक मनमे जीवित छैन्हे। ओना, प्रेमनगरमे खाली जीबेन्देटाक परिवारमे एहेन छैन से बात नहि, आनो-आनो जातिक समाजमे अछिए। जइसँ परिवारमे बेटा-बेटीकेँ जुआन माने वयस्क, होइते अधिकार भेट जाइए। जइसँ माता-पिताक विचारमे लोच अबैए। लोच आनबो तँ जरूरी अछिए। पिता-पुत्रक बीच आ परिवार परिवारजनक बीच केना सौहार्दता बनल रहत, ई तँ मनुख होइक नाते मनुक्खेकेँ सोचि-विचारि आगू डेग बढ़बए पड़त।

दहेजेटा परिवारमे पीढ़ीक (वंशगत सम्बन्ध) बाधा नहि अछि। दहेजक अतिरिक्तो विघटनक अनेको दुआर खुजले अछि। अखन बेसी नहि सिर्फ एकेटा- वैचारिक। सभ मनुखमे चाहे ओ पुरुख हुअए आकि महिला, अपन-अपन गुण-धर्म तँ किछु-ने-किछु रहिते अछि। ओइ गुण-धर्मकेँ बेवहारिक जिनगीक संग केना सामंजस्य कएल जाएत, ई दायित्व तँ सबहक परिवारमे बनिते अछि। विचारक दुनियाँमे उगैत -डुमैत जीबेन्द्र बजला- "केते दिन आरो पढ़बह?"

जगमोही- "परिवारक स्थिति देखैत बी.ए. तकक विचार केने छी। जइमे आठ मास आरो बाँकी अछि।"

जीबेन्द्र- "आगूक लेल की सोचै छह?"

आगूक बात सुनिते जहिना गरदैन कटल मनुखक धारा-प्रवाह

मलिनता पसरए लगैत तहिना जगमोहीक विचारक मलिनता एकाएक मनकेँ छाड़ि देलक। कटैत रस्ता टुटैत जिनगीक बीच मझधारमे दहाइत-भँसियाइत जगमोही बाजल- "अखन किछु ने।"

ओना, जीबेन्द्रक मनमे रहैन जे जगमोही अपन किछु-ने-किछु उदेस बना नेने हएत, मुदा अन्ना-गाहींस जिनगी देखि जगमोही किछु ने विचार केने छल। जे उचितो तँ छेलैहे। ऐ राक्षसी समाजमे नारीक जिनगीक संग खेलवार भइये रहल अछि किने। जगमोही अपन विचारानुसार बाजल छल, मुदा तेमहर धियान जीबेन्द्रक नहि गेल छेलैन। ओ गेलैन जगमोहीक बजला पछाइत। बजला- "बाबू, की करै छथुन?"

जगमोही- "पटनेमे नोकरी करै छैथ जइसँ परिवार चलैए।"

ओना, जगमोहीक बात सुनि अनेको विचार जीबेन्द्रक मनमे जगलैन। मुदा सभ विचारकेँ तहियबैत धीरेन्द्रकेँ कहला- "बौआ, तोरो तँ अपन हाथक रोपल आम छहे। सभकेँ खुआबह।"

गुलाव खास आ बम्बइकेँ धीरेन्द्र पटनासँ एला पराते घरमे पाल चढ़ा नेने छल जे दू दिनमे खाइ -जोकर भइये गेल छल। एक-एकटा आम सभकेँ हाथमे लेला पछाइत जीबेन्द्र बजला- "भरि आम तँ रहबे करबह?"

जगमोही- "हँ।"

जीबेन्द्र- "ऐ बेर अपना प्रेमनगरमे, खूब सहजोर आम फड़ल अछि।"

मुस्की दैत जगमोही बाजल- "नानाजी, साले-साल आएब।"

विचारक प्रवाहमे जीबेन्द्र भँसि गेला। अनायास मुहसँ खसि पड़लैन- "साले-साल किए, सालो-साल भरिले रहि जाह।"

नहलापर दहला फेकैत जगमोही बाजल- "ऐ गामक लोक रहए देता तखन ने?"

❑ **साभार : आमक गाछी, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 91-96**

विपरीत दिशामे आगू बढ़ैत सुखदेव ओतए पहुँच गेल छल जेएत मिथिलाक धरोहरकेँ खेलक गेन जकाँ गुड़का लतियौल जाइत। जे सुखदेव पहिने बैंक समयसँ जाइ-अबै छल ओ मास-मास दिन डेरासँ हेराए लगल। असगरे रूक्मिणी गुमसैर-गुमसैर घरक बीच समय गमबैत। मनमे सदिखन उठए लगलैन- 'ई कोन जिनगी भेल?'

सुखदेव आ रूक्मिणी दुनूक विचारधारा सदैत टकराइत। टकड़ेबो केना नइ करैत। एक दिस किसानी संस्कार आ संस्कृतिमे पलल मिथिलांगना, दोसर दिस हाल-सालमे बसल भदबरिया माछ सदृश जिनगी।

बिआहक चौदहम बर्खक आक्रमण रूक्मिणीकेँ बरदास नइ भेल, जेकर फल दुनू दिस भऽ गेल। आक्रमण भेल जे अखन धरि विपरीत दिशामे आगू बढ़ैत सुखदेव ओतए पहुँच गेल छल जेएत मिथिलाक धरोहरकेँ खेलक गेन जकाँ गुड़का लतियौल जाइत। जे सुखदेव पहिने बैंक समयसँ जाइ-अबै छल ओ मास-मास दिन डेरासँ हेराए लगल। असगरे रूक्मिणी गुमसैर-गुमसैर घरक बीच समय गमबैत। मनमे सदिखन उठए लगलैन- 'ई कोन जिनगी भेल?' बेटा देहरादूनमे पढ़ैए, अपने भरि दिन निपत्ते रहै छैथ, असगरे माटिक मुरुत बनि ओगरबाहिक भाँजमे रहब, की यएह एक पढ़ल-लिखल नारीक कर्तव्य भेल? हजारो मील दूरसँ आबि बसल छी , बोली-वाणीसँ लऽ कऽ क्रिया-कलापमे अन्तर अछि।

एहेन स्थितिमे केकरो-ऐठाम जाएब-आएब केते उचित हएत? अखन धरि घरसँ नइ निकललौं, तैठाम लोककेँ लगले चीन्हि केना लेब? तहूमे लुटिहारा समय से आबि गेल अछि। धन-धर्म सबहक लुट्टीस दिन-देखार भऽ रहल अछि। बत्तीसम बर्खक अवस्थामे सुखदेव आ रूक्मिणीक सम्बन्ध विच्छेद भऽ गेल। एकटा बेटा रहने (जे दूनमे पढ़ैए) तँइ भेल जे अपन निर्णय बेटा स्वयं करत। बाँकी सम्पैतमे अपन नैहरक देल जे किछु छेलै से लऽ कऽ रूक्मिणी पतिक घरसँ निकैल गेल। मुदा हाथक चुड़ी चुनचुनाइते छइ। अपन सासुरक अन्तिम पराउ लग रूक्मिणी गुमे-गुम पहुँच गेली, मैयाँकेँ विस्मित चेहरा देखि रूक्मिणी उत्तेजित आवाजमे बाजल-

"मैयाँ, पाबैनक दिन छिऐ। तहूमे नर्क-निवारण चतुर्दशी। औझुके उपास ने नर्कक बेड़ी काटक। आकि श्राद्ध-कर्मक भरोसे रहत। की मने-मन सोचै छथिन?"

मने-मन की सोचै छथिन, सुनि सरोजनी-मैयाँक अलसाइत मन फुड़फुड़ा कऽ जागल। बजली- "रूक्मिणी, अखन अहाँ दुनियाँक तीत-मीठ ओते कहाँ बुझलौं हेन...।"

आगू बजैक बात सरोजनी-मैयाँक पेटेमे रहैन तैबीच रूक्मिणी चाँइ-दे चनचना गेली-

"से किए कहै छथिन, मैयाँ?"

बाल-बोध बुझि मैयाँकेँ मिसियो भरि लहैर नइ उठलैन। पोखरिक शान्त पानि जकाँ मन असथिरे रहलैन। बजली- "रूक्मिणी, मनमे उठि गेल छल जे पैंतीसे बर्खक अवस्थामे विधवा भेल रही आ अहूँकेँ देखै छी जे अही उमेरमे पतिसँ सम्बन्ध विच्छेद भेल।"

मैयाँक बात सुनिते रूक्मिणी चमैक कऽ चमचमेली- "मैयाँ, हिनकर अखन केते उमेर छैन?"

"सत्तैरम छी।"

"परिवारमे के सभ छैन?"

"कियो ने। असगरे।"

मैयाँक असगर सुनि रूक्मिणीक मनमे ठहकल अपनो जिनगी तँ भरिसक तहिना अछि। बाजल- "असगर लेल लोक घर-दुआर बना किए रहत, ओ परिवार केना भेल?"

रूक्मिणीक प्रश्न सुनि ठहाका मारि मैयाँ हँसली। प्रश्न उठबैत बजली- "परिवार किए ने भेल। परिवारेक समूह ने समाज छी। तइले ई कहाँ फुटौल अछि जे एक गोटेक परिवार परिवार नइ भेल आ दस-बीस गोटे रहने परिवार भेल। एक गोटेक असगरूआ परिवार भेल। मुदा जरूरतो तँ परिवारोक ओकरे हेतै किने।"

मैयाँक विचारकेँ सुहकारैत रूक्मिणी बाजल-

"मैयाँ, ईहो असगरे छैथ आ हमहूँ असगरे छी। तैबीच ई पूर्ण जिनगी जीब लेलैन आ हम लसैक गेल छी। तँए हमरो हाथ पकैड़ अपना दिस खींच लौथु जइसँ हिनके जकाँ टहलैत -बुलैत जिनगी रहत।"

रूक्मिणीक आत्मा-रामकेँ अकाइन मैयाँ बजली- "रूक्मिणी, अपन जिनगीक लोक अपने मालिक छी। जेहेन बना जीबए चाहब तेहेन बना जीब सकै छी। मुदा समाजक बीच परिवार आ परिवारक बीच बेकती होइत अछि जइ दूरीकेँ टपि आगू बढ़ ब असान नइ अछि। अपने बात कहै छी, जे माता-पिता बिआह करा घरसँ अलग कऽ देलैन, जैठाम केलैन ओ ठौर ढहि गेल। तैठाम अहीं कहू जे दुनियाँमे के अपन रहल। केतए जैतौं कोनो कि हमहींटा एहेन छी आकि पुरुखो सभ छैथ। गोसैंयो अस्त होइपर भेल, दोसर दिन निचेनसँ आरो गप करब।"

❑ साभार : सधवा-विधवा, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 20-23

..मिथिलांचलक आध्यात्मिक दर्शन केना दबौल गेल अछि। मिथिला आध्यात्म दर्शनक भूमि रहल अछि, जे दर्शन जिनगीक वास्तवीक मूल्यक मूल्यांकन केने अछि।

जहिना भूखसँ पेटमे बगहा लगै छै तहिना सुरजाकाकाकेँ बुधि-सँ-विवेक धरिमे बगहा लगए लगलैन, जइसँ जहिना कनैत बच्चाकेँ गुदगुदी लगा हँसौल जाइए तहिना कक्काक मन गुदगुदेलैन। दरबज्जापर अबिते पहिने चारू गाएकेँ देखि पानि पीओलैन। उमसगर समय देखि गाएकेँ नहबैक विचार केलैन मुदा लगले मेघ झँपा हवा उठि गेलइ। किछु विश्रामक समय भेटलैन। तमाकुल चूना खेलैन। खाइते मनमे उठलैन जुग-जुगक खेलौना कोसी-कमला भऽ गेल अछि।

बान्ह टुटलापर आकि छहर टुटलापर गामक गाम उजैर जाइए। लोक मरै छै, माल-जाल मरै छै, तैसंग फल-फुलवाड़ी, गाछी-कलम नाश होइ छइ। मुदा एक दिस बाढ़ि अबिते विनाश शुरू होइ छै तँ दोसर दिस रंग-बिरंगक महजाल फेकब शुरू होइ छइ। तेतबे नहि, गामे-गामे रंग-रंगक खिस्सा-पिहानीक माध्यमसँ रंग-रंगक विचार सेहो उड़ए लगै छइ। केम्हरो उड़ै छै जे सात बहिन कोसी संगे मिल समुद्र धरिक यात्रा करती तँ केम्हरो उड़ै छै कोसी-कमलाक मिलानी हएत..! ..मिथिलांचलक आध्यात्मिक दर्शन केना दबौल गेल अछि। मिथिला आध्यात्म दर्शनक भूमि रहल अछि, जे दर्शन जिनगीक वास्तवीक मूल्यक मूल्यांकन केने अछि।

जहिना अन्धविश्वासक बीच समाज बिखण्डित अछि तहिना शासन पद्यति बिखण्डित अछि। रंग-बिरंगक जाल पसरल अछि। मिथिलांचलक पुर्बी छोरसँ पच्छिमी छोर धरि करीब पचासोसँ ऊपर बोहैए। जे उत्तरसँ नेपाल होइत अबैए। खाली मधुबनी जिलाक सीमानमे बीस-पच्चीसटा धार बोहैए। चीन-भारतक बीच नमगर-चौड़गर पहाड़ी

इलाका अछि। नमहर-ऊँचगर रहने बरफो बनै छै जे पघैल-पघैल पानि बनि बहबो करैए। तँए किछु धार बरहमसिया आ किछु बरसाती अछि। तैसंग समुद्रे जकाँ गाम-गामक चौर (नीचरस जमीन) सभ अछि। जइमे लीढ़-समाढ़ भरल छै आ सालो भरि परता पड़ल रहै छइ। धारोक अपन-अपन गुण होइ छइ। किछु धार असथिरसँ एक्के जगहपर साइयो बर्खसँ बोहैत आएल अछि आ अखनो अछि। मुदा किछु धार कटनमा सेहो होइए। मिथिलांचलक कोसी-कमला तही श्रेणीक छी।

मिथिलांचलक पुर्बी सीमासँ लऽ कऽ मधुबनी जिलाक पुर्बी छोर धरि पकैड़ धरतीकेँ तेना कऽ कोसी तोड़लक जे उपजाउ माटि या तँ भाँसि कऽ समुद्रमे चलि गेल वा बालुसँ तोपा गेल। बालुक एते मोट पड़त पड़ि गेल अछि जे उपजाउ शक्तीए छीण भऽ गेल छइ। तहिना कमला मधुबनी जिलाक बीचो-बीच बोहि माटिक उपद्रव केने अछि। जहिना कोसी पुबसँ पच्छिम मुहेँ तहिना कमला पच्छिमसँ पुब मुहेँ आबि सौंसे मिथिलांचलक माटिक उर्वरा शक्ति नष्ट कऽ देने अछि।

सुपौल, मधुबनी, दरभंगासँ होइत दच्छिनमे गंगासँ घेराएल अछि। मिथिलांचलक धार उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ आ गंगा महरानी पच्छिमसँ पुब मुहेँ। उकड्ड बनि अछि। जे गंगा भोजपुरी क्षेत्र टपिते मिथिलांचलक दच्छिनी छोर बंगालक खाड़ी पहुँचैए। मिथिलांचलक उपजाउ वस्तु एक-रंगाह रहने बंगला देशक ढाका तक लोकक आवाजाही। किछु बेपारोसँ आ किछु गरीबक रोजगारोसँ। भोजपुर क्षेत्रसँ लऽ कऽ गंगाक उत्तरी क्षेत्रक, मिथिलांचलक खानो-पान आ जिनगीक आनो-आनो काजमे एकरूपता आएल। ओना अहुना केतौ धानक खेती हएत तँ जहिना एकठाम धानक बीआ खसौल जाइए, ओकरा उखाड़ि हाथसँ रोपल जइए आ काटल जाइए, ई सम्बन्ध तँ बनिते रहल अछि आ बनिते रहत। एक तरहक जिनगी जीनिहारक बीच जिनगीमे एकरूपता अबै छइ। प्राग ज्योति, द्वार वंग, इत्यादि शब्द किए बनल? खाएर जे हौ।

❑ **साभार : भादवक आठ अन्हार, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 11-12**

खेतीक स्थिति बिगड़ने खेती-आश्रित कल-कारखाना केना लागि पौत? कारखानाक बात तँ कनी दूर, जे लगक काज भेल जे बिनु घासक खेतीसँ मबेशी पालन केना हएत? गीत गौने तँ नहि हएत जे मिथिलांचलमे दूधक धार बोहै छेलइ।

दरभंगा-समस्तीपुरसँ पूब आ सहरसासँ पच्छिम कुशेसर स्थान इलाकामे अखनो उजाड़ि पड़ल छइ। केना ने पड़त? जइ इलाकामे किछु क्षेत्र बारहो मास आ किछु क्षेत्र तीन मास-सँ-नअ मास धरि पानिमे डुमल रहैए ओइ खेतमे माटिक उपजा केना हएत? माटि रहितो पानि बनल अछि। मनमे अबिते विचार बढ़लैन। जैठाम पानिक ई स्थिति रहत तैठाम माठिक वा पानिक उपयोग केना हएत? ओहन खेती नइ भऽ सकैए जे माटिक छी। गाछी-कमल नइ लगि सकैए। बड़ हएत तँ बोनही जमुनी हएत। जे अपने अष्टावक्र रूपमे जीवन धारण करैत। मुदा जे होइ इनारक जौमैठ आ पोखरिक घाटक अधिकार तँ ओकरा छइहे। खेतीक स्थिति बिगड़ने खेती-आश्रित कल-कारखाना केना लागि पौत? कारखानाक बात तँ कनी दूर, जे लगक काज भेल जे बिनु घासक खेतीसँ मबेशी पालन केना हएत? गीत गौने तँ नहि हएत जे मिथिलांचलमे दूधक धार बोहै छेलइ। जैठाम भोजनक असुविधा रहत, काँच घर रहने रखैक असुविधा रहत तैठाम घास कटैबला, दुध दुहैबला हाथक कोन काज। दहेला पछाइत समय खटिएने रोपैक समय नइ रहै छै, जँ जीबट बान्हि रोपलो जाइ छै तँ फसिल बिलम भेने ऐगलाकेँ आगू धकेल दइ छइ। जइ धकला-धकलीमे फँसल अपन वाजिब उपज नइ दऽ पबैए। बाढ़ि-रौदी सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ आगुओ हएत?

दुनू मौसमी खेतीक बाधक छी। ऐ बाधाकेँ केना भगौल जाए ? पोखरिक माछोक तँ यएह स्थिति हएत, ने रौदी भेने हएत आ ने बाढ़िसँ बँचा पएब,

तरवन? उदास भेल सुरजा काकाकेँ बेसल देखि चुनमुनियाँ काकी आबि चहकली-

“कथीक सोग पैसल अछि जे नीको मनकेँ अनेरे मारि कऽ बैसल छी। बाध-बोनसँ एलौं हेन तबधल हएब, झब-दे छिड़ियेलहा काजकेँ सम्हारि नहाएब-खाएब अराम करब आकि अनेरे मुरदा जकाँ मन मारने छी।”

❑ **साभार : भादवक आठ अन्हार, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 12-13**

झंझारपुरसँ धीरेन्द्र अबैत रहैथ, रस्तासँ कनी हटि प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक घर छैन। घरक पछुऐतपर नजैर पड़िते नबे-एकानबे बर्खक रामकृष्ण बाबूपर गेलैन जे आइ ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेला अछि।

1925 इस्वीमे रामकृष्ण बाबूक जन्म ओहन परिवारमे भेलैन जे परिवार राज-परिवारसँ जुड़ल जमीन्दारक रूपमे छल। देशमे अंगरेजक खिलाफ आजादीक लड़ाइ पसैर धाराक रूपमे प्रवाहित हुअ लगल, किसानक देश, गामक देश भारत। भारतक मूल पूजी खेत, जैपर देश ठाढ़ अछि। गुलामीक हजारो बर्खक इतिहास ऐठामक गाम आ गामक पूजीकेँ पाछू धकेलैत पछुएने रहल। जइसँ गमैया जिनगी टुटैत-टुटैत एतेक टुटि गेल अछि जइ-सँ चीन-पहचीन मेटाएल जा रहल अछि।

प्रगतिशील विचारक सभ मञ्चपर आबि चुकल छला। ओ सभ जमीनपर एला जे देशक मूल पूजी–माने किसानक देश, गामक देश–गाम छी तँए बिना गामक विकास भेने देशक विकास सम्भव नइ। गाम रज-रजबारसँ लऽ कऽ जर-जमीनदारक संग रूढ़िसँ सेहो जकैड़ गेल अछि, ओ सुधरने बिना गामक सुधार सम्भव नहि। जमीनक प्रश्न उठने देशमे पसरल रज-रजबार आ जर-जमीनदारक बीच खलबली उठल। जमीन आ जमीन्दारीक खरीद-बिकरी संग उधार भेटने जमीनदारक संख्यामे बढ़तियो भेल आ घटबियो भेल।

ओना, गाम-गामक लोकक दशा एहेन भऽ गेल जे उपास करैले कोनो पाबैनक प्रतीक्षा नै रहल।

जँ कोनो गाम हजार घरक अछि तँ नअ साएसँ ऊपरे परिवारकेँ अपन घराड़ियो नहि। मनुख तँ केतौ घरेमे रहत। ओना, तइसँ किछु दिन

पहिने रेण्ट-मुक्त बास भूमि भऽ चुकल छल, मुदा हजारो बर्खक गुलामीक शिकार लोककेँ पड़ाइत-पड़ाइत कोनो कर्म बाँकी नै रहि चुकल छल। केकरो कोनो गाममे घराड़ी छल, मुदा पेटक दुआरे पड़ा दोसर गाम बसल तँए ओ फेर बिनु घराडीए-क होइत रहल।

जखन अधिवेशन सभमे आजादीक वृहद आकारक आवाज उठल तखन रजो-रजबार आ जरो-जमीन्दारक पेटक पानि डोललैन। जइसँ पसरल खेतक लत्तीकेँ समटऽ लगला। ओना, गामो-गामक लोकक आचार-विचारमे किछु-ने-किछु अन्तर होइते छै, जे सोभाविको अछि। बौद्धिक स्तरक हिसाबसँ विचारो आ काजोक स्तर बदलै छइ।

प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक पिता गोरख बाबू चारि भॉइक बीच जेठ , तँए जहिना माता-पिताक सिनेह तहिना भाए सबहक आदर। जइसँ सुसम्पन्न परिवारक जे गुण-धर्म होइ छै तइसँ सम्पन्न परिवार। आगत-भागतसँ लऽ कऽ गीत-संगीत, साहित्यिक चर्चासँ मञ्च जकाँ सजल परिवार। संस्कारी परिवारमे आने काज जकाँ पढ़ाइयो-लिखाइ। जइसँ स्कूल जाइ-जोकर जखने रामकृष्ण भेला कि स्कूलक बाट पकैड़ लेलैन। गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल तक रामकृष्णक जिनगीमे कोनो हवा-विहाड़ि नइ लगलैन। बच्चेसँ जे नीक रिजल्ट होइत आबि रहल छेलैन ओ मैट्रिक तक बरकरारे रहलैन।

चालीस इस्वीक पछाइत आजादीक लहैर जोर पकैड़ नेने छल। तेजीसँ उथल-पुथल हुअ लगल। जेना आसमान फाटि जाइ छै तहिना रामकृष्णोक परिवारमे भेलैन। चारू भॉइक बीच भिनौज भेने , परिवारक सम्पैत चारि भागमे बँटेने अखन धरिक रचल-बसल परिवार एकेबेर ढनमनाएल। खेत-पथारक बिकरी परिवारमे बढ़ल।

ओना, परिवारक अखन धरिक जे हित-अपेक्षित, कुटुम-परिवार, सर-समाजक जे सम्बन्ध रहलैन ओ खर्च तँ ओहिना रहलैन मुदा आमदनीमे धक्का लगबे केलैन। किछु दिनक पछाइत, माने जखन

रामकृष्णकेँ कौलेजमे प्रवेश केलाह, साले भरि भेलैन कि पिता मरि गेलखिन। अपन भाए-बहिनक बीच रामकृष्ण सभसँ जेठ रहबे करैथ। पिताकेँ मुइने परिवारक बोझ माथपर आबि गेलैन। अपनासँ छोट पाँचो भाए-बहिनक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ विधवा माइक भार सेहो पड़लैन। कहुना-कहुना आई. ए. पास कऽ लेलैन।

खेत-पथार रहितो रामकृष्णकेँ ने खेती करैक लूरि आ ने इच्छा। होइतो अहिना छै जे नीक विद्यार्थीक मनमे सदैत यएह रहैए जे केतौ शिक्षक बनि जीवन-जापन करी। मुदा शिक्षकक खगता स्कूल-कौलेजमे रहत तखने ने हएत। से तँ गनल कुटिया आ नापल झोर जकाँ स्कूल-कौलेज! केतौ खाली नै! मुदा इलाको तँ सभ रंगक अछि। कोनो कोसीक उपद्रवी क्षेत्र अछि तँ कोनो भुतही-कमलाक। ओना, जइ इलाकामे रामकृष्णक घर छैन ओ धारक उपद्रवसँ सुरक्षित अछि। अपन इलाका छोड़ि रामकृष्ण कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूलमे शिक्षक बनि जिनगीक शुरूआत केलैन।

हाइ स्कूलक शिक्षक सभकेँ ओहन दरमहो नहियेँ भेटै छेलैन। जे परिवारकेँ हाइ-फाइमे रखितैथ। ओना, ई जरूर भेल जे टुटैत-टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटैक गेलैन। जेकरा रामकृष्ण बुझलैन। जइसँ आमदनीक बीच परिवारकेँ चलबैक विचार सोचि लेलैन। बाहर रहने बाहरक खर्च हेबे करत, संगे गामोक परिवारक भार तँ अछिए। श्रवण कुमार जकाँ रामकृष्ण परिवारक बेटा बनि भार अपन कन्हापर उठा लेलैन। रेलगाड़ीक सुविधा रहने चारि-पाँच घन्टामे गाम पहुँच जाइ छला, जइसँ अठबारे शनि-रबिकेँ आबा-जाही स्कूल आ गामक बीच रखने छला।

ओना, शिक्षा-बेवस्थामे सेहो जुग परिवर्तन होइए मुदा केहेन परिवर्तन होइए ऐपर तँ सभकेँ नजैर रखऽ पड़तैन। नजैरक माने, कोन-मुहेँ आकि केकरा दिस ओ लत भेल। मुदा से जइ जुगक उपज रामकृष्ण

छला ओ समयानुकूल छेलैन। शिक्षा पद्धतिमे अखुनका विद्रूपता नइ आएल छल। ग्रामीण परिवेशमे चाहो-पानक चलैन अखुनका जकाँ नइ छल। ओना, पानक प्रशस्ति मिथिलांचलमे अदौसँ रहल मुदा आम-जनक बीच समटा ओ विशेष, माने खास-खास उत्सवमे अँटैक गेल छल। ओना, एकटा प्रश्न तँ उठिते अछि जे आधुनिक वैज्ञानिक परिवेशमे पानक महत् की अछि। जेहेन परिवारक रामकृष्ण बाबू छला ओइ परिवारमे सभ कथुक चलैन छेलैन। मुदा परिवारसँ हटल रहने अपन जीवनकेँ साँचामे ढालैक तँ अवसर भेटबे केलैन।

मौकाकेँ लाभमे बदैल रामकृष्ण अपन जिनगीकेँ अपना अपना ढंगे निरमाएब शुरू केलैन। एक तँ ओहिना छोट-भाए बहिनक बीच एहेन विचार अखनो तँ गाम-परिवारमे ऐछे जे मते-पिता नइ अपनो भाए-बहिन आ समाजोक भाए-बहिनक बीच बेवस्थित रूपमे सम्बन्ध ऐछे जे बेसीमे नइ तँ कमोमे जरूर चलि रहल अछि। तैसंग विधवा माइक जिनगी परिवारक जिनगीकेँ सात्विकता दिस बढ़बैत रहलैन। भूखे सहब आ कोनो संकल्प-व्रते सहब, दुनू सहबे भेल मुदा दुनूमे अन्तरो तँ अछिए। एक सहब भेल भरलपर आ दोसर भेल जरलपर, जइसँ ईहो तँ हेबे करत जे भरलकेँ पाचक हएत आ जरलकेँ घातक! घातक ई हएत जे हाड़-मांसक संग हड्डियो सुखाएत! ..आने-आन मनुख जकाँ रामकृष्णक जिनगीकेँ कहियौन आकि दुनियाँकेँ , बीचमे आबि ठाढ़ भऽ गेल रहैथ। विचारक धारमे अपना बुधिये रामकृष्ण अपनाकेँ जुड़शीतलक माल-जाल जकाँ छोर पकैड़ हेलौलेन। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी , बहुरंगी। केतौ बालु भरल अछि तँ केतौ सोना, केतौ पाथर भरल अछि तँ केतौ बोन-झार, केतौ पानि भरल अछि तँ केतौ माटि...।

माटियो तँ माइटे छी, कोनो उस्सर अछि तँ कोनो केशौर केसैर उपजबैक शक्ति रखने अछि।

अथाह दुनियाँक थाह पकड़ब असम्भव नइ तँ कठिन तँ अछिए। दसो दिशामे दुनियाँ बँटाइत बँटाएल अ छि, तहूमे तेते कोण-काण बनि

गेल अछि, जँ किछु डेग केम्हरो उठबौ चाहब तँ कोनो कोणेमे कोणिआ जाएब आ कोणियेला पछाइत केमहर-मुहेँ चलि जाएब, से ठेकान करब अथाह नइ तँ अगम तँ अछिए। जहिना अगमो पानिमे हेलिनिहार सभ रंगक होइ छैथ, कियो एहनो होइ छैथ जे अगम बुझि, माने माटिक ऊपर एते पानि अछि जइमे डुबि जाएब। पानिमे डूमने हवाक प्रवेश रूकै छै तँए बिनु हवे अपनो हवे जकाँ उड़ि जाएब! मुदा तँए कि एहेन हेलिनिहार नइ छैथ जे समुद्र सन पानिमे हेलै छैथ जइमे माटिक ठेकाने ने छइ।

दुनियाँक बीचमे ठाढ़ रामकृष्ण अप्पन दुनियाँ दिस नजैर देलैन। अपन दुनियाँ तँ वएह ने भेल जइमे रहैक अछि। एकरो ने दसो दिशा छै आ सैयो कोणो-काण छइ। अपन जिनगीकेँ थाह पबिते रामकृष्णक मनमे तोष-संतोष जगलैन। जगलैन ई जे मनुखो तँ मनुखे छी जे कारखानाक आगिक चिमनियोँ लग जिनगी बितबैए आ साइबेरियाक काइ-लीचेन गाछो तर। तही बीचमे ने हमहूँ केतौ छी...।

अपना जिनगीक आड़ि-धुरकेँ रामकृष्ण बिटिया लेलैन। बिटियैबते भक खुजलैन- सभ किछु अपने करए पड़त। अहीमे धरम-करम सभ नुकाएल अछि। जँ देह-हाथ नइ चलाएब, उपार्जन नइ करब तँ परिवारक खेबा-खर्चा केतएसँ औत, धिया-पुताकेँ पढ़ाएब-लिखाएब केना...। अपना जिनगी-ले लोककेँ अपने उपैत करए पड़ै छै, हमरो करैक अछि।

दोहरी संकल्पक संग रामकृष्ण शिक्षकक जिनगी शुरू केलैन। पहिल संकल्प केलैन जे अपनो प्रोफेसर बनैक अछि आ परिवारमे छोट-भाए-बहिनक निमरजना ओते तँ करबे अछि जेते पिताजीक समयमे भेलैन। तइसँ जेते अगुआ करब वएह ने अपन सृजन हएत।

ओना, आर्थिक दृष्टिये दुनू-बापूतक जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर आबि गेल छेलैन। पिताक जिनगी मझोलका जमीन्दारक रहलैन जखन कि रामकृष्णक जिनगी ओइसँ बदैल एक साधारण शिक्षकक भऽ गेलैन। संकल्पकेँ खण्डित करैत, माने छोट-छोट टुकड़ी बना रामकृष्ण अपन मन असथिर केलैन जे पिताजी जेते पढ़ेलैन, तेते छोट-भाइक प्रति अपनो दायित्व बनैए, ओना, तइसँ कम-बेसीमे पढ़निहारोक विचार तँ

ऐबते छइ। जँ नइ पढ़ऽ चाहत तँ परिवारक बीच, समाजक बीच, किए ने अपन प्रायश्चित करा लेब। जँ पढ़निहार रहत तँ अपन ओकाति भरि सहयोग करब दायित्वक संग कर्तव्यो तँ बनिते अछि। ऐठाम आबि रामकृष्णक विचार ठमैक गेलैन। किछु समय ठमकला पछाइत रामकृष्णक नजैर अपनापर पड़लैन। परिवारक खर्चमे सिर्फ भोजने-वस्त्र आ आवासेटा नइ अछि। लिखब-पढ़ब आ बेर-कुबेरमे दवायो-दारूक जरूरत तँ पड़िते अछि। ओना, विद्यालयक संग ट्यूशन करब, तइसँ किछु आमदनी बढ़त मुदा घटो तँ लगबे करत ने जे अपन पढ़ैक समय वेरबाद भऽ जाएत। जखन समैये ने बँचत तखन आगू बढ़ि केना सकब। बाल-बोधक खेल पढ़ब-लिखब नइ ने छी, ओ जिनगीक साधना छी जेकरा साधने बिना जिनगीकेँ आगू-मुहेँ बढ़ाएब कठिन अछि। ओना, साधनो केते रंगक होइए। मुदा से सभ नइ, जेते साधक जरूरत रहए आ साधैक साधन रहए, बस तेतबे।

रामकृष्णकेँ जेना भक् खुजलैन। भक् खुजिते नजैर मान-इमान आ सम्मानपर गेलैन। ओहो तँ बीज-रूपमे अँकुर, गाछ बनि जिनगीकेँ गछाड़ैत फुनगी धरि पहुँच जाइए। ओतै जा कऽ ने गाछोक फूल फुला-फुला अकास दिस तकैत तरेगन, सप्तऋृषि गनैए आ तहिना ने मानो-इमान इज्जत बनि इजोरिया राति जकाँ भगवतीक आराधनाक मुहूर्त बनैए...।

रामकृष्णक मन अपना दिस घुमलैन। घुमिते उपकलैन जे जैठाम जिनगीमे आबि अँटैक गेल छी तैठाम इज्जत-इमान की भेल आ तेकरा केना बँचा कऽ रखि सकै छी..?

❑ साभार : ठूठ गाछ, उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2015,

पृष्ठ संख्या, 09-15

खुशीलाल भाय, लंकामे राक्षसक ऊँचाइ उनचास हाथ छेलइ, मुदा विलासक ऊँचाइ ओहूसँ बेसी अछि। विलास इज्जतक सभसँ पैघ रूप पाइमे देखैए जइसँ कर्मक दिशे बदैल गेल छइ। विलास पकिया दलाल भोगिया देवीक छी। नमहर बेपार दुनूक छइ। भाय साहैब, जीबैत रहब, अहिना अबैत रहब। अखन बहुत बात समाजसँ पुछब बाँकी अछि।”

भोगिया देवी आ विलासक समांग थानाक कसट्डीमे जा कऽ दुनूसँ भेंट केलक। दुनू गोरेक मन नीक जकाँ खसल छेलइ। मनमे रंग - बिरंगक अपन जिनगीक क्रिया नाचि रहल छेलइ। ओना, कसट्डियोमे सबहक मन एके रंग नइ रहैए। किछु लोक एहनो होइ छैथ जिनकर मन ऊपर उठल रहै छैन, मनमे संकल्प रहै छैन। संकल्पित मन रहने नजैर आगूक क्रियापर रहैए तँए मन खसल नहि बल्कि खुशीसँ ऊपर उठल रहैए। मुदा से भोगिया देवी आ विलासक नहि छल। दुनूक मनकेँ अपन - अपन कएल नीच-वृत्ति तेना घेर कऽ घोरमट्ठा बना देने रहै जे अपन पनचैती अपने मन करैत कहै- ‘सचमुच हम अधला वृत्ति केलासँ जहल आबि गेल छी..!’

अपहरणसँ हत्या धरिक एफआईआर भोगिया देवी आ विलासपर संगे छेलइ। दस बजेमे जखन दुनू गोरेकेँ थानासँ कोर्ट लऽ गेल तखन एफआईआरक नकल समांग सभ लेलकैन। बारह बजैत-बजैत दुनू सबडिवीजनल जेल पहुँच गेल। ओना, जमानतक लेल दुनूक समांग ओकीलकेँ सेहो ठाढ़ केने छल, मुदा निचला कोर्टक केस नइ रहने लाख आसन लगौला पछातियो जमानत नहि भेलइ। दुनूकेँ जहल गेला पछाइत

समांग सभ केसक नकल नेने गाम आबि गेला।

मुदइ पक्षमे बचनू भाइक नाओं खुलि गेलैन। गाम अबिते जखन समांग सभ केसक चर्च केलक, तखन एक्के-दुइये गाम दिस चर्च बढ़ल। जहिना बचनू भाइक परिवारक सम्बन्ध गामसँ तहिना भोगियो देवी आ विलासोक परिवारक सम्बन्ध सेहो गामसँ अछिए।

जहिना बचनू भाइक परिवारक समांग सभ विरोधमे ई बाजए लगल जे दुनूक चालि-चलन बिगैड़ कऽ एतेक निच्चाँ-मुहेँ अछि जे पतालमे चलि जाएत...। तहिना भोगियो देवी आ विलासोक समांग सभ बचनूकेँ दोखी बनबैक हवा पसारए लगल जे जहिना बचनू अगुआ कऽ अहित केलक तहिना तेकर जवाबो देब...।

दुनू दिससँ दुनू हवा गाममे टकराएल। जइसँ गामक लोक , गामक समाज अकबकाए लगल। ओना, रंग-रंगक विचार रंग-रंगक लोकक मुहसँ निकलए लगल। मुदा ओ ऐ बिन्दुपर आबि दबि जाइत जे आन ने सुनि लिअए। स्पष्ट रूपसँ तीन रंगक विचार गाममे पसरल।

किछु लोकक मुहेँ निकलल-

“भोगिया देवी आ विलासोक संग अन्याय भेल।”

किछु लोकक मुहेँ निकलल- “भोगिय देवी आ विलासक किरदानीसँ समाजमे बहुतो लोक पतितो बनल आ बहुतोकेँ जीवन सेहो नष्ट भेलइ।”

किछु लोकक मुहेँ तेसर तरहक विचार निकलल-

“समाजक बीचक सभ छी तँए कोर्ट-कचहरीक मुद्दा बनाएब नीक नहि। समाजेक बीच ओकर निराकरण करब नीक होएत। खाएर जे भेल से भेल मुदा सौंसे गामक लोकक बीच भोगियो देवी आ विलासोक किरदानी सबहक बीच आबिये गेल।”

जहिना दस बजे गाम पहुँचैक बात सुशीला बचनू भायकेँ कहने

रहैन तहिना नअ-बजिया ट्रेनसँ तमुरियामे उतैर टेम्पू पकैड़ सुशीला गाम पहुँच गेल। संगमे बेटा सेहो रहइ।

तैबीच बचनूओ भाय अपन मात्रिकक परिवारक संग पाँचटा समाजोकेँ बजा नेने छला।

सुशीलाकेँ पहुँचते जीतनो कक्काक परिवारक सभ आ खुशीलालोक परिवारक सभ समांग बचनू भाइक ऐठाम पहुँच गेल। जहिना कोनो यज्ञ-हवनमे दसटा लोककेँ एकठाम भेने उत्साहक रूप बनि जाइए तहिना बचनू भाइक ऐठाम उत्साहित वातावरण बनि गेल। समांग सभ आगत-भागतमे लगले छेलैन।

चाह-पान भेला पछाइत सभ कियो दरबज्जापर बैसला। सुशीला सेहो बीचमे बैसल। मर्द-औरत, बुढ़-बच्चा सभ एकठाम बैसला। जीतन काका बजला- “बचनू, अखन आहे-माहे छोड़ह। नहाइ बेर भऽ गेल आ देखिते छहक जे सौंसे परिवार उनैट कऽ आबि गेल अछि तँए भानसो बन्न भऽ गेल हएत।”

जीतन कक्काक विचारकेँ पछुअबैत खुशीलाल बाजल- “सुशीला बहिन, पहिने ई कहह जे अपना जिनगीसँ सन्तुष्ट छह?”

सुशीला बाजल- “खुशीलाल भाय, अखन तक–माने दू मास पूर्व तक–अपने लेबरक काज कारखनामे करै छला जइसँ चारि घन्टा ओभर टाइम खटने आठ-नअ हजार महिना कमा लइ छला, आब कलर्क भऽ गेला। जइसँ पनरह-सोलह हजार दू माससँ कमाए लगला अछि। हम अपन डेरापर ट्यूशन पढ़बै छी। जइसँ हजार -बारह साए अपनो कमा लइ छी। बच्चा सेहो लगमे रहैए। दू गोरेक परिवारमे केते चाही। नीक जकाँ गुजरो चलैए आ संतोखो अछि।”

सुशीलाक विचार सुनि सबहक मुहसँ एक्केबेर निकललैन- “वाह!”

बचनू भाय सुशीलाकेँ पुछलैन- “बुच्ची, सासुर किए छोड़लह?”

बचनू भाइक प्रश्न सुनिते सुशीलाक मन तन-फना लगलै जइसँ वाणीमे उत्स जागए लगलै। उत्साहित होइत सुशीला बाजल- “भैया, अखन अहाँ पंचवेदीमे छी। तँए बजैमे हमरा कोनो हिचक नहि अछि।”

सह दैत बिच्चेमे जीतन काका बजला-

“ऐठाम कियो आन अछि, हीय खोलि कऽ बाजह।”

सुशीला बाजल- “भैया, भोगिया देवीक चालि-चलैन नैहरेसँ पाइक रस्ता पकैड़ नेने छइ। संजोगो एहेन भेल जे जहिना घरबला दिल्लीमे रहि कमा-खटा उड़बै-पुड़बै छै तहिना अपनो भोगिया देवी गाममे व्यभिचारक जाल पसारने अछि। देहक बेवसाय पाइ-ले करैए। जेकर लगक दलाल छिऐ विलास। गाममे चरित्रहीन लोकक कमी थोड़े अछि जे बेवससाय नहि चलतै। जखन हम पुतोहु बनि भोगिया देवीक घर एलौं तखन ओ हमरो देहक बेवसाय करए चाहलक! तँए... ।”

सुशीलाक बात सुनि पिताक–बचनू भाइक मामाक–आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। मुदा ओ नोर दुखक नहि सुखक छेलैन , संकल्पित बेटीक जिनगीक उत्साहक छेलैन।

खुशीलाल बाजल- “सुशील बहिन, तोरा नजैरमे विलास केहेन अछि?”

सुशीला बाजल- “खुशीलाल भाय, लंकामे राक्षसक ऊँचाइ उनचास हाथ छेलइ, मुदा विलासक ऊँचाइ ओहूसँ बेसी अछि। विलास इज्जतक सभसँ पैघ रूप पाइमे देखैए जइसँ कर्मक दिशे बदैल गेल छइ। विलास पकिया दलाल भोगिया देवीक छी। नमहर बेपार दुनूक छइ। भाय साहैब, जीबैत रहब, अहिना अबैत रहब। अखन बहुत बात समाजसँ पुछब बाँकी अछि।”

❑ साभार : 'इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं', उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 121-124

पढ़ि-लिखि सेहो लोक ज्ञाने पकड़ै छैथ आ बिनु स्कूल गेनौं परिवार हुअए वा नहि , मुदा जीबैले ज्ञाने मुख्य छी। ज्ञाने शरीरक शक्तिशाली शक्ति छी जे जिनगीकेँ भूतसँ भविस तकक रस्तो देखबैए आ रस्तासँ चलैले प्रेरित सेहो करैए। जखने जिनगी जीबैले ज्ञान मनकेँ प्रेरित करए लगैए तखने अपन प्रगतिक दिशा दिस अपन शक्ति सेहो हाथ-पएर उसकाबए लगैए।

परिवारक संग माने माता-पितासँ लऽ कऽ पति-पत्नीक बीचक जीवन गुदस करैत सुभावी आइ बेटा-पुतोहुक बीचक परिवारमे 'माए' आ 'सासु' बनि ठाढ़ छैथ। अपन बेटा-मुँहक बोल सुभावीकेँ किए कोनो रंगक कचोट मनमे जगैबतैन। तँए निर्भीकसँ निर्भय भेल सुभावी मेवालालक आँखि दिस तकैत बजली- "की कहलहक बौआ, जिनगी मरि रहल अछि?"

माइक प्रश्नसँ मेवालालकेँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नहि भेलैन। कुवाथो केना होइतैन, संग-संग बीतल जिनगी माइक सोझमे छेलैन। माइयो एक समर्पित जन परिवारक छेलीहे। भाय, मनुखे भगवान आ भगवानेक मन्दिर ने परिवार छी! तैठाम कुवाथे किए हएत? सुभावी परिवारक आमद-खर्च, उत्पादन-उपभोग थोड़े बुझै छैथ। सुति उठि भोरे पहिने आँगन बहारै छैथ, आँगन बहारि माल-जालक थैर-बथानक गोबर-करसी उठबैत खर्ड़ा-बाढ़ैनसँ खरैड़-बहारि गोबर पाथए लगै छैथ आ जलखै बेर होइत जलखै करैत माल-जालक जोगारमे घास-भूसा करए चलि जाइ छैथ, जे दूपहर बीतैत आँगन अबै छैथ आ अपने नहाइ-खाइसँ पूर्व सभ दिन पहिने पुतोहुसँ पुछि लइ छैथ-

"अहाँ सभ खा-पी लेलौं किने?"

ओना, पाँतीक व्यंग रूप सेहो भऽ सकैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम मिथिलाक मातृत्व शक्ति छी। जखने पुतोहु सासु दिस देखि मुस्की भरि दइ छथिन तखने सुभावी अपन मुस्कुराइत मने नहाइ छैथ। नहेला पछाइत भोजन करै छैथ।

जहिना जिनगीक फल सुफल पएब छी तहिना ने दिनक फल भोजन छी। मुदा फलो तँ फल छीहे, खटगर अंगुर जँ गुणगर भऽ सकैए तँ मिठगर मालदह आम किए ने भऽ सकैए? भइये सकैए। बाँकी जे फल अछि ताबे बीचमे बैस बीचमानि करह। अखन 'अ' अक्षरक फलसँ शुरू भेल अछि मुदा तोहूमे अनार, अमरूद छोड़ि कऽ...। नहेला पछाइत अनेरो लोककेँ खेबाक चाह जगिते छै, मुदा श्रमशील लोककेँ तँ दोबरा जाइए, माने नहेलाक चाहक संग मेहनतक चाह, तँए ओकरा भोजनसँ प्रेमो हेबे करैए। भोज्य पदार्थोकेँ तँ ओहीमे ने खुशी होइत हएत जे पेटगर संग डटगरक भक्ष बनैत अपन बलिदान देखत।

भोजन केलाक पछाइत सुभावी अरामकेँ हराम बुझि बेरूका पहरक काजक जोगार सभकेँ जोड़ियबैमे लागि जाइ छैथ, बेरूका उखड़ाहाक काजक हथियार सभकेँ सम्हारैमे लगि जाइ छैथ। घास छिलैले खुरपी चाही, तोहूमे रौदियाह समय अछि, एक तँ घासकेँ जरने बाढ़िमे कमी अबिते अछि, तँए सुभ्यस्त समयसँ बेसी समयो लगबे करत, दोसर सक्कत माटि रहने खुरपियो ने ओहने बना चलए पड़त। तँए ओकरा पीट-पाटि कऽ काजुल मुँह बनबए पड़ै छैन। तैसंग माल-जालक घरक घूरक जोगार-पाती सेहो नित्य करिते छैथ। दिनक उदय-सँ-अन्त धरि सभ दिन जे सुभावी परिवारक समरपित भक्त रहली, ओ केना परिवारक अभक्त हेती आ अभक्त विचार मनमे जगा विभक्त पैदा करती?

पनरह कट्ठा खेतक जिनगी बना मेवालाल आत्मनिर्भर भऽ स्वावलम्बी जीवन धारण केने आबि रहल छला। अपना सभ मिथिलामे ने रहै छिऐ यौ, मिथिलाक दर्शन दुनियाँमे ओहिना पसरल अछि आकि

किछु कएलो-धएल छइ? छै! मुदा देखए पड़त। जइ मिथिला भूमिमे अयाची मिश्र पैदा लेलैन, जे अपन जीवन दर्शनसँ अहाँक जीवनमे दर्शन दैत रहला अछि, ओ दर्शन की छी? ओ छी- एक कट्ठा जमीनक बीच एक परिवारकेँ गुजर-बसर करैत मानवीय गुणसँ सम्पन्न निर्भय जिनगी प्राप्त करब। जखने मनुखमे निर्भय गुणक आगमन होइए तखने ओ मुक्तिक शिखरपर पहुँच अभय शक्ति प्राप्त करैए। की हमरा नइ बुझल अछि जे हुनका ऐठाम, माने आयाची मिश्रक ऐठाम राज-दरबार पहुँचलैन। भलेँ ओ आइ इतिहासक पन्नाक विषय-वस्तु किए ने बनि जाए, मुदा ओइमे जीवनी शक्ति नइ अछि, तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए।

पनरह कट्ठा खेत मेवालालकेँ पैतृक सम्पैतक रूपमे छैन। पिता–बुधिलाल–केँ सेहो पितासँ वएह पनरह कट्ठा खेत भेटल रहैन। सुभ्यस्त स्थिति बना चलने बुधिलालक जमीन कहियो मालगुजारीक अभावमे नीलामपर नहि चढ़ल। गामक भीतर जे परिवारक सम्पैतक लूट-पाट भेल, तइमे मालगुजारियोक खेल कम नहियेँ रहल। एक तँ दुर्भाग्य अपना सबहक रहबे कएल जे एक नमहर समय पराधीन रहलौं। मुदा स्वतंत्रतो भेटला कम दिन नहियेँ भेल अछि। ओतेक जरूरे भऽ गेल अछि जे परिवारक तेसर पीढ़ी सेहो आब अन्त कऽ रहल अछि।

आइ हम सभ ओहन जुगक देहलीपर पहुँच गेल छी, जेकरा वैज्ञानिक जुग कहल जाइए, विकसित जुग कहल जाइए। एते तँ विज्ञानसँ अविष्कार भइये गेल अछि जे खेतीक सभ साधन असान बना देलक अछि। बुधिलाल खेतीक संग मवेशी पालनसँ अपन परिवार चलौलैन। खेतीक लेल पटबन जरूरी अछि, जइले पानिक साधन अनिवार्य अछि, मुदा तइले बुधिलाल अपन किछु साधन नइ बनौने छला। सालक तीन मास बरसातक होइत अछि, जइमे कम कि बेसी बरखा हेबे करैए। ओना, बेसी भेने बाढ़ियो अबिते अछि आ मध्यम

बरखा भेने ने बाढ़ि अबैए आ ने सोल्होअना रौदी होइए। तँए, ओहन सालक मौसमक रूप बदैल जाइए जइसँ सुभ्यस्त भऽ जाइए। जखने सुभ्यस्त समय हएत तखने उपजा-बाड़ी नीक हेबे करत। जइसँ खेतक बले जीनिहार खेतिहरमे खुशहाली एबे करत। एक तँ ओहुना, जँ मुरकुटियो बँटवारा करै छी तैयो सालमे तीनटा मौसम होइए- जाड़, गरमी आ बरसात। ऐ हिसाबे तीन सालमे एक साल रौदी, एक साल शीतलहरी आ एक साल बरसातक हिस्सा भेल।

सोझ-साझ हिस्सा तँ बाँटि लेलौं मुदा तीनू मौसमक गुण-अवगुण सेहो ने देखब जे कोन मौसम हितू अछि आ कोन अहितू अछि। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे बुधिलाल सोल्होअना अपन खेती-बाड़ी भगवानक देल बर्खाक भरोसे करै छला। ओना, बुधिलाल पारखी गिरहस्त जरूर छला। ओ जनैत रहैथ जे कोन फसिलक उपज केहेन मौसममे केलासँ लाभक बनत आ कोन घाटाक सौदा बनत। ओना, परिवार चलबैक खास गुण बुधिलालमे ई छेलैन जे परिवारक हिसाबकेँ नीक जकाँ बुझैत रहैथ। परिवारक हिसाब बुझैक माने भेल- समांगक संग ओकर ओकाइतकेँ बुझब। समांग आ समांगक ओकाइतक बीच सामंजस करैक नीक लूरि बुधिलालकेँ छेलैन, तँए हँसैत-खेलैत अपन जिनगीक आदि-अन्त केलैन।

❑ **साभार : लहसन, उपन्यास, पृष्ठ संख्या- 10-13**

“काका, अहाँ ते घर-बाहरसँ जुड़ल छी, तँए कोनो बातकेँ बेसी दूरसँ बुझहै छिऐ। काल्हिसँ अखैन तकमे जेते लोकसँ गप भेल अछि ओइमे पाँचो-टाक एक विचार नइ मीलि रहल अछि, कियो किछु तँ कियो किछु बजैए। अहाकेँ ते बेसी बात बुझल हएत, बाबाकेँ कने नीक जकाँ बुझा दियौन।”

अपन सबाल उठैत देखि लालबाबाक मन फुलेलैन, मुदा ओइ फूलक ढेंसरे बना मनमे रखि लेलैन। हमर बात सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना करियाएल मेघ जकाँ चारू दिस अन्हार पसैर गेलैन। लालबाबाक आगूमे बैसल छी, जिनकर जिनगी अखन धरि गामक उत्थानक दिशामे क्रियाशील रहलैन अछि, गाममे जे गोपीलाल आ सिनुरलालक बीचक घटना भेल अछि, ओ के बुझत। मुदा जे बुझल अछि, जेते धरि कानसँ सुनलौं, सएह ने कहबैन। हमरा आँखिक सोझक घटना तँ छी नहि जे कहबैन हम चश्मदीद गवाह छी।

झिंगुरलाल बजला– “लालबाबा, जे सुनलौं से कहै छी, काल्हि जे बड़का जलसा भेल रहै से तँ सुननहि हएब?”

लालबाबा तँ किछु ने बजला मुदा बिच्चेमे हम मुड़ी डोलबैत बजलौं– “हँ।”

हमर ‘हँ’ सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना किछु बल जगलैन। बल जगिते सबल होइत बजला– “जखन गोपीलालक हत्या भेल, ओ समय आ जलसाक समय एके छी।”

❑ **साभार : एगच्छा आमक गाछ, कथा संग्रह- 2016,**

पृष्ठ संख्या- 10-11

अन्तमे यएह जे अपन मैथिल देशक सभ हिस्सा क्षेत्रमे, माने पटना, दिल्ली, गुजरात, मुम्वई, हैदरावाद, बंगलोर, मद्रास, कोलकाता इत्यादि सभ शहरमे छैथ। जे जेतए छैथ ओ अपन मैथिल अस्मिताक लेल भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्रमे किछु-ने-किछु सेवा दैथ। जहिना बुझै छिऐ जे मैथिली भाषा मरि रहल अछि तहिना देखबै जे मैथिली सिर्फ मिथिले क्षेत्रटाक नहि सौंसे देशेक भाषा बनि गेल अछि।

अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ परिमार्जित करैत हमहीं अहाँ ने ऐगला पीढ़ी तक पहुँचेबै। आइ हम सभ पचहत्तैर बर्ख पूर्वक आजाद देशमे ठाढ़ छी, आन भारतीय भाषाक साहित्यमे जे लोकतंत्रीकरण भेल, से मैथिली भाषा-साहित्यमे नहि भेल अछि, ओ अखन प्रतीक्षामे अछि। भाषाक हिसाबसँ जे क्षेत्रीकरण सभ देखि रहल छी, ओ भ्रमित जाल छी। मैथिली क्षेत्रक जे पूबरिया हिस्सा अछि, ओ धार-धूरक इलाका छी, ऐठामक लोककेँ आवागमणक संग जीविकोमे असुविधा छैन, ऐसँ बहुत नीक क्षेत्र कोसी-कमलाक पूवरिया हिस्सा अछि, जैठाम रौदी तँ एक्के रंग होइए मुदा दाहीमे कमी-बेसी होइए। प्राकृतिक आफद बेसी अछि। आवागमणक असुविधा भेने बीचक हिस्सासँ पूवरिया हिस्सा कमबे केलैन अछि तँए ओ मैथिल नहि छैथ आकि मिथिलाक नहि भेला, ई अनुचित विचार अछि। जहिना पूवरिया हिस्साकेँ नीच देखौल गेल तहिना पछवरिया-दछिनवरिया हिस्साकेँ सेहो

नीच देखौल गेल अछि। अपना सभ एक्कैसम सदीमे छी, तँए अन्धविश्वासकेँ रोकए पड़त। ओ केना रोकाएत? भने अपना सभ अगुआएल वर्गक समाज आ पछुआएल वर्गक समाजक संघर्षक संकल्प लेलौं अछि। सोल्होअना संघर्ष ले ते सोल्होअना लोककेँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ पड़तैन, मुदा जँ प्रवुद्ध समाज अपन सम्बन्धकेँ विस्तार करए चाहब, से तँ कइये सकै छी। जहिना उगा-डुमा-पूबा कहै छिऐ तहिना अपन पूर्वजक चूककेँ समाजक बीच राखि पाटैक अछि। सभ जिला, सभ क्षेत्रमे अभियान पहुँचाएल जाए।

हँ एकटा बात छुटि गेल। पूवरिया हिस्सा कि दच्छिनवरिया हिस्सा आकि पछवरिया हिस्सा जे कहल जाइए, आ तैसंग बिचला हिस्सा, वियोगीजीक विचारे (तारानन्द 'वियोगी'क) मधुबनी आ दरभंगा जिला, ओ भ्रमित विचार छी। वास्तविकता किछु आरो छै। कहबी छै जे 'ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा, सब घर एक्के लेखा।' जैठाम सामाजिक राजनीतिक मुद्दा औत तैठाम सोतिबाबू ब्राह्मणबाबूपर बिसवास नहि करता, तँए सोतिबाबूक दरबारमे कहियो खजानाक जिम्मा हुनका नहि देल गेलैन। मुदा ओहन पछुआएल पनिचल्लाकेँ भंडारक चाभी हाथमे देबे केलैन। अखन एतबे..।

आगू बढ़ू, राजपूत परिवार मैथिली साहित्यक हिसाबे पछुआएल छैथ। तहिना भूमिहार परिवार सेहो पछुआएल छैथ। पछुआइक कारण ढेरो अछि, मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे मैथिली क्षेत्रीय भाषा छी, माने किछु भौगोलिक क्षेत्रक, प्राय: ओइ दुनू जाइतिक शादी-विवाह क्षेत्रसँ बाहर होइत रहल, जइसँ मिथिला अनेको भाषाक समागम स्थल बनल अछि। जेकर परिणाम स्वरूप एक-एक परिवारमे तीन-तीन, चारि-चारि भाषाक चलैन अछि। तैठाम मैथिलीक संग समास्या तँ अछिए।

आइ जे पूवारि हिस्सा वा पछवारि, दछिनवारि हिस्साक मैथिली भाषी छैथ, ओ बीचला हिस्साकेँ वा बीचमे जे छैथ, माने मधुबनी-दरभंगा

जिलाक, जे परिनिष्ठित मैथिली रचनाकार बुझै छैथ वा क्षेत्रक (मधुबनी-दरभंगा जिलाक) जे अपनाकेँ परिनिष्ठित वा अगुआएल बुझै छैथ ओ भ्रमित छैथ। ओ ई नहि देखि रहला अछि जे एक गाम-समाजमे जँ दस-बीस, पच्चीस-पचास जाइतिक लोक छी, सभक बोली-वाणी आ सामाजिक जीवनमे की अन्तर अछि। जइसँ भिन्न-भिन्न जाइतिक जीवनक संग भाषा-साहित्यमे सेहो अन्तर हेबे करत आ अछियो।

सभ कियो विद्यापतिक रचनाकेँ परिनिष्ठित भाषाक रचना मानि रहल छी। ऐ सन्दर्भमे बेसी नइ कहब अछि, मुदा दूटा बात जरूर कहब। पहिल, आजुक जे बिसपी गाम अछि ओइ गामक भाषा केहेन अछि से तँ जीवित मुद्दा छी, ओइठाम जा कऽ देखियौ जे गामक भाषा केहेन अछि। दोसर ई जे विद्यापतिक जे पहिलुका रचनाक संस्करण अछि ओकरा औझुका रचनासँ मिलाकऽ देखियौ। दोसर बात , एक्के जातिमे जँ तीनटा रचनाकार छैथ, माने एकटा अंग्रेजी पढ़ि आएल छैथ, दोसर संस्कृत पढ़ि आएल छैथ आ तेसर विज्ञान वा सामान्य विषय पढ़ि कऽ आएल छैथ, तीनूक रचनामे भाषाक अन्तर स्पष्ट देखि पड़त। अखन बेसी नहि, अखन एतबे। जरूरत अछि आजुक सामाजिक परिवेशमे केहेन भाषा, केहेन साहित्य आ केहेन संस्कृतिक जरूरत अछि।

अपना ऐठाम विवाह वा उपनयनक समय मड़वा बान्हल जाइए। ओ मड़वा कथीक सूचक छी। एक वैदिक परिवारक सूचक छी। आइ परिवारक रूप बदैल रहल अछि, जइसँ नव-नव रोगोक सृजन भइये रहल अछि। परिवेशक मांग अछि जे, ओना तँ पुरुषोक नीक गति नहि अछि, मुदा महिलाक तँ आरो नहि अछि, नारी जागरणक लेल नारी शिक्षा जरूरी अछि। एक तँ पढ़ाइ-लिखाइक जे सिस्टम बनल जा रहल अछि ओ अपने-आपमे महग बनल जा रहल अछि, तैपर जँ अपन बेटीकेँ नीक शिक्षा दिअ चाहब वा देब, तखन बिआहक समयमे की देखब? जेते पढ़ैमे

खर्च केलौं, तेते बिआहमे सेहो खर्च करू। यएह तँ निर्लज समाज मिथिलाक छी। खाएर बेसी नइ कहब।

अन्तमे यएह जे अपन मैथिल देशक सभ हिस्सा क्षेत्रमे, माने पटना, दिल्ली, गुजरात, मुम्वई, हैदरावाद, बंगलोर, मद्रास, कोलकाता इत्यादि सभ शहरमे छैथ। जे जेतए छैथ ओ अपन मैथिल अस्मिताक लेल भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्रमे किछु-ने-किछु सेवा दैथ। जहिना बुझै छिऐ जे मैथिली भाषा मरि रहल अछि तहिना देखबै जे मैथिली सिर्फ मिथिले क्षेत्रटाक नहि सौंसे देशेक भाषा बनि गेल अछि। मूल प्रश्न अछि जे स्वतंत्र देशक भाषाक रूप की हुअए, साहित्यक की रूप हुअए आ सांस्कृतिक रूपमे की सुधार कएल जाए। भेल तँ एतबे ने जे आजुक समयानुकूल मिथिलोक समाज बनइ।

❑ साभार : वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनियाक संषर्ष' शीर्षक आलेखसँ...